UPSSSC
उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

PET
Preliminary Eligibility Test

प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा
समूह 'ग'

BEST STUDY GUIDE BOOK!
यह गाइड बुक आपको **UPSSSC PET** परीक्षा की कम समय में अच्छी तैयारी करने में बहुत सहायता करेगी

आयोग द्वारा निर्धारित
100% पाठ्यक्रमानुसार

स्टडी गाइड
एवं 02 प्रैक्टिस पेपर्स

भारतीय इतिहास | भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन | भूगोल | भारतीय अर्थव्यवस्था | भारतीय संविधान एवं लोक प्रशासन | सामान्य विज्ञान | प्रारम्भिक अंकगणित | सामान्य हिन्दी | सामान्य अंग्रेजी | तर्क एवं तर्कशक्ति | सामयिकी | सामान्य जागरूकता | अपठित हिन्दी गद्यांश का विवेचन एवं विश्लेषण–02 गद्यांश | तालिका की व्याख्या एवं विश्लेषण–02 तालिकाएं

Code	Price	Pages
CB728	₹ 389	534

UPSSSC
उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

PET

Preliminary Eligibility Test

प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा

समूह 'ग'

स्टडी गाइड

लेखपाल | ग्राम पंचायत अधिकारी | अमीन | वन रक्षक | परिचालक |
कनिष्ठ सहायक | आबकारी सिपाही | स्टेनोग्राफर |
नलकूप चालक एवं अन्य सभी परीक्षाओं हेतु

AGRAWAL GROUP OF PUBLICATIONS
EduCart | Agrawal Publications | AGRAWAL EXAMCART

Book Name	UPSSSC PET प्रारंभिक अर्हता परीक्षा समूह 'ग' (स्टडी गाइड)
Editor Name	Rahul Agarwal
Edition	Latest
Published by	Agrawal Group Of Publications (AGP) © All Rights reserved.
ADDRESS (Head office)	28/115 Jyoti Block, Sanjay Place, Agra, U.P. 282002
CONTACT	quickreply@agpgroup.in We reply super fast
BUY BOOK	www.examcart.in Cash on delivery available
WHATSAPP (Head office)	8937099777
PRINTED BY	Schoolcart
DESKTOP PUBLISHING	R.S. Graphics
ISBN	978-93-91401-17-7
© COPYRIGHT	Agrawal Group Of Publications (AGP)

Disclaimer: This teaching material has been published pursuant to an undertaking given by the publisher that the content does not in any way whatsoever violate any existing copyright or intellectual property right. Extreme care is put into validating the veracity of the content in this book. However, if there is any error found, please do report to us on the below email and we will re-check; and if needed rectify the error immediately for the next print.

ATTENTION

No part of this publication may be re-produced, sold or distributed in any form or medium (electronic, printed, pdf, photocopying, web or otherwise) on Amazon, Flipkart, Snapdeal without the explicit contractual agreement with the publisher. Anyone caught doing so will be punishable by Indian law.

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक के साथ स्पष्ट संविदात्मक समझौते के बिना अमेज़न, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील पर किसी भी रूप या माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, मुद्रित, पीडीएफ, फोटोकॉपी, वेब या अन्यथा) में फिर से उत्पादित, बेचा या वितरित नहीं किया जा सकता है। जो कोई भी ऐसा करता हुआ पकड़ा जाएगा, वह भारतीय कानून द्वारा दंडनीय होगा।

AGP contributes Rupee One on every book purchased by you to the **Friends of Tribals Society** Organization for better education of tribal children.

यह पेज अवश्य पढ़ें।

(जानिए हम आपकी परीक्षा की तैयारी में कैसे मदद करते हैं)

कुछ ही वर्षों में Agrawal Examcart की पुस्तकें शिक्षकों और छात्रों के बीच काफी लोकप्रिय हो गयी हैं। हमारे Subject Experts पुस्तकों की विषय सामग्री पर विशेष ध्यान देते हैं। परीक्षा के पठ्यक्रमानुसार पाठ्यपुस्तकों और गाइडबुक्स के माध्यम से हम आपको syllabus-wise सटीक और सरल भाषा में पुस्तकें प्रदान करते रहे हैं जिससे आपको कम समय में परीक्षा की तैयारी में मदद मिले। किसी भी परीक्षा सम्बन्धी practice set को तैयार करते समय, हमारा उद्देश्य यही रहता है कि आप अपनी परीक्षा की तैयारी का स्वयं मूल्यांकन 90% से अधिक सटीकता से कर सकें। यही कारण है कि प्रत्येक Practice set पिछले परीक्षा पैटर्न के अनुसार तैयार किया जाता है और इसमें बहुत अच्छे प्रश्नों का संग्रह होता है।

" हमारा उद्देश्य सिर्फ आपको पुस्तक उपलब्ध करना ही नहीं बल्कि आपके पुस्तक खरीदने से लेकर पुस्तक पूरा पढ़ने तक के सफर में हम आपके सारथि होंगे। इसीलिए हमने कुछ ऐसी सेवाएँ (नीचे दी गई) शुरू की हैं जिनकी मदद से हम आपकी सहायता कर पाएंगे। "

अपने Phone पर इस पुस्तक के संशोधित Updates प्राप्त करें!

हर बार जब हम इस पुस्तक में संशोधन या कोई भी नया update करेंगे तो उसकी जानकारी हम आपके Whatsapp Number पर भेजेंगे जिससे आपको इस बुक का नया संस्करण न लेना पड़े और आपको free में Updated Content मिल जाये । इसके लिए आपको नीचे दिए हुए फॉर्म को भरना होगा जिससे हम आपको Updated content भेज पाएं। ध्यान दें कि फॉर्म भरते समय Book Code सही डालें नहीं तो आपको किसी और बुक के Updates मिलेंगे ।

इस पुस्तक का **Book Code: CB728**

Form link ☛ http://bit.ly/exmcrtrev or Scan Code ☛

Whatsapp Helpline No. (पुस्तक में गलती या परीक्षा सम्बंधित जानकारी)

परीक्षाओं से समबन्धित किसी भी तरह की जानकारी जैसे-पाठ्यक्रम, पेपर पैटर्न, सबसे अच्छी पुस्तकें, परीक्षा सम्बंधित महत्वपूर्ण Dates, किसी प्रश्न का हल एवं **हमारी पुस्तकों में किसी भी तरह की गलती पाए जाने पर हमारे whatsapp Helpline नंबर पर संपर्क करें** | हमारी Experts की Team आपको उससे सम्बंधित सही जानकारी उपलब्ध कराएगी |

Whatsapp number ☛ 8937099777 or Scan Code ☛

Join Telegram Group

Agrawal Examcart ने **Examcart Live** के नाम से एक नया **Telegram Group** शुरू किया है जिससे आपको कई तरह से परीक्षा की तैयारी में मदद मिलेगी

- नवीनतम परीक्षा का पूर्ण **Notification** और पाठ्यक्रम के **Updates** प्राप्त करें।
- नई परीक्षाओं से सम्बंधित best नवीनतम पुस्तकों के **Updates** प्राप्त करें ।
- नई परीक्षाओं से सम्बंधित **Free Study material** प्राप्त करें ।
- अपनी परीक्षा की तैयारी का परीक्षण करने के लिए **weekly practice problem sheet** प्राप्त करें ।

Join us on Telegram: ☛ **t.me/Examcartlive or Scan Code ☛**

Read & Practice Online

हमारी Android App और Website पर पढ़ने की जानकारी अगले पृष्ठ पर दी गयी है |

Agrawal Examcart

Catalog ☛ https://bit.ly/exm8462 **Website ☛ https://bit.ly/amzexmcrt**

AGRAWAL EXAMCART
ANDROID APP ON
Google Play

App की विशेषताएं!!!

- एकमात्र app जिसमें आपको परीक्षाओं से सम्बंधित सभी contents नए पाठ्यक्रम और परीक्षा पैटर्न अनुसार up-to-date मिलेंगे।
- App पर Course को खरीदने से पहले उसकी गुणवत्ता जानने के लिए Free content दिया है |
- हमारे App पर 100 से अधिक परीक्षाओं पर courses आकर्षक मूल्य पर उपलब्ध हैं |
- App पर Online Quiz देते समय आपको वास्तविक online परीक्षा जैसा अनुभव प्राप्त होगा।

Examcart Android App को चलाने की जानकारी

Step 1: **Google playstore** से **Examcart** की **App** को **Download** करें। **Examcart App** को **Playstore** पर देखने का link **http://bit.ly/examcartapp2021**

Step 2: **Examcart App** में **login** करें और Category Section में जाके अपने **Exam** से सम्बन्धित **Course** को देखें |

हमारे **app** के **features** एवं उसकी कार्य प्रणाली को समझने के लिए **15 seconds का Tutorial** देखें।
http://bit.ly/exmcrtdemo

Laptop, Desktop या iphone Users के लिए

Step 1: Mobile या Laptop Browser पर www.examcart.sikhaoo.com टाइप करें।

Step 2: हमारे Course को use करने के लिए **Sign in** करें।

सबसे बड़ी समस्या

हर परीक्षा में 15% तक सामान्य ज्ञान के प्रश्न करंट अफेयर्स से सम्बंधित होते हैं। इनकी तैयारी के लिए महत्वपूर्ण करंट अफेयर्स का चयन करना और उनसे सम्बंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं को लम्बे समय तक याद रखना सबसे बड़ी समस्या है।

आइये देखें TOPPERS कैसे इस समस्या को हल करते हैं।

3 SECRETS जिससे Toppers करंट अफेयर्स में अच्छे marks लाते हैं —

समाचारों को प्रश्नोत्तर प्रारूप (MCQ) में लम्बे समय तक याद रखना बहुत आसान होता है।

प्रश्नों को उनके विषय और घटनाक्रम के अनुसार विभाजित करने से जल्दी revision में बहुत आसानी होती है।

समाचार के सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को प्रश्न के उत्तर में शामिल करने से उस समाचार सम्बंधित प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते है।

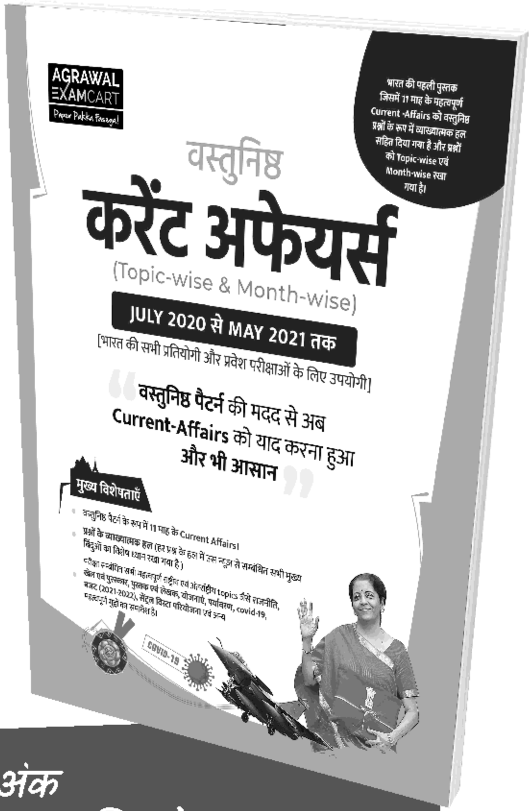

करंट अफेयर्स में अच्छे अंक लाने के लिए भारत की पहली पुस्तक जिसमें वार्षिक महत्वपूर्ण करंट अफेयर्स (जुलाई 2020 से मई 2021) को वस्तुनिष्ट प्रश्नों एवं उनके व्याख्यात्मक हल के साथ topic-wise एवं month-wise प्रस्तुत किया गया है।

Free sample इस link पर पढ़ें

http://bit.ly/exmcrtcafa

Amazon से खरीदने का link

https://amzn.to/3gssO1s

UPSSSC PET परीक्षा पाठ्यक्रम

1. भारतीय इतिहास (Indian History) 05

- सिन्धु घाटी की सभ्यता
- वैदिक संस्कृति
- बौद्ध धर्म : गौतम बुद्ध (जीवनी एवं शिक्षायें)
- जैन धर्म : महावीर (जीवनी एवं शिक्षायें)
- मौर्य वंश : सम्राट अशोक
- गुप्त वंश : समुद्र गुप्त, चन्द्र गुप्त द्वितीय
- हर्षवर्धन
- राजपूत काल
- सल्तनत काल
- मुगल साम्राज्य
- मराठा
- ब्रिटिश राज का अभ्युदय एवं प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
- ब्रिटिश राज का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

2. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन (Indian National Movement) 05

- स्वाधीनता आन्दोलन के प्रारम्भिक वर्ष
- स्वदेशी तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन : महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं की भूमिका
- क्रांतिकारी आंदोलन तथा उग्र राष्ट्रवाद का उदय
- विधायी संशोधन तथा ब्रिटिश इंडिया एक्ट, 1935
- भारत छोड़ो आन्दोलन, आजाद हिन्द फौज तथा नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

3. भूगोल (Geography) 05

- भारत एवं विश्व का भौतिक भूगोल
  - नदियाँ नथा नदियों की घाटी
  - भूजल संसाधन
  - पर्वत, पहाड़ियाँ तथा हिमनद
  - मरुस्थल और शुष्क क्षेत्र
  - वन
  - खनिज संसाधन (विशेषकर भारत में)
- भारत एवं विश्व का राजनैतिक भूगोल
- जलवायु तथा मौसम
- टाइम जोन
- जनसांख्यिकीय परिवर्तन तथा प्रवास

4. भारतीय अर्थव्यवस्था (Indian Economy) 05

- भारतीय अर्थव्यवस्था (1947 से 1991 तक)
  - योजना आयोग तथा पंचवर्षीय योजनाएँ
  - मिश्रित अर्थव्यवस्था का विकास : निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र
  - हरित क्रांति
  - दुग्ध विकास एवं ऑपरेशन फ्लड
  - बैंकों का राष्ट्रीयकरण तथा सुधार
- वर्ष 1991 में आर्थिक सुधार तथा उसके बाद की अर्थव्यवस्था
- वर्ष 2014 के पश्चात् के आर्थिक सुधार
  - कृषि सुधार
  - ढाँचागत सुधार
  - श्रम सुधार
  - आर्थिक सुधार
  - जी. एस. टी.

5. भारतीय संविधान एवं लोक प्रशासन (Indian Constitution & Public Administration) 05

- भारतीय संविधान
  - भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएँ
  - राज्य के नीति–निर्देशक सिद्धान्त
  - मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य
  - संसदीय प्रणाली
  - संघीय प्रणाली, संघ एवं केन्द्रशासित प्रदेश, केन्द्र–राज्य सम्बन्ध
  - न्यायिक ढाँचा–सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय
- जिला प्रशासन
- स्थानीय निकाय तथा पंचायती राज संस्थाएँ

6. सामान्य विज्ञान (General Science) 05

- प्रारम्भिक भौतिक विज्ञान
- प्रारम्भिक रसायन विज्ञान
- प्रारम्भिक जीव विज्ञान

7. प्रारम्भिक अंकगणित (Elementary Arithmetic) 05

- पूर्ण संख्या, भिन्न तथा दशमलव
- प्रतिशतता
- साधारण अंकगणितीय समीकरण
- वर्ग एवं वर्गमूल
- घातांक एवं घात
- औसत

8. सामान्य हिन्दी (General Hindi) **05**

- संधि
- विलोम शब्द
- पर्यायवाची शब्द
- वाक्यांशों के लिए एक शब्द
- लिंग
- समश्रुत भिन्नार्थक शब्द
- मुहावरे–लोकोक्तियाँ
- सामान्य अशुद्धियाँ
- लेखक और रचनाएँ (गद्य एवं पद्य)

9. सामान्य अंग्रेजी (General English) **05**

- अंग्रेजी व्याकरण
- अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न

10. तर्क एवं तर्कशक्ति (Logic & Reasoning) **05**

- वृहत् एवं लघु
- क्रम एवं रैंकिंग
- सम्बन्ध
- समूह से भिन्न को अलग करना
- कैलेण्डर एवं घड़ी
- कारण और प्रभाव
- कोडिंग–डिकोडिंग (संख्या तथा अक्षर)
- निगमनात्मक तर्क/कथन विश्लेषण एवं निर्णय

11. समसामयिकी (Current Affairs) **10**

- भारतीय एवं वैश्विक

12. सामान्य जागरूकता (General Awareness) **10**

- भारत के पड़ोसी देश
- देश, राजधानी एवं मुद्रा
- भारत के राज्य तथा केन्द्र शासित प्रदेश
- भारतीय संसद, राज्यसभा, लोकसभा और विधानसभा, विधान परिषद
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दिवस
- विश्व संगठन एवं उनके मुख्यालय
- भारतीय पर्यटन स्थल
- भारत की कला एवं संस्कृति
- भारत एवं विश्व के खेल
- भारतीय अनुसंधान संगठन
- प्रसिद्ध पुस्तकें और लेखक
- पुरस्कार एवं विजेता
- जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण

13. अपठित हिन्दी गद्यांश का विवेचन एवं विश्लेषण–02 गद्यांश **10**

14. ग्राफ की व्याख्या एवं विश्लेषण–02 ग्राफ **10**

15. तालिका की व्याख्या एवं विश्लेषण–02 तालिकाएँ **10**

विषय–सूची

v/;k; i`"B la[;k

खण्ड-I : सामान्य अध्ययन **1-250**

1. प्राचीन भारत का इतिहास **1–12**

- पाषाण काल या प्रागैतिहासिक काल
- सिन्धु घाटी सभ्यता (2350 ई. पू.–1750 ई. पू.)
- वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति
- वैदिक साहित्य
- धार्मिक आन्दोलन
- संगम युग
- छठी शताब्दी ई. पू. का भारत तथा महाजनपद काल
- मगध का उत्थान
- सिकन्दर का आक्रमण
- मौर्य साम्राज्य (322-184 ई.पू.)
- मौर्योत्तर काल
- भारत के यवन राज्य
- गुप्त वंश (240-480 ई.)
- भारत के यवन राज्य
- पुष्यभूति या वर्धन राजवंश
- राजपूत काल (800-1200 ई.)
- पुष्यभूति या वर्धन राजवंश
- मध्य भारत, उत्तर भारत और दक्कन : तीन साम्राज्यों का युग (8वीं से 10वीं सदी तक)
- चोल साम्राज्य (नवीं से बारहवीं सदी तक)

2. मध्यकालीन भारत का इतिहास **13–21**

- भारत पर अरब एवं तुर्क आक्रमण
- दिल्ली सल्तनत [1206-1526] ई.
- विजय नगर राज्य
- बहमनी राज्य
- मुगल वंश
- मराठों का उत्कर्ष
- पेशवाओं का शासन
- सिख धर्म या सिख सम्प्रदाय

3. आधुनिक भारत का इतिहास **22–33**

- मुगल साम्राज्य का पतन
- यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन
- सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण
- 1857 का विद्रोह
- राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रथम चरण (1885–1905)
- राष्ट्रवादी आन्दोलन का द्वितीय चरण (1905-1919)
- राष्ट्रवादी आन्दोलन का तृतीय चरण (1919-1947)
- ब्रिटिश काल में भारत में शिक्षा का विकास
- भारत के गवर्नर-जनरल/वायसराय

4. भारतीय कला एवं संस्कृति **34–47**

- भारतीय चित्रकला
- भारतीय वास्तुकला और स्थापत्य
- भारतीय नृत्य
- भारतीय संगीत

5. भारत का भूगोल **48–64**

- भारत का सामान्य परिचय
- भारत का भौतिक विभाजन
- अपवाह-तन्त्र
- भारत की जलवायु
- प्राकृतिक वनस्पति
- भारत की मृदा
- भारत की खनिज सम्पदा
- ऊर्जा संसाधन
- भारत में उद्योग
- परिवहन
- भारत की प्रमुख जनजातियाँ

6. विश्व का भूगोल **65–90**

- ब्रह्माण्ड
- सौरमण्डल
- स्थलमण्डल
- जलमण्डल
- वायुमण्डल
- महाद्वीप
- आर्थिक भूगोल
- प्राकृतिक पर्यावरण तथा प्रदूषण
- विश्व में परिवहन

7. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी **91–112**

- पर्यावरण
- भारत की 16वीं वन स्थिति रिपोर्ट–2019
- अभयारण्य/जैवमण्डल–रिजर्व
- रामसर सम्मेलन
- पर्यावरण प्रदूषण
- विविध तथ्य

8. भारतीय संविधान **113–133**

- भारत का संवैधानिक विकास
- संविधान सभा एवं भारतीय संविधान
- संविधान की उद्देशिका अथवा प्रस्तावना
- संविधान सभा के प्रमुख स्रोत
- संघ एवं राज्य क्षेत्र
- नागरिकता
- मौलिक अधिकार
- राज्य के नीति-निदेशक तत्व
- मौलिक कर्त्तव्य
- संघ की कार्यपालिका
- राष्ट्रपति की वीटो शक्तियाँ
- संसद
- न्यायपालिका
- राज्य की कार्यपालिका
- राज्य का विधान मंडल
- पंचायती राज एवं नगर पालिकाएँ
- केन्द्र–राज्य सम्बन्ध
- योजना आयोग
- राष्ट्रीय विकास परिषद्
- निर्वाचन
- राजभाषा
- लोक सेवा आयोग
- राष्ट्रीय आपात
- जिला प्रशासन
- प्रमुख संविधान संशोधन

9. भारतीय अर्थव्यवस्था **134–157**

- अर्थव्यवस्था का परिचय
- राष्ट्रीय आय
- भारत में आर्थिक सुधार
- भारत में आर्थिक नियोजन एवं पंचवर्षीय योजनाएँ
- मानव विकास सूचकांक
- भारतीय कृषि
- उद्योग एवं औद्योगिक नीति
- भारतीय वित्त बाजार
- लोक वित्त
- गरीबी एवं बेरोजगारी
- भारत में वर्ष 2014 के बाद के आर्थिक सुधार
- भारत में श्रम सुधार
- भारतीय अर्थव्यवस्था में ढांचागत सुधार
- वस्तु एवं सेवा कर
- भारत की जनगणना : 2011
- प्रवास

10. भौतिक विज्ञान **158–172**

- भौतिक विज्ञान का सामान्य परिचय
- यांत्रिकी
- कार्य, सामर्थ्य और ऊर्जा
- गुरुत्वाकर्षण
- दाब
- पदार्थों के सामान्य गुण
- सरल आवर्त गति
- ध्वनि एवं तरंग गति
- ऊष्मा तथा ताप
- प्रकाश
- विद्युत
- चुम्बकत्व
- परमाणु भौतिकी

11. रसायन विज्ञान **173–186**
- पदार्थ एवं उसकी प्रकृति
- भौतिक रसायन
- अकार्बनिक रसायन
- कार्बनिक रसायन

12. जीव विज्ञान **187–207**
- जीव विज्ञान की परिभाषा
- जीवधारियों का वर्गीकरण
- कोशिका एवं कोशिका संरचना
- आवृत्तबीजियों की आकारिकी
- हॉर्मोन
- जन्तु जगत का आधुनिक वर्गीकरण
- मानव स्वास्थ्य एवं पोषण
- मानव शरीर के तन्त्र
- आनुवंशिकी एवं जैविक विकास
- गुणसूत्र
- प्रमुख मानव रोग

13. विविध **208–250**
- विज्ञान के महत्त्वपूर्ण आविष्कार व आविष्कारक
- प्रमुख खेल तथा उनसे सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी
- विभिन्न देशों के राष्ट्रीय खेल
- खेल एवं उनसे सम्बन्धित कप/ट्रॉफी
- प्रमुख खेल और खिलाड़ियों की संख्या
- अन्तर्राष्ट्रीय स्टेडियम
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन
- विश्व के संगठन और उनके मुख्यालय
- विश्व की प्रमख गुप्तचर संस्थाएँ
- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखाएँ
- प्रमुख देशों के राष्ट्रीय प्रतीक
- राष्ट्राध्यक्ष/शासनाध्यक्षों के आधिकारिक निवास/कार्यस्थल
- प्रमुख देशों के राष्ट्रीय पशु
- वर्तमान में विश्व के प्रमुख समाचार–पत्र
- प्रसिद्ध व्यक्तियों के समाधि स्थल
- प्रमुख राष्ट्रीय आयोग, संगठन, प्राधिकरण
- प्रमुख व्यक्ति एवं उनके गुरु
- भारत के प्रमुख शोध संस्थान
- महान कार्यों से सम्बन्धित व्यक्ति
- प्रमुख व्यक्तियों से सम्बन्धित स्थान
- महत्त्वपूर्ण तिथि, सप्ताह, वर्ष एवं दशक
- अन्तर्राष्ट्रीय दशक : संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्वीकृत
- अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष
- अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार
- राष्ट्रीय पुरस्कार
- भारतीय प्रतिरक्षा तन्त्र
- विश्व में सबसे बड़ा/छोटा/लम्बा/ऊँचा
- विश्व में प्रथम
- विश्व में प्रथम महिला
- विश्व की विभिन्न महिला शासक
- भारत में सबसे बड़ा/छोटा/लम्बा/ऊँचा
- भारत के प्रमुख पर्यटन स्थल
- प्राचीन भारत की प्रसिद्ध पुस्तकें
- महत्त्वपूर्ण पुस्तकें और उनके लेखक
- भारत के राष्ट्रीय चिह्न/प्रतीक
- भारत के राज्य
- विश्व के प्रमुख देशों की राजधानी एवं मुद्रा

खण्ड-II : प्रारम्भिक अंकगणित 251-332

1. संख्या पद्धति **251-262**
2. भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ **263-276**
3. प्रतिशतता **277-284**
4. साधारण अंकगणितीय समीकरण **285-291**
5. वर्ग एवं वर्गमूल **292-298**
6. घातांक एवं करणी **299-305**
7. औसत **306-314**
8. ग्राफ की व्याख्या एवं विश्लेषण **315-332**

खण्ड-III : सामान्य हिन्दी		333-391
1.	अपठित गद्यांश	333-337
2.	सन्धि	338-344
3.	विलोम शब्द	345-353
4.	पर्यायवाची	354-358
5.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	359-361
6.	लिंग	362-365
7.	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द	366-369
8.	मुहावरे–लोकोक्तियाँ	370-373
9.	सामान्य अशुद्धियाँ	374-380
10.	लेखक और रचनाएँ (गद्य एवं पद्य)	381-391

खण्ड-IV : General English		392-450
1.	Comprehension	392-394
2.	The Noun	395-397
3.	Pronoun	398-399
4.	Verb and Syntax	400-408
5.	Adjective	409-411
6.	Adverb	412-413
7.	Preposition	414-417
8.	Conjunction	418-419
9.	Articles	420-424
10.	Voice	425-426
11.	Narration	427-431
12.	Vocabulary	432-450

खण्ड-V : तर्क एवं तर्कशक्ति		451-503
1.	वृहत एवं लघु	451-453
2.	क्रम एवं रैंकिंग	454-457
3.	रक्त सम्बन्ध	458-463
4.	समूह से भिन्न को अलग करना	464-467
5.	कैलेण्डर एवं घड़ी	468-474
6.	कारण और प्रभाव	475-478
7.	कोडिंग–डिकोडिंग	479-485
8.	निगमनात्मक तर्क	486-489
9.	कथन एवं निष्कर्ष	490-492
10.	कथन विश्लेषण एवं निर्णय	493-496
11.	तालिका की व्याख्या एवं विश्लेषण	497-503

प्रैक्टिस सेट्स	1-22
प्रैक्टिस सेट-1	1-11
प्रैक्टिस सेट-2	12-22

समसामयिकी	1-7
समसामयिकी	1-7

अध्याय 4

भारतीय कला एवं संस्कृति

1. भारतीय चित्रकला (Indian Paintings)

I. चित्रकला (Paintings)

- कला के विभिन्न रूपों में 'चित्रकारी' कला का सूक्ष्मतम प्रकार है, जो रेखाओं और रंगों के माध्यम से मानव चिंतन और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य गुफाओं में रहता था तो उसने गुफाओं में रहता था तो उसने गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी की। धीरे–धीरे नगरीय सभ्यता का विकास होने पर यह चित्रकारी गुफाओं से निकलकर वस्त्रों, भवनों, बर्तनों, सिक्कों, कागजों आदि पर आ गई।
- चित्रकला के क्षेत्र में अजन्ता के चित्र, चित्रकला के विकास के अद्वितीय उदाहरण हैं। इन चित्रों में मनोभावों का सजीव चित्रण किया गया है।
- **विष्णु धर्मोत्तर पुराण** में कहा गया है कि सभी कलाओं में चित्रकला श्रेष्ठ है तथा यह धर्म, काम, अर्थ एवं मोक्ष को देने वाली है। इसमें चित्रकला के तकनीकी पक्ष का भी विवरण मिलता है।
- समरांगण सूत्रधार में भी इसी बात की पुष्टि करते हुए बताया गया है कि चित्र सभी शिल्पों का मुख एवं संसार का प्रिय है।
- वात्स्यायन के कामसूत्र में चित्रकला की गणना 64 कलाओं में की गयी है जिसका ज्ञान सुसंस्कृत व्यक्ति के लिए आवश्यक था।
- जामिनी रॉय 20वीं शताब्दी की भारतीय कला के उन आधुनिकतावादी कलाकारों मे ंसे थे, जिन्होंने उस समय की पारम्परिक कलाओं से अलग एक नई शैली विकसित की। वह अपनी रचनाओं में चटकीली रेखाओं और सपाट रंगों के लिए विख्यात थे।
- भारत में चित्रकला का अस्तित्व सभ्यता के आरम्भ से ही है। सैंधव सभ्यता से प्राप्त मृद्भांडों पर की गई चित्रकारी एवं मृण्मूर्तियाँ, मिट्टी के खिलौने इत्यादि सदृश प्रागैतिहासिक साक्ष्य इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।
- अजन्ता के कलाकारों ने लहरदार रेखाओं और सूक्ष्मग्राही रगों में जातक कथाओं के विषय वस्तुओं (बुद्ध के विभिन्न अवतारों के जीवन के उतार-चढ़ाव का विशद वर्णन) का चित्रण किया।
- भित्ति चित्रकारी भारत में काफी समय तक खूब प्रचलित रही। चालुक्यों की बादामी (6वीं शताब्दी), पल्लवों का पनमलै (7वीं शताब्दी), पांड्यों की सित्तन्नावसल (9वीं शताब्दी), चोलों के तंजौर (12वीं शताब्दी), विजयनगर की लोपाक्षी (16वीं शताब्दी) तथा विभिन्न शताब्दियों में केरल की भित्ति चित्रकारी काफी प्रचलित रही।
- क्लिप कला चित्रों का ऐसा संग्रह होता है जिसके माध्यम से प्रलेखों या किसी विषय को आसानी से समझाया जाता है। जैसे—होम प्रिंटेड ग्रीटिंग कार्ड, कमर्शियल कैन्डल आदि। आज क्लिप कला इलेक्ट्रॉनिक रूप से अत्यधिक प्रसिद्ध हो रही है।
- राजा रवि वर्मा चित्रकला के क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। 'चित्रकारों का राजकुमार' तथा 'राजकुमारों में चित्रकार' की संज्ञा से सुविख्यात राजा रवि वर्मा का जन्म 29 अप्रैल, 1848 ई. को केरल के तिरुअनन्तपुरम् से 40 किमी. दूर स्थित 'किनीमत्तूर के राजघराने में हुआ था।

भीमबेटका की चित्रकला

इसकी खोज डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा सन् 1957-58 में की गई थी। भीमबेटका में 700 से अधिक शैलाश्रय हैं, जिनमें 400 शैलाश्रय चित्रों द्वारा सज्जित हैं। इन चित्रों में अधिकतर आखेट के चित्र प्राप्त होते हैं। कुछ चित्रों में आदि धर्म और जादू-टोने एवं कृषक जीवन का चित्रण भी किया गया है। इसमें कुछ चित्रों में गेरू, खड़िया और काले आदि रंगों का प्रयोग किया गया है।

हड़प्पाकालीन चित्रकला

यह एक नगरीय सभ्यता थी जिसमें मिट्टी के खिलौनों, मुहरों, बर्तनों आदि पर चित्रकला की छाप है। यहाँ अधिकांश पात्रों पर लाल रंग चढ़ाकर काले रंग से चित्रकारी की गई है। यहाँ चित्रों में ज्यामितीय आरेखनों के अलावा मानव, पशु-पक्षियों वनस्पतियों आदि का चित्रांकन भी मिलता है।

पट्टचित्र

यह ओडिशा की एक परम्परागत वस्त्र आधारित स्क्रॉल चित्रकारी (कुण डलित चित्रकारी) है, जो रेखा चित्रण और वर्ण (रंग) योजना के लिए अद्वितीय है। इस चित्रकारी का संपादन ओडिशा के कलाकारों की एक जाति महापात्रा द्वारा किया गया था। इस कला के अन्तर्गत सबसे पहले चित्र के किनारों को पूर्ण करने की परम्परा रही है। इस चित्रकला के प्रमुख विषयों में भगवान जगन्नाथ के मन्दिर, कृष्ण लीला, भगवान विष्णु के अवतार, बहन सुभद्रा और भाई बलराम, रामायण तथा महाभारत जैसे पौराणिक एवं लोक कथाओं का चित्रण शामिल है।

स्क्रॉल चित्रकारी (कुण्डलित चित्रकारी) के अन्य उदाहरण

कलमकारी	-	आन्ध्र प्रदेश
कालीघाट पाट्स	-	पश्चिम बंगाल
फड़ चित्रकला	-	राजस्थान
चेरियाल चित्रकारी	-	तेलंगाना
पिछवई चित्रकारी	-	राजस्थान

बगरू ठप्पा छपाई (Bagru Block Printing)

यह छपाई राजस्थान के बगरू गाँव में छिप्पा समुदाय द्वारा प्राकृतिक रंगों के साथ की जाने वाली एक पारम्परिक कला है। बगरू छपाई में मुख्यतः लाल और काले रंग का प्रयोग किया जाता है। परम्परागत रूप से, इस कला में वन्य पुष्प, कलियाँ, पत्ते और मुद्रित ज्यामितीय प्रतिरूपों का

रूपांकन किया जाता है। हाल ही में, केन्द्रीय सरकार द्वारा पारम्परिक बगरू ठप्पा छपाई कला को संरक्षित करने हेतु राजस्थान के बगरू गाँव में 'तीतानवाला संग्रहालय' की स्थापना की गई है।

अन्य महत्त्वपूर्ण पारम्परिक ठप्पा छपाई तकनीकें एवं सम्बन्धित राज्य :

गुजरात	:	अजरक छपाई।
राजस्थान	:	सांगानेरी, अजरक, डाबू
मध्य प्रदेश	:	बाघ छपाई, भैरवगढ़ छपाई (बाटिक)
आन्ध्र प्रदेश	:	कलमकारी

पिथौरा चित्रकला

यह चित्रकारी एक अनुष्ठानात्मक चित्रकला का उदाहरण है। यह चित्रकारी गुजरात और मध्य प्रदेश की राठवा, भील तथा नायक जनजातियों द्वारा दीवारों पर बनाई जाती है। इनमें विवाह, त्योहार और पारम्परिक समारोहों की छवियाँ बनाई जाती हैं।

सुलावेसी कला

यह चित्रकारी इण्डोनेशिया के सुलावेसी द्वीप पर एक गुफा में प्राप्त हुई है। इस गुफा चित्रकारी में पशुओं का आखेट करते हुए मनुष्य सदृश्य आकृतियों का चित्रण किया गया है।

गुजराती चित्रकला

इस शैली का प्रभाव अहमदाबाद, मारवाड़, मालवा, जौनपुर, अवध, पंजाब, नेपाल, बंगाल, ओडिशा में देखने को मिलता है। इस शैली के मुख्य विषय पर्वत, नदी, सागर, पृथ्वी, अग्नि, बादल व वृक्ष आदि हैं। राजपूत शैली इसी चित्रकला शैली की देन माना जाता है। इसमें रागमाला के चित्रों का भी चित्रण किया गया है।

जैन चित्रकला

इस शैली में विशेषरूप से भावाभिव्यक्ति तथा नेत्रों की विशालता पर ध्यान दिया गया है। इस शैली का विकास 7वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के मध्य माना जाता है। जिसके प्रथम प्रमाण सित्तनवासल की गुफा से प्राप्त होते हैं।

अपभ्रंश शैली

इस शैली के चित्रों का विकास 11वीं से 15वीं शताब्दी के मध्य हुआ माना जाता है। इस शैली के चित्रों का निर्माण ताड़-पत्र, कपड़े एवं कागज पर हुआ।

पहाड़ी चित्रकला

यह शैली राजपूत शैली से विशेष रूप से प्रभावित है। इस शैली का विकास उत्तर-पश्चिमी हिमालय के विभिन्न पहाड़ी राज्यों में हुआ। इस चित्रकला शैली के चित्रों में विशेष रूप से स्त्री-पुरुष प्रेम सम्बन्धों का चित्रण हुआ है। इस शैली पर पर्वतीय क्षेत्र के निवासियों की भावनाओं तथा संगीत व धर्म सम्बन्धी परम्पराओं की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है।

मधुबनी चित्रकला

इस चित्रकला का मुख्य केन्द्र बिहार के मधुबनी जिले का एक छोटा-सा गाँव जितवारपत्र है। प्रारम्भ में यह कला रंगोली के रूप में प्रसिद्ध थी, परन्तु बाद में यह कपड़ों, दीवारों एवं कागज पर उतर आई। इस कला की विषयवस्तु मुख्यरूप से धार्मिक और लोक-जीवन की कथाओं से जुड़ी हुई है।

इस चित्रकला में विशेष रूप से हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र, प्राकृतिक दृश्य जैसे-सूर्य व चन्द्रमा, धार्मिक पेड़-पौधे जैसे-तुलसी और विवाह के दृश्य देखने को मिलते हैं।

मुगल चित्रकला

भारत में मुगल चित्रकला का विकास सम्राट अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में हुआ। मुगल चित्रकला फारसी और भारतीय शैली का मिश्रण है। यह भारतीय और फारसी शैली के विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं का संयोजन है। यह कला जहाँगीर के काल में अपनी पराकाष्ठा पर थी। भारत में यह चित्रकला विशेषतः हुमायूँ के शासनकाल के दौरान विकसित हुई। मुगल चित्रकलाएँ अक्सर लड़ाई, पौराणिक कहानियों, शिफा के दृश्य वन्यजीव, शाही जीवन जैसे–विषयों के आस-पास घूमती हैं।

बसौली चित्रकला

इस कला का विकास रावी नदी के किनारे बसे बसौली में राजा कृपाल पाल (1687-95) के संरक्षण में हुआ था। इस चित्रकला शैली में कश्मीर की भित्ति चित्रशैली, लोककला शैली और राजस्थानी व मुगल शैली का समन्वित चित्रण दिखाई देता है। इसमें चटकीले लाल, पीले और नीले रंगों का प्रयोग किया गया है।

दक्कन चित्रकला

इस चित्रकला को बीजापुर के अली आदिलशाह तथा इब्राहिम शाह ने संरक्षण प्रदान किया था। इस शैली में फारसी प्रभाव दिखायी पड़ता है। गोलकुण्डा एवं अहमदनगर राज्यों तक इस कला का विस्तार था। 'रागमाला' में किये गए चित्रों का चित्रांकन विशेष रूप से इसी शैली में किया गया।

पाल चित्रकला

इस कला की विषयवस्तु मुख्य रूप से बौद्ध धर्म से प्रभावित रही। इस शैली का विकास बंगाल में पाल वंश के शासकों धर्मपाल एवं देवपाल के शासनकाल में हुआ।

बीकानेर शैली

इस शैली पर सर्वाधिक प्रभाव पंजाबी एवं दक्खिनी शैली का पड़ा। इसमें हिन्दू धर्म से सम्बन्धित एवं पौराणिक विषयों का चित्रांकन किया गया था। इस शैली के प्रमुख कलाकार रामलाल, अली रजा, हसन रजा, रुकनुद्दीन आदि थे।

किशनगढ़ चित्रकला

इस कला का प्रतिभावान चित्रकार निहालचन्द्र था। किशनगढ़ के नरेश नागरीदास ने इस शैली में राधा-कृष्ण सम्बन्धी काव्यात्मक कला-कृतियाँ तैयार करवाईं। यह शैली अपने शृंगारिक चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

मालवा चित्रकला

मालवा शैली अपने चमकीले और गहरे रंगों के कारण विशिष्ट है। माधोदास रचित रंगमाला के दृश्य इस शैली के अनुपम उदाहरण हैं। मालवा शैली के रंगचित्रों की प्रमुख शृंखला रसिकप्रिया है।

कोटा चित्रकला

इस चित्रकला के तहत आखेट, हाथियों की लड़ाई और राजा महाराजाओं के अनेक छविचित्र बनाए गए। इन सभी चित्रों के रंग गहरे व चमकीले हैं।

मेवाड़ चित्रकला

इस चित्रकला की मुख्य विषयवस्तु राधा-कृष्ण की लीलाएँ हैं। यह शैली राजस्थानी जनजीवन व धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करती है। साहबदीन और मनोहर इस शैली के प्रमुख चित्रकार हैं।

- **थांगका चित्रकला (Thangka Paintings)**—थांगका, तिब्बती बौद्ध चित्रकला है जो सूती अथवा रेशमी कपड़े पर की जाती है। एक जो बुद्ध एवं बोधिसत्वों के जीवन से सम्बन्धित जानकारी प्रदान करते हैं। दूसरे जिनमें बौद्ध दर्शन की अभिव्यक्ति मिलती है और तीसरे जिनका प्रयोग ध्यान की क्रिया करने में अथवा पूजा–प्रार्थना करने के माध्यम के रूप में किया जाता है।
- **वर्ली कला (Varli Paintings)**—महाराष्ट्र अपनी वर्ली कला पेंटिंग्स के लिए प्रसिद्ध है। इस कला में वर्ली जनजातियों द्वारा अपनी रोजमर्रा की व सामाजिक जीवन की विभिन्न रचनाओं को दीवारों पर चित्रित किया जाता है। सफेद रंग से पोती हुई मिट्टी की दीवारों पर चित्रित ये पेंटिंग्स ऐतिहासिक गुफाओं में चित्रित पेंटिंग्स से काफी मिलती हैं।
- **कालीघाट पॉट कला (Kalighat Pot Paintings)**—18वीं शताब्दी में कलकत्ता के समीपवर्ती गाँवों के स्थानीय खर्रा चित्रकार (पटुआ) और कुम्हार आकर इन्होंने मिट्टी के बर्तनों में पौराणिक देवी-देवताओं की चित्रकारी आरम्भ की।
- **कलमकारी चित्रकला (Kalamkari Paintings)**—'कलमकारी' का शाब्दिक अर्थ है कलम से बनाये गये चित्र। यह चित्रकारी आन्ध्र प्रदेश में की जाती है।
- **पिथौरा चित्रकला (Pithora Paintings)**—पिथौरा, गुजरात में रहने वाली कुछ जनजातियों; राठवास एवं भीलालास द्वारा दीवारों पर की जाने वाली चित्रकारी है।
- **फर्श चित्रकला, रंगोली (Floor Painting/Rangoli)**—भारत की एक प्राचीन और परम्परागत लोक कला है। इसे सामान्यतः त्यौहार, पूजा उत्सव तथा विवाह आदि शुभ अवसरों पर बनाया जाता है। इसमें सूखे और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक चित्रकला स्कूल के मिश्रित चित्र एवं उनके चित्रकार
(Mixed Portraits of Modern School of Art & their Painters)

चित्र	चित्रकार
घोड़ा	मकबूल फिदा हुसैन
नृत्य	शैलोज मुखर्जी
काली लड़की	के. एस. कुलकर्णी
लिली	प्राणकृष्ण पाल
भैंस	नौहार चौधरी
गुमसुम लड़की	भवेश सान्याल
असहाय	सतीश गुजराल
मसूरी	ई. कुमारिल स्वामी
परिवार	आपूजी हैरूर
घर, गाँधीजी	हरेनदास
आलौकिक प्रेम	ए. ए. अलमेलकर
शयनकक्ष	गोपेन राय
ऋतु शृंगार	नन्दलाल बोस
गोवर्धनधारण	शारदा चरण उकील
बालों से पानी निचोड़ती नायिका	अबुल हरमान चुगताई
स्वप्नलोक	नागनेन्द्र नाथ ठाकुर
अभिसारिका	अवनीन्द्रनाथ ठाकुर
रूठी नायिका	ईश्वर प्रसाद वर्मा
दोपहर का विश्राम	देवी प्रसाद राय चौधरी
प्रतीक्षा	क्षितीन्द्र नाथ मजूमदार
प्याऊ	मनीष डे
अल्पाहार	बद्रीनारायण

विश्व प्रसिद्ध चित्र एवं उनके चित्रकार
(World Famous Portraits & their Painters)

चित्र	चित्रकार
बाज	उस्ताद मंसूर
मोनालिसा	लियोनार्डो द विंसी
स्टिल लाइफ	जार्जकीट
द फॉल ऑफ द मैन	माइकल एंजिलो
माँ मेडोना	रफेल
शेष फूल	किशनदास शबीह
नारी	रबीन्द्रनाथ टैगोर
भारतमाता	रबीन्द्रनाथ टैगोर
कल्कि अवतार	गगनेन्द्र नाथ ठाकुर
उड़ीसा की एक दुकान	नन्दलाल बसु
सहअस्तित्व	असित कुमार हल्दर
दा लास्ट सपर	लियोनार्डो द विंसी
दा लास्ट जजमेंट	माइल एंजिलो
शकुंतला वियोग	राजा रवि वर्मा
ढोलकिया	मकबूल फिदा हुसैन
माजाज ऑन बालकोनी	फ्रांसिस्को गोया

भारत के प्रमुख चित्रकार
(India's Eminent Painters)

• रबीन्द्रनाथ ठाकुर	• अवनीन्द्रनाथ ठाकुर
• नन्द लाल बोस	• मकबूल फिदा हुसैन

• अमित कुमार हल्दर	• क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार
• अमृता शेरगिल	• शोभा सिंह
• मोहम्मद अब्दुर्रहमान	• राजा रवि वर्मा
• भवेश चन्द्र सान्याल	• सतीश गुजराल
• यामिनी राय	• तय्यब मेहता

2. भारतीय वास्तुकला और स्थापत्य (Indian Architecture)

- भारतीय वास्तुकला के प्राचीन नमूने हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, रोपड़ कालीबंगा, लोथल और रंगपुर में पाये गये हैं जोकि सिन्धु घाटी सभ्यता के अन्तर्गत आते हैं।
- 5000 वर्ष पहले, ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दी में यह स्थान गहन निर्माण कार्य का केन्द्र था। नगर योजना उत्कृष्ट थी। सड़कें चौड़ी और एक–दूसरे के समकोण पर होती थीं।
- भवन निर्माण एवं शिल्प विज्ञान के सम्मिलित रूप को स्थापत्य कला अथवा वास्तुकला कहा जाता है। इस कला की उत्पत्ति एवं विकास मानव सभ्यता के विकास से सम्बन्धित है।
- भारतीय स्थापत्य एवं वास्तुकला के उद्भव तथा विकास के इतिहास में हड़प्पा या सिन्धु घाटी सभ्यता, मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, राष्ट्रकूट, पल्लव एवं चोल आदि वंशों के शासकों का उल्लेखनीय एवं महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।
- गुप्त-काल से ही बिना खम्भों वाले हिन्दू मन्दिरों का निर्माण शुरू किया था। इसका एक उदाहरण देवगढ़ (झाँसी जिला) का मन्दिर है; जिसके बीच में गर्भ-गृह है, जिसमें भगवान की मूर्ति स्थापित की गई है। एक और उदाहरण है-भर्तृगाँव (कानपुर जिला)। यह दोनों मन्दिर इस काल के बेहतरीन उदाहरण हैं।
- उड़ीसा में कुछ सुन्दर और आकर्षक मन्दिर हैं। इनमें से एक लिंगराज का मन्दिर है, जिसका निर्माण 'गंगा' शासकों ने करवाया। इसी तरह 'मुक्तेश्वर' का मन्दिर भुवनेश्वर में तथा 'जगन्नाथ' का मन्दिर पुरी में है।
- कार्ले में अवस्थित 'चैत्य' पत्थरों को तराशकर बनाये जाने वाले स्थापत्य कला का असाधारण उदाहरण है इस चैत्य में एक बहुत बड़ा सभाकक्ष है तथा इसकी दीवारें नक्काशीयुक्त व चमकदार हैं।
- ऐलोरा का 'कैलाश मन्दिर' तथा महाबलीपुरम् का 'रथ मन्दिर' पत्थरों को तराशकर बनाए जाने वाले मन्दिरों के दूसरे उदाहरण हैं।
- 'कैलाश मन्दिर' का निर्माण राष्ट्रकूटों ने तथा 'रथ मन्दिर' का निर्माण पल्लवों ने करवाया।
- मथुरा शैली की आकृतियाँ धब्बेदार लाल पत्थर से बनाई गई थीं। उनमें आध्यत्मिकता झलकती थी। यहाँ हमें बुद्ध मूर्तियों के साथ जैन देवों की भी मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं।
- आन्ध्र के सातवाहन शासकों के संरक्षण में अमरावती स्कूल विकसित हुआ।
- गोदावरी के निचले भाग में एक विशाल स्तूप का निर्माण किया गया था। इस स्तूप के गोलाकार खण्डों तथा दीवारों पर बहुत ही खूबसूरत नक्काशी की गई है।
- नागार्जुनकोंडा भी बौद्धों के स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध अन्य प्रमुख नगर है।
- उत्तर और पूर्वी भारत में भी सुन्दर, आकर्षक मन्दिरों का निर्माण किया गया। इन मन्दिरों का निर्माण नागर-शैली में किया गया है। इनमें से अधिकांश मन्दिरों के छत सर्पिल होते हैं, जिन्हें 'शिखर' कहा जाता है; मन्दिरों की वेदी को 'गर्भ-गृह' कहा जाता है और खम्भों की सहायता से बनाया गया 'सभाकक्ष' या मण्डप' कहलाता है।

I. गुफायें (Caves)

- गुफायें वास्तुकला का विशिष्ट उदाहरण हैं बिहार के बराबर पहाड़ियों में लोमस ऋषि गुफा जिसका सर्वाधिक काल निर्धारण भी किया गया है।
- अजन्ता और एलोरा की गुफायें औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में स्थित हैं। अजन्ता पूर्ण रूप से बौद्ध धर्म को समर्पित गुफा है, जिसका निर्माण करीब 200 ईसा पूर्व से 650 ईसवी के मध्य हुआ। इसकी 29 गुफाओं में चार चैत्य सभाकक्ष हैं।
- ऐलोरा की गुफायें अनोखी मानी जाती हैं, क्योंकि यहाँ एक ही स्थान पर बौद्ध (12), जैन (4) ब्राह्मण (16) धर्म से सम्बन्धित गुफायें स्थित हैं।

II. प्रसिद्ध मन्दिर (Famous Temples)

(i) श्री रंगनाथ स्वामी मन्दिर (Sri Rangnath Swami Temple)—यह हिन्दू देवता विष्णु के अवतार के रूप में रंगनाथ को समर्पित एक हिन्दू मन्दिर है। यह मन्दिर तमिलनाडु में तिरुचिरापल्ली के श्रीरंगम् में स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा मन्दिर है और विश्व में सबसे बड़े धार्मिक सूमहों वाले मन्दिरों में से एक है।

(ii) जैन मन्दिर (Jain Temple)—जैन मन्दिर मुख्यतः राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू में स्थित दिलवाड़ा के मन्दिर से सम्बन्धित है। इन जैन मन्दिरों का निर्माण 11वीं और 13वीं शताब्दी के मध्य जैन धर्मावलम्बी वास्तुकार–तेजपाल द्वारा कराया गया था। ये मन्दिर संगमरमर के रमणीय प्रयोग के कारण पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

(iii) सूर्य मन्दिर (Sun Temple)—सूर्य मन्दिर ओडिशा के कोणार्क में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण 1255 ई. में पूर्वी गंग राजवंश के शासक नरसिम्हदेव प्रथम द्वारा कराया गया था। यूनेस्को विश्व विरासत स्थल के रूप में सूचीबद्ध इस मन्दिर कॉम्पप्लेक्स का निर्माण विशालकाय रथ के रूप में किया गया है। इसके पहियों, स्तम्भों और दीवारों को पत्थरों को काटकर बनाया गया है। सूर्य मन्दिर को 'ब्लैक पेगोडा' भी कहा जाता है।

(iv) शिव मन्दिर (Shiva Temple)—शिव मन्दिर मध्य प्रदेश के सतना जिले के भूमरा में स्थित है। वर्तमान में यह जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। मन्दिर के प्रवेश द्वार स्तम्भ के बाईं ओर मकर वाहिनी गंगा तथा कछुआ वाहिनी यमुना की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

मन्दिर के गर्भ गृह में शिवलिंग स्थापित है। मन्दिर के प्रस्तरों पर कमल, कीर्तिमुख तथा विभिन्न वाद्यों की आकृतियाँ अंकित हैं।

(v) **विष्णु मन्दिर (Vishnu Temple)**–विष्णु मन्दिर मध्य प्रदेश के सागर जिले के ऐरण में स्थित है। यह मन्दिर अब ध्वस्त हो चुका है। गर्भ गृह का द्वार तथा उसके समक्ष स्थित दो स्तम्भ शेष हैं।

(vi) **बोधगया मन्दिर (Bodhgaya Tample)**–5वीं शताब्दी में बोधगया के मन्दिर का भी उल्लेख किया जाता है। इसके गर्भ गृह में बुद्ध की विशाल प्रतिमा भूमि स्पर्श मुद्रा में आसीन है। मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है।

(vii) **पल्लवकालीन मन्दिर (Pallava Temple)**–दक्षिण में भक्ति लहर के परिणामस्वरूप मन्दिर वास्तुकला का विस्तार हुआ। पल्लव नरेशों का शासनकाल, कला एवं साहित्य की उन्नति के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यह पल्लव ही थे जिन्होंने द्रविड़ शैली के नाम से विख्यात दक्षिण भारतीय मन्दिर वास्तुकला की आधार शिला रखी थी।

(viii) **हनुमान मन्दिर (Hanuman Temple)**–मेहंदीपुर बालाजी मन्दिर–प्रेत–भूत बाधा दूर करने का सबसे प्रसिद्ध और विश्वसनीय स्थान है, भारत में 16 प्रसिद्ध हनुमान मन्दिर हैं।

(ix) **चालुक्यकालीन मन्दिर (Chalukya Temple)**–इस काल में गुजरात के अन्हिलवाड़ तथा राजस्थान के आबू पर्वत पर मन्दिर निर्मित किये गये हैं। ये मुख्य रूप से जैन मन्दिर से सम्बन्धित हैं।

(x) **चन्देलकालीन मन्दिर (Chandel Temple)**–मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के समीप खजुराहो में चन्देल शासकों ने अनेक भव्य मन्दिर निर्मित करवाये थे।

(xi) **लक्ष्मणमन्दिर (Laxman Temple)**–छत्तीसगढ़ के सिरपुर नामक स्थान पर ईंटों से निर्मित मन्दिर अवशिष्ट रूप में मिला है। इसका वास्तु भीतरगाँव मन्दिर के समान है।

(xii) **पाल मन्दिर (Pal Temple)**–बंगाल के पालवंशी नरेश उत्साही इस मन्दिर के निर्माता थे, इन्होंने नालन्दा, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी, सोमपुरी में बौद्ध विहार व मठ निर्मित करवाये।

बृहदेश्वर मंदिर

- **भगवान शिव** को समर्पित बृहदेश्वर मन्दिर, तमिलनाडु के तंजावुर में **कावेरी नदी** के दक्षिणी तट पर स्थित है।
- इसे **पेरिया कोविल, राजराजेश्वर मन्दिर और राजराजेश्वरम्** के नाम से भी जाना जाता है।
- इस मन्दिर का निर्माण 1003 ई. से 1010 ई. के मध्य महान् चोल सम्राट **राजराजा प्रथम** द्वारा करवाया गया था। यह द्रविड़ स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- यह मन्दिर **यूनेस्को (UNESCO) की विश्व विरासत स्थल** सूची सूचीबद्ध है।

III. चोल स्थापत्यकला

- चोल शासनकाल के तहत **कला एवं स्थापत्यकला की द्रविड़ शैली** अपनी पराकाष्ठा पर थी। चोल शासकों ने **पल्लव स्थापत्यकला** शैली का अनुसरण किया था। चोलकालीन मन्दिरों के गर्भगृह वृत्ताकार एवं वर्गाकार दोनों प्रकार के थे।
- राजेन्द्र प्रथम द्वारा निर्मित गंगैकोण्डचोलपुरम् का शिव मन्दिर; पुडुकोट्टई जिले के नार्त्तामलाई में स्थित चोलेश्वर मन्दिर एवं कोडुम्बलुर के मन्दिर; तिरुचिरापल्ली के श्रीनिवासनल्लूर स्थित कोरंगनाथ मन्दिर आदि। इस शैली के प्रमुख मन्दिर हैं।
- गोपुरम के शीर्ष पर गुम्बदाकार शिखर और कलश **निर्मित किए जाते थे। चोल मन्दिर प्रस्तर प्रतिमाओं एवं अलंकरण हेतु विख्यात हैं।**

IV. हस्तशिल्प

- भारतीय संस्कृति के कलात्मक पक्षों में हस्तशिल्प का विशिष्ट स्थान है उपयोगी वस्तुओं को कलात्मक ढंग से सजाने एवं सँवारने में भारतीय हड़प्पा काल से ही पारंगत थे।
- हस्तशिल्प ऐसे कलात्मक कार्य को कहते हैं, जो उपयोगी होने के साथ–साथ सजावट के काम भी आता है।
- सैन्धव सभ्यता के लोग कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त शिल्प तथा उद्योग–धन्धों में भी रुचि लेते थे।
- हड़प्पाकालीन सर्वाधिक लोकप्रिय धातु काँस्य थी। धात्विक शिल्पकला का ताँबे व काँसे के बर्तनों में सुस्पष्ट प्रमाण मिलता है।
- मौर्यकाल में शिल्पकारों तथा व्यवसायियों के विशिष्ट प्रकार के संगठन श्रेणियों की उपस्थिति थी। इस युग के शिल्प उत्पादों में मिट्टी के बने हुए सुन्दर सुसज्जित पात्र व बर्तन जो उत्तरी काले चित्रित मृद्भांड के रूप में जाने जाते हैं।
- गुप्तोत्तर काल में हस्तशिल्प उन्नत अवस्था में था, हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आये ह्वेनसांग ने अनेक प्रकार के रेशमी व सूती वस्त्रों का उल्लेख किया–जैसे–कौषेय तथा क्षौम।
- सल्तनत काल में सूत कातने के यन्त्रों, बुनाई के यन्त्रों के आगमन से इस युग में वस्त्र उत्पादन में भारी वृद्धि हुई।
- मुगलकाल में वस्त्र उद्योग पहले की ही तरह बड़ा उद्योग बन रहा है।

IV. प्रान्तीय स्थापत्य शैलियाँ

(i) **मालवा**– मालवा में स्थापत्य की एक विशिष्ट शैली विकसित हुई, इस शैली में नुकीले मेहराब, ढालदार दीवारें, गुम्बद की छत का प्रयोग किया गया। ऊँची चौकियों पर इमारतों का निर्माण तथा सीढ़ियों की साज–सज्जा में रंगों का बहुलता से प्रयोग भी मालवा शैली की विशेषता है।

(ii) **गुजरात**– इस शैली में पत्थर की कटाई का कार्य बड़ी कुशलता से किया जाता है। इस शैली का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण अहमदाबाद की जामा मस्जिद है, जिसका निर्माण **अहमदशाह** ने 1423 ई. में करवाया था।

(iii) **कश्मीर**– इस शैली की प्रमुख विशेषता यह है कि लकड़ी का बहुतायत में प्रयोग। प्रान्तीय शैलियों की तरह यहाँ भी मिश्रित हिन्दू–इस्लामी शैली विकसित हुई। सिकन्दर शाह ने श्रीनगर में मन्दानी के मकबरे का निर्माण करवाया था।

(iv) जौनपुर– जौनपुर की इमारतें प्रायः भारी-भरकम हैं, इनमें मीनारें नहीं हैं। आटाला मस्जिद, जिसका निर्माण 1408 ई. में इब्राहिमशाह शर्की ने कन्नौज के राजा विजयचन्द्र द्वारा निर्मित आटाला देवी मन्दिर को तोड़कर करवाया था।

(v) बंगाल– पाण्डुआ की अदीना मस्जिद, गौड़ की सोना मस्जिद तथा कदम रसूल मस्जिद आदि इमारतों में बंगाल स्थापत्य के विशिष्ट लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

प्रमुख गुफाएँ

गुफाएँ	शासनकाल
सुदामा गुफा (प्राचीनतम गुफा)	अशोककालीन
नागार्जुनी गुफाएँ (गया, बिहार)	अशोक/दशरथ
लोमश ऋषि की गुफा	मौर्यकालीन
खण्डगिरि गुफा (भुवनेश्वर, ओडिशा)	शुंगकालीन/खारवेल
हाथी गुफा, मंचागिरि गुफा	शुंगकालीन/खारवेल
भाजा विहार (भोरघाट, महाराष्ट्र)	सातवाहनवंशीय
उदयगिरि (विदिशा, मध्य प्रदेश)	गुप्तकालीन
कार्ले (भोरघाट, महाराष्ट्र)	सातवाहनवंशीय
कन्हेरी (मुम्बई)	सातवाहनवंशीय
अजन्ता (महाराष्ट्र)	बौद्धकालीन
ऐलोरा (औरंगाबाद)	बौद्धकालीन
एलीफेंटा (मुम्बई)	बौद्धकालीन
भीमबेटका (मध्य प्रदेश)	–

प्राचीन स्तूप

स्तूप	शासनकाल
पिपरहवा (कपिलवस्तु)	प्राग्मौर्यकालीन
सांची स्तूप (भोपाल के निकट विदिशा में	मौर्यकालीन
भरहुत स्तूप (सतना, म. प्र.)	शुंगकालीन
बोधगया के स्तूप (बिहार)	उत्तर मौर्ययुगकालीन
अमरावती का स्तूप (गुन्टूर, आन्ध्र प्रदेश)	ई. पू. द्वितीय
नागार्जुन कोण्डा स्तूप (गुन्टूर, अमरावती से 95 किमी.)	इक्ष्वाकुवंशीय शासकों के समय
खोस्ता स्तूप (जलालाबाद, अफगानिस्तान)	ई. पू. 50 (कनिष्क कालीन)
मणिक्थाला स्तूप	कनिष्ककालीन
भल्लड़ स्तूप (तक्षशिला)	गुप्तकालीन
मीरपुर स्तूप (सिन्ध)	गुप्तकालीन
सारनाथ का धमेक स्तूप (वाराणसी)	अशोककालीन
नालन्दा स्तूप	प्राग गुप्तकालीन
जग्गयमपेट्ट स्तूप (आंध्र प्रदेश में पल्लेरु नदी के तट पर)	इक्ष्वाकु/पल्लव वंश कालीन
चौखंडी स्तूप (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)	अशोककालीन
बैराठ स्तूप (राजस्थान)	मौर्यकालीन
देवनीमोरी स्तूप (गुजरात)	गुर्जर–प्रतिहार वंश
भट्टीप्रोलु स्तूप (आंध्र प्रदेश)	मौर्य कालीन

भारत में विश्वदाय स्थापत्य/इमारत
(वैश्विक धरोहर तथा घोषित वर्ष)
(World Heritage Monuments in India)

सन्	विश्व धरोहर
1983	आगरा का किला (उत्तर प्रदेश)
1983	ताजमहल (आगरा, उत्तर प्रदेश)
1984	सूर्य मंदिर कोणार्क (ओडिशा)
1985	महाबलिपुरम् मंदिर (तमिलनाडु)
1985	काजीरंगा नेशनल पार्क (असम)
1985	मानस वाइल्डलाइफ सेंचुरी (असम)
1985	केवलादेव राष्ट्रीय, उद्यान (भरतपुर, राजस्थान)
1986	गोवा के गिरजाघर (गोवा)
1986	खजुराहो के मंदिर (मध्य प्रदेश)
1986	हम्पी के मंदिर (कर्नाटक)
1986	फतेहपुर सीकरी (उत्तर प्रदेश)
1987	पट्टडकल के मंदिर (कर्नाटक)
1987	सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान (प. बंगाल)
1988	नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान (उत्तराखण्ड)
1989	सांची स्तूप (मध्य प्रदेश)
1993	हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली)
1993	कुतुबमीनार (दिल्ली)
1999	दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (प. बंगाल)
2002	बोधगया में स्थित महाबोधि मंदिर (बिहार)
2003	भीमबेटका की गुफायें (मध्य प्रदेश)
2004	चंपानेर–पावागढ़ आर्कियोलॉजी पार्क (गुजरात)
2004	गंगईकोण्डा चोलापुरम् का वृहदेश्वर मंदिर (तमिलनाडु)
2004	ऐरावतेश्वर मंदिर (द्वारासुरम्)
2004	छत्रपति शिवाजी टर्मिनल (पूर्व नाम विक्टोरिया टर्मिनस) (महाराष्ट्र)
2005	फूलों की घाटी (उत्तराखंड)

सन्	विश्व धरोहर
2007	लाल किला (दिल्ली)
2008	कालका–शिमला रेलवे (हिमाचल प्रदेश)
2010	जन्तर-मन्तर (जयपुर)
2012	पश्चिमी घाट (पश्चिम एवं दक्षिण भारत)
2013	गुजरात का प्राचीन सीढ़ीदार कुआँ (बावड़ी), हिमाचल प्रदेश का ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क
2016	बिहार का नालंदा
2016	सिक्किम का कंचनजंगा नेशनल पार्क
2016	चंडीगढ़ का द आर्किटेक्चरल वर्क ऑफ ली कॉरबुसियर

3. भारतीय नृत्य (Indian Dance)

I. शास्त्रीय नृत्य (Classical Dance)

- भारत में प्राचीनकाल से एक समृद्ध और प्राचीन परम्परा रही है। विभिन्न कालों की खुदाई, शिलालेखों, ऐतिहासिक वर्णन, राजाओं का वंश परम्परा तथा कलाकारों, साहित्यिक स्रोतों, मूर्तिकला और चित्रकला से व्यापक प्रमाण उपलब्ध होते हैं।
- नृत्य का एक ज्यादा संयोजित इतिहास महाकाव्यों, अनेक पुराण, कवित्व साहित्य तथा नाटकों का समृद्ध कोष, जो संस्कृत में काव्य और नाटक के रूप में जाने जाते हैं, से पुनःनिर्मित किया जा सकता है।
- भरतमुनि का नाट्य–शास्त्र शास्त्रीय नृत्य पर प्राचीन ग्रन्थ के रूप में उपलब्ध है, जो नाटक, नृत्य और संगीत की कला की स्रोत पुस्तक है।
- ऋग्वेद में नृति तथा नृतु का उल्लेख है।
- जैमिनी तथा कौशीतकी ब्राह्मण ग्रंथों में नृत्य और संगीत का एक साथ उल्लेख किया गया है।

II. शास्त्रीय नृत्य की शैलियाँ (Forms of Classical Dance)

इतिहास के विभिन्न स्रोतों के आधार पर भारतीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा भारतीय शास्त्रीय नृत्य की प्रमुख 8 शैलियाँ बताई गई हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है–

(i) भरतनाट्यम नृत्य (Bharatnatyam Dance)

- भरतनाट्यम नृत्य को एकहार्य के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ नर्तकी एकल प्रस्तुति में अनेक भूमिकाएँ करती है, यह कहा जाता है कि 19वीं सदी के आरम्भ में, राजा सरफोजी के संरक्षण के तहत तंजौर के प्रसिद्ध चार भाइयों ने भरतनाट्यम के उस रंगपटल का निर्माण किया था।
- यह नृत्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से संबंधित है।
- इसका विकास विशेष रूप से तमिलनाडु के मद्रास एवं तंजौर में हुआ।
- इस नृत्य में तीन घराने तंजौर, काँजीपुरम व पण्डनलून प्रचलित हैं।

(ii) कथकली नृत्य (Kathakali Dance)

- कथकली एक प्रचलित नृत्य है जो केरल के कई परम्परागत नृत्य तथा नृत्य–नाटक शैलियों में से एक है। एक दन्त कथा के अनुसार जब कालीकट के जमोरिन ने अपने कृष्णानाट्टम् कार्यक्रम करने वाले समूह को त्रावनकोर भेजने से मना कर दिया, तो कोट्टाराबन्कारा का राजा इतना क्रुद्ध हो गया कि उसे रामानाट्टम की रचना करने की प्रेरणा हो आई।
- कथकली नृत्य का संगीत केरल के परम्परागत सोपान संगीत का अनुसरण करता है। सोपान संगीत के अन्तर्गत मन्दिर के मुख्य गर्भ गृह (मुख्य कक्ष) की ओर जाने वाली सीढ़ियों की पंक्तियों पर आधारित है।
- कथकली एक दृश्यात्मक कला है, जहाँ पात्र के अनुसार अहार्य, वेशभूषा और श्रृंगार नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों पर आधारित होता है। पात्रों को कुछ स्पष्ट रूप से परिभाषित प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है; जैसे–पच्चा, कुत्ती, ताढ़ी, करि या मिनुवन्क्।
- कथकली नृत्य का प्रदर्शन केलिकोट्ट से आरम्भ होता है, जिसके द्वारा दर्शकों को आकर्षित किया जाता है। इसके बाद तोडयम् होता है। यह धार्मिक नृत्य होता है। जिसमें दो या एक कलाकार भगवान के आशीर्वचनों को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

(iii) मणिपुरी नृत्य (Manipuri Dance)

- मणिपुरी नृत्य भारत के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित राज्य मणिपुर में उत्पन्न हुआ। यह भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की विभिन्न शैलियों में से प्रमुख नृत्य है।
- मणिपुरी नृत्य का एक विस्तृत रंगपटल होता है, तथापि रास, संकीर्तन और थंग–ता इसके बहुत प्रसिद्ध रूप हैं। यहाँ पाँच मुख्य रास नृत्य हैं, जिनमें से चार का सम्बन्ध विशिष्ट ऋतुओं से है। जबकि पाँचवें साल में किसी समय प्रस्तुत किया जा सकता है। मणिपुर रास में राधा, कृष्ण और गोपियाँ मुख्य पात्र होते हैं।

(iv) कुचीपुड़ी नृत्य (Kuchipudi Dance)

- कुचीपुड़ी आंध्र प्रदेश का एक परंपरागत शास्त्रीय नृत्य है।
- यह नृत्य मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- यह नृत्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों का पालन करता है।
- कुचीपुड़ी नृत्य–प्रस्तुति को तरंगम् प्रस्तुति के पश्चात् समाप्त किया जाता है इस प्रस्तुति के साथ कृष्ण–लीला–तरंगिणी के उद्धरण गाये जाते हैं।
- नर्तक कलाकार शकट–वदनम् पाद मुद्रा में पीतल की थाली पर पावों को रखकर खड़ा रहता है और अत्यन्त कुशलतापूर्वक लयात्मक रूप से थाली को घुमाता है।

(v) मोहनी अट्टम (Mohini Attam)

- केरल की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला अर्द्धशास्त्रीय नृत्य है। मोहिनी अट्टम की शाब्दिक व्याख्या "मोहिनी" के नृत्य के रूप में की जाती है।
- मोहिनी अट्टम का उल्लेख मज्हमंगलम नारायण नम्बुतिरि द्वारा 1709 में लिखित "व्यवहारमाला" पाठों और बाद में महान् कवि कुंजन नम्बियार द्वारा लिखित "घोषयात्रा" में पाया जाता है।
- मोहिनी अट्टम केरल के मन्दिरों में प्रमुखतः किया जाता था। यह देवदासी नृत्य विरासत का उत्तराधिकारी भी माना जाता है।

(vi) ओडिसी नृत्य (Odishi Dance)

- यह नृत्यशैली ओडिशा में दूसरी शताब्दी ई. पू. से ही प्रचलित रही है।
- इस नृत्य शैली का मुख्य भाव आराधना एवं समर्पण है।
- इस नृत्य में अंग संचालन, नेत्र संचालन, हस्त मुद्राओं एवं पद संचालन पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है।
- 12वीं शताब्दी के बाद इस नृत्य शैली पर वैष्णव धर्म का स्पष्ट प्रभाव दिखता है।

(vii) कथक नृत्य (Kathak Dance)

- हिन्दू परम्परा के इस शास्त्रीय नृत्य को मुस्लिम शासकों ने भी भरपूर संरक्षण प्रदान किया।
- उत्तर भारत के इस नृत्य कथक का अभिप्राय है–'कथा कहना'। इसलिए इस नृत्य में कलाकार भाव-भंगिमाओं तथा अगों की विभिन्न मुद्राओं से किसी कथा की अभिव्यक्ति करता है।
- इस शास्त्रीय नृत्य की दो नृत्य शैलियाँ हैं–जयपुर शैली तथा लखनऊ शैली।
- पहली शैली पर राजपूतों तथा दूसरी शैली पर मुगल संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

भारत के प्रमुख लोक नृत्य : एक दृष्टि में
(India's Folk Dance : at a Glance)

राज्य	प्रमुख लोक नृत्य
असम	कली गोपाल,खेल गोपाल, बिहू, किलगोया, अंकियानाट, बिछुआ, राखल, लीला, बगुरुम्बा, नटपूजा, होटलानाई बोर्ड लाजू तबला, तबल चोंगली चौंगवी नागानृत्य, झुमुरा, होब्जानाई, सत्तारिया।
नगालैण्ड	रेगमा, चांग नीगकीम, चिंता कजरम, युद्ध नृत्य, खैवा लिंम, नूरालिप, कुर्सी नागा, चुमिके, दोहाई।
मणिपुर	चोंग, महारास, नटराज, लाई हरोबा, संखाल, वसंत रास, थाग्टा, पुरवालोग कीतत्वम्।
मिजोरम	चेरोकान पारखुपिला।
मेघालय	बागला, लाहो।
मध्य प्रदेश	रीना, चौत, दिवारी, नवरानी, गोन्यो, सूआ, भगोरिया, करमा, पाली, डागला, छेरिया, हूल्को, मंदिरी, सैला, बिल्धा टपाडी, गोडा।
महाराष्ट्र	मोनी, बोहदा, लेजम, लावनी, दहिकला, तमाशा, गणेश चतुर्थी, कोली, गफा, ललिता, मौरीधा, गौरीचा, पोवाड़ा, आदि।
बिहार	वैगा, जदूर, जाया, जट–जाटिन, माधी, मूका, लुझरी, विदायत, कीर्तनिया, पँवरिया, सामाचकेबा, जातरा, डाँगा, झीका, सोहाराई, माघा, बखो–बखावन, विदेसिया।
प. बंगाल	राम भेसे, गम्भीरा, जाया, बाउल, जात्रा, कीर्तन, काठी, महाल, गम्भीरा, रायवेश, ढाली, मरसिया।
ओडिशा	छऊ, पैका, सवारी संचार, डंडानाट, कुलनी, पुगनाट, घूमरा, जदूर, मुदारी, गरुढ़ वाहन, ओडिशी।
उत्तर प्रदेश	रास लीला, नौटंकी, थाली, जांगर, चापरी, करन, कजरी, दीवाली।
उत्तराखण्ड	कुमायूँ झूला, झोरा, चपादी, गढ़वाली, कजरी, रासलीला।
आन्ध्र प्रदेश	मरदाला, कुम्भी, घंटा मर्दाला, छड़ी नृत्य, बात कम्भा, वीथी, माधुरी, ओट्टन तुल्लू, कालीयहया, कुडीयट्टम, कैकोट्टीकलि,भद्रकलि, टप्पातिकाली, कुचिपुड़ी।
कर्नाटक	यक्षगान, कुनीता, वीरगारर्स, भूतकोला, कर्गा।
गुजरात	गणपति भजन, रासलीला, डांडिया रास, गरबा, पणिहारी नृत्य, लास्य, टिप्पनी, अकोलिया भवई।
गोवा	दकनी, खोल झगोर, मांडी।
राजस्थान	कठपुतली, धापाल, जिन्दाग घूगर, सुइसिनी, बगरिया, ख्याल, शकरिया, गोयिका, लीला, झूलन लीला कामड़, चरी, चंग, फूंदी, गीदड़, गैर पणिहारी, पणिहारी, गणगौर, तेरहताली,
जम्मू कश्मीर	राउफ, भदजास, हिकात, कूद दण्डीबाच, दमाली।
लक्षद्वीप	परिचाकाली।
अरुणाचल प्रदेश	मुखौटा, युद्धनृत्य।
हरियाणा	भांगड़ा, डफ, सॉग, धमान।
पंजाब	भांगड़ा, गिद्धा, कीकली।
तमिलनाडु	कुम्भी, कावड़ी, कड़ागम, कोलाट्टम पित्रल, कोआट्टमा, भरतनाट्यम, जल्लीकट्टू।
हिमाचल प्रदेश	सांगला, चम्बा, डाँगी, डंडा नाव, डफ, धमान, थाली, जद्धा छरवा, महाथू, छपेली।
झारखण्ड	करमा, सरहुल, छऊ, जट, जटिन, डांगा, विदेशिया, सोहराई।

नृत्य के रस—रस का शाब्दिक अर्थ 'स्वाद' या 'महक' से है। यह आनन्दातिरेक या मनोदशा है, जिसका अनुभव दर्शक किसी नृत्य (अभिनय) प्रदर्शन को देखकर करता है। नृत्य में नौ रस हैं—

1. करुण रस 2. भय रस 3. वीर रस
4. जुगुत्सा रस 5. विस्मय रस 6. शान्त रस
7. श्रृंगार रस 8. हास्य रस 9. क्रोध रस

- इन रसों के संगत भाव हैं। प्रेम, हास्य, दुःख, क्रोध, ऊर्जा, भय, निराशा, आश्चर्य एवं शान्ति।

(viii) ताण्डव नृत्य (Tandav Dance)

- ताण्डव नृत्य भगवान शंकर द्वारा किया जाने वाला अलौकिक नृत्य है, कहते हैं—इस नृत्य के अन्दर भगवान की शक्तियाँ त्राहि मचाती हैं। इस नृत्य को सृष्टि की रचना, पालन-पोषण तथा शान्ति का प्रतीक माना जाता है।
- शंकरजी के नृत्य के दो रूप हैं—(i) कोमल रूप, (ii) विनाश का प्रतीक।
- इस नृत्य के अन्तर्गत जहाँ रुद्र ताण्डव शिव जी को हिंसक रूप में या संहारक रूप में दर्शाता है।
- शास्त्रों में प्रमुखता से भगवान शिव को ही ताण्डव स्वरूप का प्रवर्तक बताया गया है, परन्तु अन्य आगम तथा काव्य ग्रन्थों में दुर्गा, गणेश, भैरव, श्रीराम आदि के ताण्डव का भी वर्णन मिलता है।
- इसमें दो प्रकार के भाव हैं एक ताण्डव, जो शिव के रौद्र पौरुष, दूसरा लास्य, जो शिव की पत्नी पार्वती के लयात्मक लावण्य का प्रतिनिधित्व करता है।
- कथकली केरल में जन्मी ताण्डव भाव की मूकाभिनय नृत्य नाटिका है, जिसमें उच्च शिरोवस्त्र व चेहरे का विस्तृत श्रृंगार किया जाता है।

नृत्य	प्रमुख नृत्यक
भरतनाट्यम	यामिनी कृष्णमूर्ति, अरुण्डेल रुक्मिणीदेवी, मालविका, साररुकई, एस. के. सरोज, लीलाजैक्सन, रामगोपाल, बैजयन्ती माला, कोमला वरदन, पद्य सुब्रमण्यम आदि।
कथक	अच्छन हाराज, लच्छू महाराज, शम्भू महाराज, दमयन्ती जोशी, सितारा देवी, चन्द्रलेखा, शोभना नारायण, गोपीकृष्ण, बिरजू महाराज, सुखदेव महाराज, मालविका सरकार, सुखदेव महाराज आदि।
मोहिनीअट्टम	तारा निडुगाड़ी, हेमामालिनी, भारती शिवाजी, श्रीदेवी, कलादेवी, रागिनी देवी, गीतागायक, के. कल्याणिअम्मा तंकमणि, कनकरेली।
ओडिसी	इन्द्राणि रहमान, कालीचन्द, सोनल मानसिंह, कालीचरण पटनायक, माधवी मुद्गल, सुजाता मिश्र, प्रियंवदा मोहंती, मिनाती दास, संयुकत पाणिग्रही, मायाधर राउत, रंजना डेनियल्स आदि।
कथकली	उदयशंकर, कृष्णन कुट्टी, मृणालिनी साराभाई, आनन्द शिवरामन, शान्ताराव, रामगोपाल, बल्लोल नारायण मेनन, रुक्मिणी देवी।
मणिपुरी	गाम्बिता देवी, झावेरी बहनें, सिंहजीत सिंह, थाम्बल यामा, रीतादेवी, सविता मेहता, कलावती देवी, निर्मला मेहता।
कुचीपुड़ी	चिन्ताकृष्णमूर्ति, स्वप्नसुन्दरी, राजारेड्डी, वेम्प्रति सत्य-नारायणन, यामिनी कृष्णमूर्ति, लक्ष्मीनारायन आदि।

III. प्रमुख लोकप्रिय नृत्य

(i) गरबा नृत्य

- गरबा नृत्य गुजरात का एक लोकप्रिय नृत्य है, जो गीत, नृत्य और नाटक की समृद्ध परम्परा का निरूपण करता है।
- यह मिट्टी के मटके जिसको गरबो कहते हैं, उसमें पानी भरके इसके चारों ओर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
- घेरैया रास एक ऐसा नृत्य है, जिसमें नर्तक/नर्तकी के एक हाथ में छड़ी होती है, और दूसरे हाथ में मोर पंख होते हैं।

(ii) छाऊ नृत्य

- छाऊ या 'छऊ' एक प्रकार की नृत्य नाटिका है, जो पश्चिम बंगाल, बिहार और ओडिशा व झारखण्ड राज्यों में अपने पारम्परिक रूप में देखने को मिलती है।
- इन राज्यों में यह नृत्य वार्षिक सूर्य पूजा के अवसर पर किया जाता है।
- बंगाल में पुरुलिया, ओडिशा में मयूरभंज तथा झारखण्ड में इसे सरईकेला के नाम से जाना जाता है। इसमें युद्ध तथा नृत्य कौशल दोनों का समावेश होता है।
- रामायण और महाभारत तथा पुराणों में वर्णित अलग—अलग घटनाओं को आधार बनाकर यह नृत्य किया जाता है।

(iii) बिहू नृत्य

- बिहू असोम का सबसे ज्यादा प्रचलित लोकनृत्य है।
- यह युवा लड़के व लड़कियों द्वारा खुले मैदान में किया जाता है, और पूरा गाँव नृत्य में हिस्सा लेता है।
- 'तवल—चोंगली' असोम राज्य का प्रसिद्ध लोकनृत्य है, इसके अतिरिक्त अन्य असमिया लोकनृत्य हैं—बिछुआ, नातपुझा, महारास, बागुअम्बा नाग नृत्य, खेल गोपाल, झुमरा आदि।
- बिहू नृत्य करते समय पारम्परिक वेशभूषा जैसे धोती, गमछा और चादर व मेखला पहनना अनिवार्य होता है।

(iv) नौटंकी नृत्य

- नौटंकी नृत्य को छन्द, दोहा, हरी गीतिका, कव्वाली, गजल आदि के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसमें गायन, अभिनय, नृत्य आदि कई सारी विधायें शामिल रहती हैं।
- उत्तर प्रदेश में किया जाने वाला नृत्य नौटंकी प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध है। नौटंकी में बहुत से रस शामिल रहते हैं। जैसे—वीर रस, हास्य रस आदि।

(v) गणगौर नृत्य

- यह नृत्य मध्य प्रदेश के निमाड़ अंचल का प्रमुख नृत्य है।
- इस नृत्य में नर्तकियाँ एक–दूसरे का हाथ पकड़े वृत्ताकार घेरे में गौरी माँ से अपने पति की दीर्घायु की प्रार्थना करती हुई नृत्य करती हैं।
- इस नृत्य में गीतों का विषय शिव–पार्वती, ब्रह्मा, सावित्री, विष्णु, लक्ष्मी की प्रशंसा से भरा होता है।

(vi) तमाशा/लावणी नृत्य

(A) तमाशा—यह महाराष्ट्र में किया जाने वाला नाटिका नृत्य है। ज्यादातर लोक नाटिका में पुरुष ही मुख्य भूमिका निभाते हैं, लेकिन तमाशा में मुख्य भूमिका महिलाएँ ही निभाती हैं। इसमें हार्मोनियम, घुँघरू, मंजीरा आदि यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। तमाशा का प्रस्तुतीकरण प्रायः कोल्हाटी समुदाय के द्वारा किया जाता है।

(B) लावणी—लावणी महाराष्ट्र का सबसे अधिक लोकप्रिय नृत्य है। लावणी नृत्य की लोकप्रियता का अन्दाज इस बात से लगाया जा सकता है कि लावणी नृत्य का प्रयोग फिल्मों में भी किया जाता है। यह नृत्य विशेष पारम्परिक परिधान में किया जाता है, जिसमें नृत्यांगना 9 मीटर की साड़ी पहनती है। लावणी नृत्य में आध्यात्म एवं शृंगार दोनों ही भावों का मेल होता है।

(vii) भाँगड़ा नृत्य

- भाँगड़ा एक जीवन्त लोकनृत्य है, जो पंजाब में प्रचलित उत्सवों, त्योहारों या फसलों के पक जाने पर वाद्य–यन्त्रों एवं गायन के साथ पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- पिछले 30 वर्षों के दौरान भाँगड़ा की लोकप्रियता विश्व भर में वृद्धि हुई है। पंजाब में महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य गिद्धा कहलाता है।

(viii) घुरई नृत्य

- यह नृत्य चम्बा क्षेत्र में किया जाता है तथा हिमाचल प्रदेश के कुल्लू, सिरमौर व शिमला में नारी नृत्य किया जाता है।
- घुरई नृत्य का अर्थ है—गोल-गोल घूमना, इस नृत्य में स्त्रियाँ गले में कण्ठहार, पैरों में पायल, नाक में बेसर, कानों में कर्णफूल धारण करती हैं।
- इस नृत्य में ऐतिहासिक घटना का वर्णन होता है। यह पारम्परिक लोक मान्यताओं पर आधारित है।

(ix) पन्थी नृत्य

छत्तीसगढ़ के महान सन्त गुरु घासीदास के पन्थ से ही पन्थी नृत्य का नामकरण हुआ है। मुख्यतः निर्गुण भक्ति पर आधारित यह लोक नृत्य छत्तीसगढ़ के सतनामी समुदाय के द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में नर्तक झांझ एवं मृदंग की ध्वनि पर सफेद धोती पहन कर नृत्य करते हैं। इस नृत्य के दौरान अचम्भित करने वाले कारनामे भी दिखाए जाते हैं। यह नृत्य आध्यात्मिक भावनाओं पर आधारित होता है।

4. भारतीय संगीत
(Indian Music)

- संगीत प्रकृति की एक अद्‌भुत देन है। संगीत आनन्द की प्राप्ति का एक प्राकृतिक साधन है।
- संगीत में गन्धर्व तत्त्व में केवल सप्तक ध्वनि, रचना ध्वनि का रूप तथा लय आदि जैसे विषयों का गहन अध्ययन किया जाता है।
- व्यक्ति द्वारा इसके अन्तर्गत अनेक प्रकार की संगीत शैलियाँ, जैविक ध्वनिशास्त्र तथा सांस्कृतिक प्रतिमा–विज्ञान आदि विषयों का भी सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है।

विभिन्न राज्यों के संगीत (Musics of Different States)

- **पंखिड़ा**

  यह गीत खेतों में काम करते समय राजस्थान के काश्तकारों द्वारा गाया जाता है। काश्तकार 'अलगोजा' और 'मंजीरा' बजाकर गाते और बात करते हैं। 'पंखिड़ा' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'प्रेम' है।
- **लोटिया**

  'लोटिया'—त्योहार के दौरान चैत्र मास में गाया जाता है। स्त्रियाँ, तालाबों और कुओं से पानी से भरे' लोटे (पानी भरने का एक बर्तन) और कलश (पूजा के दौरान पानी भरने के लिए शुभ समझा जाने वाला एक बर्तन) लाती हैं। वे उन्हें फूलों से सजाती हैं और घर आती हैं।
- **पंडवानी**

  पंडवानी में, महाभारत से एक या दो घटनाओं को चुन कर कथा के रूप में निष्पादित किया जाता है। मुख्य गायक पूरे निष्पादन के दौरान सतत् रूप से बैठा रहता है और सशक्त गायन व सांस्कृतिक भंगिमाओं के साथ एक के बाद एक सभी चरित्रों की भाव भंगिमाओं का अभिनय करता है।
- **शकुनाखार, मंगलगीत**

  हिमालय की पहाड़ियों में शुभ अवसरों पर असंख्य गीत गाए जाते हैं। शकुनाखार, शिशु स्नान, बाल जन्म, छठी (बच्चे के जन्म से छठे दिन किया जाने वाला एक संस्कार), गणेश पूजा आदि के धार्मिक समारोहों के दौरान गाया जाता है। ये गीत केवल महिलाओं द्वारा बिना किसी वाद्य यन्त्र के गाए जाते हैं। प्रत्येक शुभ अवसर पर शकुनाखार में अच्छे स्वास्थ्य और लम्बे जीवन की प्रार्थना की जाती है।
- **बारहमास**

  कुमाऊँ के इस आंचलिक संगीत में वर्ष के बारह महीनों का वर्णन प्रत्येक माह की विशेषताओं के साथ किया जाता है। एक गीत में घूमती चिड़िया चैत मास की शुरूआत का संकेत देती है। एक लड़की अपनी ससुराल में चिड़िया से न बोलने के लिए कहती है, क्योंकि वह अपनी माँ (आईजा) की याद से दुःखी है और दुःख महसूस कर रही है।
- **मन्डोक**

  'मन्डों' गोवाई संगीत की परिशुद्ध रचना एक धीमी लय है और पुर्तगाली शासन के दौरान प्रेम, दुःख और गोवा में सामाजिक अन्याय और राजनीतिक विरोध से सम्बन्धित एक छन्द बद्ध संरचना है।
- **छकरी**

  छकरी एक समूह गीत है जो कश्मीर के लोक संगीत की एक सर्वाधिक लोकप्रिय शैली है। यह नूत (मिट्टी का बर्तन), रबाब, सारंगी और

तुम्बाकनरी (ऊँची गर्दन वाला मिट्टी का एक बर्तन), के साथ गाया जाता है।

- **लमन**

  'लमन' में बालिकाओं का एक समूह, एक छन्द गाता है और लड़कों का एक समूह गीत के जरिए उत्तर देता है। यह घण्टों तक चलता है। यह रुचिकर इसलिए है कि इसमें लड़कियाँ पहाड़ की चोटी पर गाते हुए शायद ही दूसरी चोटी पर गाने वाले लड़कों का मुख देखती हैं। बीच में पहाड़ होता है जहाँ प्रेम गीत गूँजता है। इनमें से अधिकांश गीत विशेष रूप से कुल्लू घाटी में गाए जाते हैं।

- **टप्पा**

  टप्पा, पंजाब क्षेत्र में ऊँटों पर सवारी कर विचरने वालों द्वारा प्रेरित अर्द्ध-शास्त्रीय कठंगीत का स्वरूप है। टप्पा, पंजाबी और प्रश्तो भाषा में रागों में गाया जाता है जिसका सामान्यतः उपयोग अर्द्ध-शास्त्रीय स्वरूप के लिए किया जाता है। लयबद्ध और द्रुतगीत स्वर के साथ तेजी से ऊपर उठना इसकी विशेषता है।

- **पोवाडा**
  - पोवाडा, महाराष्ट्र की एक पारम्परिक लोक कला शैली है। पोवाडा शब्द का अर्थ, शानदार शब्दों में एक कहानी का वृत्तान्त है। वृत्तान्त सदैव किसी वीर अथवा घटना अथवा स्थान की प्रशंसा में सुनाया जाता है। मुख्य वृत्तान्तकर्ता को शाहीर के नाम से जाना जाता है जो लय बनाए रखने के लिए डफ बजाता है। गीत तीव्र होता है और मुख्य गायक द्वारा नियन्त्रित होता है जिसका समर्थन मण्डली के अन्य सदस्यों द्वारा किया जाता है।
  - प्राचीनतम उल्लेखनीय पोवाडा अग्निदास द्वारा अफजल खाँ का वध 1659 ई. में हुआ था, जिसने अफजल खाँ के साथ शिवाजी के संघर्ष का वर्णन किया था।

- **तीज गीत**

  तीज, राजस्थान की महिलाओं की बड़ी भागीदारी के साथ मनाई जाती है। यह श्रावण मास के नए चन्द्र अथवा अमावस्या के बाद तीसरे दिन मनाई जाती है। त्योहार के दौरान गाए जाने वाले गीतों का विषय शिव और पार्वती का मिलन, मानसून की मनमोहक छठा, हरियाला मौसम, मयूर नृत्य आदि के इर्द–गिर्द होता है।

- **आल्हा**

  बुन्देलखण्ड की एक विशिष्ट गाथा, शैली आल्हा में देखने को मिलती है जिसमें आल्हा और ऊदल, दो बहादुर भाइयों के साहसिक कारनामों का उल्लेख किया जाता है जिन्होंने महोबा के राजा परमल की सेवा की थी। यह न केवल बुन्देलखण्ड का एक सर्वाधिक लोकप्रिय संगीत है, बल्कि देश में अन्यत्र भी लोकप्रिय है।

  आल्हा, सामन्ती बहादुरी की गाथाओं से भरा है, जो सामान्य आदमी को प्रभावित करता है। इसमें समाज में उस समय में विद्यमान नैतिकता, बहादुरी और कुलीनता के उच्च सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला गया है।

- **होरी**

  होरी का इतिहास, इसका विकास और परम्परा काफी प्राचीन है। यह 'राधा–कृष्ण' के प्रेम प्रसंगों पर आधारित है। होरी गायन मूलतः केवल होली त्योहार के साथ जुड़ा है। बसन्त ऋतु के दौरान भारत में होरी के गीत गाने और होली मनाने की परम्परा प्राचीनकाल से जारी है।

- **सोहर**

  सामाजिक समारोह समय-समय पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को परस्पर जोड़ने का एक महत्त्वपूर्ण कारक हैं। उत्तर भारत में परिवार में पुत्र जन्मोत्सव में 'सोहर' गायन की एक उत्साही परम्परा है। इसने मुस्लिम संस्कृति को प्रभावित किया है तथा उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में रहने वाले मुस्लिम परिवार 'सोहर गीत' गाकर पैसा भी कमाते हैं। 'सोहर गीत' निःसन्देह दो संस्कृतियों को मिलाने वाले गीत हैं।

- **रसिया गीत**

  बृज जो भगवान कृष्ण की आदिकाल से ही मनोहारी लीलाओं की पवित्र भूमि है, रसिया गीत गायन की समृद्ध परम्परा के लिए प्रसिद्ध है। यह किसी विशेष त्योहार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि लोगों के दैनिक जीवन और दिन-प्रतिदिन के कामकाज में भी रचा–बसा है। 'रसिया' शब्द रास (भावावेश) शब्द से लिया गया है, क्योंकि रसिया का अर्थ रास अथवा भावावेश से है। यह गायक के व्यक्तित्व और साथ ही गीत की प्रकृति को परिलक्षित करता है।

- **कजरी**

  कजरी, वर्षा ऋतु के दौरान उत्तर प्रदेश और निकटवर्ती क्षेत्र में महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत है। भाद्र के द्वितीय पक्ष में तीसरे दिन महिलाएँ, एक अर्द्ध-गोलाकार में नृत्य करते हुए पूरी रात गाती हैं।

- **कव्वाली**

  मूलतः कव्वालियाँ ईश्वर की प्रशंसा में गाई जाती थीं। भारत में कव्वाली का आगमन तेरहवीं शताब्दी के आस-पास फारस से हुआ है और सूफियों ने अपने सन्देश का प्रसार करने के लिए अपनी सेवायें प्रदान कीं। अमीर खुसरो (1254-1325), एक सूफी सन्त तथा एक प्रवर्तक ने, कव्वाली के विकास में योगदान किया।

- **बुर्राकथा**

  बुर्राकथा, गाथा रूप में एक उच्च कोटि की नाटक शैली है। इसमें मुख्य कलाकार द्वारा गाथा वर्णन के दौरान बोतल के आकार का एक ड्रम (तम्बूरा) बजाया जाता है। गाथा गायक, मंच नायक की तरह अत्यन्त बनी बनाई आकर्षक पोशाक पहनता है।

- **भाखा**

  लोक संगीत की भाखा शैली जम्मू क्षेत्र में लोकप्रिय है। भाखा का गायन ग्रामवासियों द्वारा फसल काटने के समय किया जाता है। इसे सर्वाधिक मोहक और सुरीला क्षेत्रीय संगीत समझा जाता है। यह हारमोनियम जैसे वाद्यों के साथ गाया जाता है।

- **भूता गीत**

  भूता गीत का आधार अन्धविश्वास से जुड़ा है। केरल के कुछ समुदाय भूत-प्रेत को भगाने के लिए भूता रिवाज अपनाते हैं। इस रिवाज के साथ श्रमसाध्य नृत्य का आयोजन किया जाता है तथा इसकी प्रकृति बड़ी तीव्र और भयानक होती है।

- **दसकठिया**

  दसकठिया ओडिशा में प्रचलित गाथा गायन की एक शैली है। दसकठिया शब्द 'काठी' अथवा 'राम ताली' नामक एक काष्ठ से बने संगीत वाद्य से लिया गया नाम है, जिसका उपयोग प्रस्तुतीकरण के दौरान किया जाता है। प्रस्तुतीकरण एक प्रकार की पूजा है तथा भक्त 'दास' की ओर से भेंट है।

- **बिहू गीत**

  बिहू गीत अपनी साहित्यिक विषय-वस्तु और सांगीतिक विधि दोनों ही दृष्टि से असोम की अति विशिष्ट शैली के लोक गीत हैं। बिहू गीत एक खुशहाल नव वर्ष के लिए शुभकामनाओं का प्रतीक है तथा नृत्य के साथ-साथ सुख-समृद्धि हेतु एक प्राचीन उपासना की परम्परा जुड़ी है। बिहू गायन का समय ही एक ऐसा अवसर है, जब विवाह योग्य युवा पुरुष और महिलाएँ अपनी भावनाओं का आदान-प्रदान करते हैं और अपने साथी का चुनाव भी करते हैं। उनकी खुशी गीतों में परिलक्षित होती है।

- **साना लामोक**

  मणिपुर की पहाड़ियाँ और घाटियाँ दोनों ही संगीत और नृत्य की शौकीन हैं। साना लामोक 'माईबा (पुजारी)' द्वारा राज्याभिषेक समारोह के दौरान गाया जाता है। यह बादशाह का स्वागत करने के लिए भी गाया जाता है। इसे पाखंगबा, प्रधान देवता की आत्मा को जाग्रत करने के लिए गाया जाता है। ऐसा विश्वास है कि यह गीत जादुई शक्तियों से प्रभावित है।

- **लाई हाराओबा त्योहार के गीत**

  लाई हाराओबा शब्द का अर्थ देवी और देवताओं का त्योहार है। इसे उमंग–लाई (वनदेवता) के लिए गाया जाता है। औगरी हेंगेन, सृजन का गीत और हेईजिंग हिराओ, एक आनुष्ठानिक गीत, लाई हाराओबा त्योहार के अन्तिम दिवस पर गाया जाता है।

- **साईकुती जई (साईकुती के गीत)**

  मिजो लोगों को पारम्परिक रूप से एक 'गायक जनजाति के रूप में जाना जाता है। मिजोरम के क्षेत्रीय लोकगीत मिजो लोगों की एक समृद्ध परम्परा है। साईकुती मिजोरम की एक कवयित्री द्वारा रचित गीत हैं जिन्हें योद्धाओं, बहादुर शिकारियों तथा महान योद्धा और शिकारी आदि बनने के इच्छुक युवा व्यक्तियों की प्रशंसा में गाया जाता है।

- **चाई हिआ (चाई नृत्य के गीत)**

  मिजो रिवाज के अनुसार चपचर कट त्योहार के दौरान न केवल गायन बल्कि नृत्य भी पूरे त्योहार के दौरान जारी रहना चाहिए। गायन और नृत्य के लिए विशेष अवसर को 'चाई तथा गीतों को 'चाई हिआ'(चाई गीत) के नाम से जाना जाता है।

- **बसन्ती/बसन्त गीत**

  बसन्त ऋतु का स्वागत गढ़वाल में एक अनूठे ढंग से किया जाता है। धरती भाँति-भाँति के रंगीन फूलों से सजी होती है। बसन्त पंचमी के अवसर पर फर्श पर चावल के आटे से रंगोली बनाई जाती है और सुन्दर बनाने हेतु गाय के गोबर के साथ हरे जई के बन्डलों का इस्तेमाल किया जाता है। पेड़ों पर झूले बाँधे जाते हैं और लोकगीत गाए जाते हैं।

- **घसियारी गीत**

  पहाड़ों में युवा महिलाओं को अपने पशुओं के लिए घास लाने के लिए दूर–दूर वनों में जाना पड़ता है। वे वन में समूहों में नाचती और गाती हुई जाती हैं। मनोरंजन के साथ-साथ घसियारी गीत में श्रम के महत्त्व पर बल दिया जाता है।

- **सुकर के बियाह**

  भोजपुरी गीतों में सामान्य लोगों के जीवन का वर्णन किया जाता है। इसमें मन की सरल एवं सहज अन्दरूनी भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। ग्रामीण लोकगीतों में प्रकृति, ग्रहों और नक्षत्रों की अपनी ही व्याख्याएँ हैं। शुक्र और बृहस्पति की कहानी अब भी गाई जाती है।

- **विल्लु पत्तु 'धनुष गीत'**

  विल्लु पत्तु तमिलनाडु का एक लोकप्रिय लोक संगीत है। प्रमुख गायक मुख्य निष्पादनकर्ता की भी भूमिका निभाता है। वह प्रमुख वाद्य बजाता है जो धनुष के आकार का होता है। गीत सैद्धान्तिक विषयों पर आधारित होते हैं और अच्छाई की बुराई पर विजय पर बल दिया जाता है।

- **अम्मानईवारी**

  अम्मानईवारी, चोला बादशाह की प्रशंसा में गाए जाने वाले गीत हैं। अम्मानाई एक लकड़ी की गेंद है तथा महिलाएँ गेंद खेलते समय उपयुक्त गीत गाती हैं। अम्मानाई का यह खेल अभी भी तमिलनाडु में खेला जाता है।

प्रमुख भारतीय संगीत शैली के गायक
(Singers of Indian Music Styles)

- **ध्रुपद गायक**–अल्लाह बन्दे खाँ, पं.चन्दन चौबे, नसीरुद्दीन खाँ, पं. राम चतुर मलिक, पं. सियाराम तिवारी, डागर बन्धु, जहीरुद्दीन डागर, फैजुद्दीन डागर, अभय नारायण मलिक।
- **ख्याल गायक**–गुलाम अली खाँ, अब्दुल करीम खाँ, रहमत खाँ, पं. विनायक राव पटवर्धन, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, केसरबाई, ताराबाई शिरोडकर, फैयाज खाँ, पं. मादकर राव बाखले, निसार हुसैन खाँ, पं. दिलीप चन्द्र बेदी, हीराबाई बड़ौदकर, पं. कुमार गंधर्व, पं. भीमसेन जोशी।
- **कर्नाटक शैली के गायक**–श्री निवास अय्यर, संगीत पालघाट, मल्लिकार्जुन, सेम्मन गुडी मंसूर, राम अवतार, अरिकुड्डी, रामानुज आयांगर, पलनिसुब्बडु, महाराजपुरम् विश्वनाथ अय्यर, दक्षिणामूर्ति पिल्लै, बाल मुरली कृष्णा, टी. एन. कृष्णन, सुश्री मणिकृष्णा स्वामी।
- **हिन्दुस्तानी संगीत गायक**–हीराबाई बड़ौदकर, श्रीमती मालिनी राजूरकर, शोभा गुर्टू, पं. लक्ष्मण कृष्ण राव।
- **शास्त्रीय गायक**– एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी, विनायक राम, पं. जसराज।
- **पांडवानी गायक**–झंडूराम देवागन, तीजनबाई, ऋतु वर्मा।
- **गजल गायक**–पीनाज मसानी, बेगम अख्तर, मल्लिका पुखराज, रीता गांगुली।

संगीत के प्रहर (Prahar of Music) (Cycle of Time)

संगीत के समय चक्र के अनुसार दिन के 24 घंटे को आठ प्रहरों में बाँटा गया है। तीन घंटों का एक प्रहर होता है।

प्रातः कालीन प्रथम प्रहर	7 से 10 बजे तक
दिन का द्वितीय प्रहर	10 से 1 बजे तक
दिन का तृतीय प्रहर	1 से 4 बजे तक
सायंकालीन संधि प्रकाश प्रहर	4 से 7 बजे तक
रात्रि का प्रथम प्रहर	7 से 10 बजे तक
रात्रि का द्वितीय प्रहर	10 से 1 बजे तक
रात्रि का तृतीय प्रहर	1 से 4 बजे तक
प्रातः कालीन संधि प्रकाश प्रहर	4 से 7 बजे तक

प्रमुख वाद्ययंत्र और वादक
(Musical Instrument & Players)

- **संतूर** : भजन सोपोरी, शिवकुमार शर्मा।
- **मृदंग** : पालधार रघु, ठाकुर भीकम सिंह, डॉ. जगदीश सिंह।
- **नादस्वरम्** : नीरु स्वामी पिल्लई, शेख चिन्ना मौलाना, शेख आदम साहेब, नचिआर कोविल राजम, दोरेकिन्नू बंधू।
- **पखावज** : गोपाल दास, ठाकुर लक्ष्मण सिंह, उस्ताद रहमान खाँ, नारायण राव, छत्रपति सिंह।
- **जल तरंग** : जगदीश मोहन, रामस्वरूप प्रभाकर, घासीराम निर्मल।
- **पॉप संगीत** : उषा उत्थप।
- **फिलहार्मोनिक आर्केस्ट्रा एंड सिम्फनी** : जुबिन मेहता।,
- **ट्रम्पेट** : यह बिना तार का वाद्ययन्त्र है।
- **सितार** : पं. रवि शंकर, निखिल बनर्जी, विलायत खाँ, वंदे हसन, शाहिद परवेज, उमाशंकर मिश्र, बुद्धादिल बनर्जी।
- **गिटार** : विश्व मोहन भट्ट, ब्रजभूषण कावड़ा, श्रीकृष्ण नलिन।
- **सरोद** : अहमद अली खाँ, अली अकबर खाँ, अलाउद्दीन खाँ, मुकेश शर्मा, नरेन्द्र नाथ धर, विश्वजीत राय चौधरी, गुरुदेव सिंह, अभीक सरकार, अमान बंधु भीराधिका मोहन मोइत्रा, जरीन दारुवाला, बुद्धदेव दास गुप्त, देवाशीष भट्टाचार्य, राजेन्द्र मिश्र, सुप्रभात पाल, पार्थसारथी।
- **तबला** : अल्ला रखा, लतीफ खाँ, गुदई महाराज, (पं. सामता प्रसाद), जाकिर हुसैन, किशन महाराज, फय्याज खाँ, सुखविंदर सिंह, पं. रंगनाथ मिश्र।
- **बांसुरी** : पन्ना लाल घोष, हरि प्रसाद चौरसिया, राजेन्द्र कुलकर्णी, राजेन्द्र प्रसन्ना, सिक्किल सिस्टर्स, (बी. कुंजमणि और एन. नीला (कर्नाटक शैली)
- **शहनाई** : बिस्मिल्ला खाँ, दयाशंकर जगन्नाथ, अली अहमद हुसैन खाँ।
- **घाटम** : टी. एच. विनायक राम।
- **हारमोनियम** : अप्पा जुलगांवकर, भूरेलाल खाँ, महमूद धालपुरी।
- **वायलिन** : विष्णु गोविन्द जोग, डॉ. एन. राजन, संगीता राजन, टी. एन. कृष्णन्, लालगुडी जयरामन, एल. सुब्रह्मण्यम्, बी. बी. सुबह्मण्यम्, गोविन्द स्वामी पिल्लै, एम. एस. गोपाल कृष्णन्, एन. सुब्रह्मण्यम्, कुनक्कडी वैद्यनाथन् (कर्नाटक शैली)।
- **वीणा** : एस. बालचन्द्रन, कल्याण कृष्ण भगवातार, बदरुद्दीन डागर, वी. दोरे स्वामी आयंगर।
- **रुद्रवीणा** : असद अली खाँ (बीकानेर घराना)। उस्ताद सादिक अली।
- **सारंगी** : उदयनालाल, माधवप्रसाद, अब्दुल वाहिद नाथू जी, विआवत, पं. रामनारायण, इन्द्रलाल, सावरी खाँ, ध्रुव घोष, वजीर खाँ, आसिफ अली खाँ, उस्तात बिन्दा खाँ।

प्रसिद्ध-घराना (Famous Gharanas)

1.	**ग्वालियर घराना**	यह घराना ध्रुपद एवं ख्याल गायन हेतु प्रसिद्ध है।
2.	**भिण्डी बाजार घराना**	यह घराना खुले विचार और आवाज के लिए प्रसिद्ध है।
3.	**फतेहपुर सीकरी घराना**	यह घराना भी ध्रुपद ख्यालों की वजह से प्रसिद्ध है।
4.	**डागर घराना**	यह घराना ध्रुपद गायन का प्राचीनतम घराना है।
5.	**दिल्ली घराना**	यह घराना ख्यालों के गायन के लिए प्रसिद्ध है।
6.	**बनारस घराना**	शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में इस घराने का महत्त्वपूर्ण योगदान है।
7.	**आगरा घराना**	हिन्दुस्तानी संगीत के प्रसिद्ध घरानों में से एक है।
8.	**पटियाला घराना**	यह नया संगीत घराना है, इसे ठुमरी और टप्पा में महारत हासिल है।
9.	**रामपुर घराना**	यह सेनिया घराने की अन्तिम कड़ी है तथा इसकी शैली ध्रुपदी है।
10.	**लखनऊ घराना**	यह घराना ठुमरी/टप्पा दोनों की गायकी के लिए प्रसिद्ध है।
11.	**मैहर घराना**	यह रामपुर घराने से निकला घराना है। यह रागों के सृजन के लिए प्रसिद्ध है।
12.	**जयपुर–अतरौली घराना**	मुहम्मद अली खाँ इस घराने के नाम से जाने जाते हैं।
13.	**मेवाती घराना**	हिन्दुस्तानी संगीत के लिए प्रसिद्ध है।
14.	**बेतिया घराना**	राजदरबारी और ध्रुपद गायन के लिए प्रसिद्ध है।
15.	**विशनूपुर घराना**	यह घराना प. बंगाल में स्थित एकमात्र घराना है।

अन्य लोक संगीत (Other Folk Music)

स्वर	देवता	ध्वनि	रंग	ग्रह
सा	अग्नि	मोर	गुलाबी	चन्द्र
रे	ब्रह्मा	गाय–बैल	हल्का हरा पीला	बुद्ध
ग	सरस्वती	बकरा	हल्का सफेद पीला	शुक्र
म	विष्णु	क्रौंच	गहरा लाल	सूर्य
प	लक्ष्मी	कोयल	गहरा लाल	मंगल
ध	गणेश	घोड़ा	हल्का पीला	गुरु
नि	सूर्य	हाथी	गहरा भूरा	शनि

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न

1. पंडित भीमसेन जोशी निम्नलिखित में से किस क्षेत्र से सम्बन्ध रखते हैं ?
(A) साहित्य (B) सामाजिक सेवाएँ
(C) शास्त्रीय संगीत (D) राजनीति

2. रागिनी किस राज्य की लोकप्रिय गीत शैली है ?
(A) कश्मीर (B) केरल
(C) हरियाणा (D) मणिपुर

3. बिरजू महाराज किस विधा के सुप्रसिद्ध प्रतिपादक हैं ?
(A) मणिपुरी (B) कत्थक
(C) ओडिसी (D) कथकली

4. 'जलिकट्टू' किस भारतीय त्योहार से जुड़ा है ?
(A) ओणम (B) पोंगल
(C) बिहू (D) हॉर्नबिल

5. **कथन (A) :** किशनगढ़ शैली राजस्थान की चित्रकला शैलियों में से एक महत्वपूर्ण शैली है।
कारण (R) : किशनगढ़ शैली का विकास सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी के मध्य विकास हुआ।
(A) 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं तथा 'R' कारण है 'A' का
(B) 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं तथा 'R' कारण नहीं है 'A' का
(C) 'A' सत्य है लेकिन 'R' गलत है
(D) 'A' गलत है, लेकिन 'R' सत्य है

6. 'बथुकम्म' किस राज्य का पर्व है ?
(A) ओडिशा (B) तेलंगाना
(C) गुजरात (D) बिहार

7. पंडित लच्छू महाराज, जिनका हाल ही में देहावसान हुआ है, किस विधा से जुड़े थे ?
(A) बाँसुरी (B) तबला
(C) कथक (D) भारतनाट्यम

8. शिव कुमार शर्मा किसके प्रसिद्ध वादक हैं ?
(A) सितार (B) बाँसुरी
(C) संतूर (D) तबला

9. माउंट आबू स्थित मशहूर दिलवाड़ा मन्दिर निम्नलिखित में से किस समुदाय का पवित्र तीर्थ स्थल है ?
(A) बौद्ध (B) जैन
(C) सिख (D) पारसी

उत्तरमाला

1. (C) **2.** (C) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (B)
6. (B) **7.** (C) **8.** (C) **9.** (B)

❑❑

अध्याय 5

वर्ग एवं वर्गमूल

I. वर्ग (Square)– यदि किसी संख्या को दो बार गुणा किया जाये तो वह गुणनफल उस संख्या का वर्ग कहलाता है। किसी भी संख्या का वर्ग दर्शाने के लिए उस संख्या पर घातांक 2 लिखते हैं।

जैसे– 5 का वर्ग $= 5^2 = 5 \times 5 = 25$

II. दशमलव संख्याओं का वर्ग (Square of decimal numbers)– दशमलव संख्याओं का वर्ग निकालते समय बिना दशमलव के संख्या का वर्ग निकालने के बाद परिणाम से दोगुने स्थान पर दाईं ओर से दशमलव लगाते हैं :

जैसे– $(1.5)^2 = 2.25$

वर्ग ज्ञात करना (To find the square)–

(i) किसी भी संख्या को दो बार गुणा करने से उसका वर्ग प्राप्त किया जाता है :

उदा. : $(125)^2 = 125 \times 125$

$$
\begin{array}{r}
= \quad 125 \\
\times \quad 125 \\
\hline
625 \\
+ \quad 250\times \\
+ \quad 125\times\times \\
\hline
15625
\end{array}
$$

(ii) किसी भी संख्या का वर्ग निम्न दो बीजीय सूत्रों द्वारा भी ज्ञात किया जा सकता है :

$$(a+b)^2 = a^2 + 2ab + b^2$$

तथा $$(a-b)^2 = a^2 - 2ab + b^2$$

उदा. : $(65)^2$ का मान ज्ञात कीजिए :

(A) $$(65)^2 = (50+15)^2 = (50)^2 + 2\,(50)\,(15) + (15)^2 = 2500 + 1500 + 225 = 4225$$

(B) $$(65)^2 = (70-5)^2 = (70)^2 - 2\,(70)\,(5) + (5)^2 = 4900 - 700 + 25 = 4225$$

याद रखने योग्य वर्ग (Rememberable Squares)

संख्या	विवरण	वर्ग
1	$1^2 = 1 \times 1$	1
2	$2^2 = 2 \times 2$	4
3	$3^2 = 3 \times 3$	9
4	$4^2 = 4 \times 4$	16
5	$5^2 = 5 \times 5$	25
6	$6^2 = 6 \times 6$	36
7	$7^2 = 7 \times 7$	49
8	$8^2 = 8 \times 8$	64
9	$9^2 = 9 \times 9$	81
10	$10^2 = 10 \times 10$	100
11	$11^2 = 11 \times 11$	121
12	$12^2 = 12 \times 12$	144
13	$13^2 = 13 \times 13$	169
14	$14^2 = 14 \times 14$	196
15	$15^2 = 15 \times 15$	225
16	$16^2 = 16 \times 16$	256
17	$17^2 = 17 \times 17$	289
20	$20^2 = 20 \times 20$	400
21	$21^2 = 21 \times 21$	441
25	$25^2 = 25 \times 25$	625
30	$30^2 = 30 \times 30$	900
40	$40^2 = 40 \times 40$	1600
50	$50^2 = 50 \times 50$	2500
100	$100^2 = 100 \times 100$	10000

संख्या के वर्ग का इकाई अंक तथा अन्तिम दो अंक की शर्तें (Unit digit and last two digits in the square of any number)–

क्रमांक	संख्या का इकाई अंक	संख्या के वर्ग का इकाई अंक	संख्या के वर्ग के अन्तिम दो अंक	यदि संख्या के वर्ग के अन्तिम दो अंक निम्नानुसार होंगे तो वह संख्या पूर्ण वर्ग नहीं होगी
1.	01 या 09	1	01, 21, 41, 61, 81	11, 31, 51, 71, 91
2.	02 या 08	4	04, 24, 44, 64, 84	14, 34, 54, 74, 94
3.	03 या 07	9	09, 29, 49, 69, 89	19, 39, 59, 99
4.	04 या 06	6	16, 36, 56, 76, 96	06, 26, 46, 66, 86
5.	05	5	25	....
6.	0	0	00	0

III. वर्गमूल (Square root)—संख्या का वर्गमूल वह संख्या होती है, जिसका वर्ग करने पर पुनः वही संख्या प्राप्त हो जाए। संख्या का वर्गमूल ज्ञात करने के लिए '$\sqrt{\ }$' संकेत का प्रयोग किया जाता है।

$\sqrt{\ }$ = को घातांक में $\frac{1}{2}$ द्वारा भी प्रदर्शित किया जाता है।

जैसे : $\sqrt{625} = (625)^{1/2} = [(25)^2]^{1/2} = 25$

IV. वर्गमूल ज्ञात करने की विधियाँ (Methods to find square root)—

(i) गुणनखण्ड विधि (Factor method)—गुणन विधि निम्नानुसार है :

चरण : 1. सर्वप्रथम संख्या के अभाज्य गुणनखण्ड ज्ञात करते हैं।

चरण : 2. समान अभाज्य गुणनखण्डों के युग्म (जोड़े) बनाते हैं।

चरण : 3. समान गुणनखण्डों के युग्मों में से एक–एक गुणनखण्ड लेकर उनका गुणनफल करते हैं।

चरण : 4. प्राप्त गुणनफल ही संख्या का अभीष्ट वर्गमूल है।

उदा. : $\sqrt{50625}$ का मान ज्ञात कीजिए :

चरण : 1.

5	50625
5	10125
5	2025
5	405
3	81
3	27
3	9
3	3
	1

अभाज्य गुणनखण्ड $= 5 \times 5 \times 5 \times 5 \times 3 \times 3 \times 3 \times 3$

चरण : 2. स.मान युग्म बनाना :

$= \underline{5 \times 5} \times \underline{5 \times 5} \times \underline{3 \times 3} \times \underline{3 \times 3}$

चरण : 3. $5 \times 5 \times 3 \times 3$

चरण : 4. $25 \times 9 = 225$

अतः $= \sqrt{50625} = 225$

(ii) भाग विधि (Division method)—भाग विधि निम्नानुसार है :

चरण : 1. अभीष्ट संख्या के दाईं ओर से दो–दो के जोड़े बनाते हैं।

चरण : 2. बाईं ओर के अन्तिम युग्म या अंक को ऐसी संख्या से भाग करते हैं, जिसका वर्ग उस युग्म या अंक के बराबर या कम हो। इस संख्या को भाजक तथा भागफल के स्थान पर लिखते हैं तथा शेषफल ज्ञात करते हैं।

चरण : 3. इस शेषफल के साथ अगले युग्म को दाईं ओर लिखते हैं।

चरण : 4. भाजक के स्थान पर भागफल का दुगुना लिखकर भाजक के दाईं ओर ऐसा अंक लिखते हैं, जिसका गुणा प्राप्त भाजक में करने पर प्राप्त गुणनफल भाज्य के बराबर या उससे कम हो।

चरण : 5. प्राप्त गुणनफल को भाज्य के नीचे लिखकर शेषफल ज्ञात करते हैं। भाजक में रखे अंक को भागफल में लिखते हैं।

चरण : 6. इस प्रक्रिया को सभी युग्म खत्म होने तक चलाते रहते हैं। इस प्रकार की प्रक्रिया में प्राप्त भागफल ही संख्या का वर्गमूल होता है।

उदा. : $\sqrt{50625}$ का वर्गमूल भाग विधि से ज्ञात कीजिए :

	225
2 + 2	50625 − 4
42 + 2	106 − 84
445 + 5	2225 − 2225
450	0

अतः $\sqrt{50625} = 225$

याद रखने योग्य वर्गमूल (Rememberable Squaresroot)

संख्या	विवरण	वर्गमूल
1	$\sqrt{1} = \sqrt{1 \times 1}$	1
4	$\sqrt{4} = \sqrt{2 \times 2}$	2
9	$\sqrt{9} = \sqrt{3 \times 3}$	3
16	$\sqrt{16} = \sqrt{4 \times 4}$	4
25	$\sqrt{25} = \sqrt{5 \times 5}$	5
36	$\sqrt{36} = \sqrt{6 \times 6}$	6
49	$\sqrt{49} = \sqrt{7 \times 7}$	7

संख्या	विवरण	वर्गमूल
64	$\sqrt{64} = \sqrt{8 \times 8}$	8
81	$\sqrt{81} = \sqrt{9 \times 9}$	9
100	$\sqrt{100} = \sqrt{10 \times 10}$	10
121	$\sqrt{121} = \sqrt{11 \times 11}$	11
144	$\sqrt{144} = \sqrt{12 \times 12}$	12
169	$\sqrt{169} = \sqrt{13 \times 13}$	13
196	$\sqrt{196} = \sqrt{14 \times 14}$	14
225	$\sqrt{225} = \sqrt{15 \times 15}$	15
256	$\sqrt{256} = \sqrt{16 \times 16}$	16
289	$\sqrt{289} = \sqrt{17 \times 17}$	17
400	$\sqrt{400} = \sqrt{20 \times 20}$	20
441	$\sqrt{441} = \sqrt{21 \times 21}$	21
625	$\sqrt{625} = \sqrt{25 \times 25}$	25
900	$\sqrt{900} = \sqrt{30 \times 30}$	30
1600	$\sqrt{1600} = \sqrt{40 \times 40}$	40
2500	$\sqrt{2500} = \sqrt{50 \times 50}$	50
10000	$\sqrt{10000} = \sqrt{100 \times 100}$	100

V. दशमलव संख्याओं का वर्गमूल (Square root of decimal numbers)– दशमलव संख्याओं का वर्गमूल दशमलव हटाने के बाद पूर्व की भाँति ज्ञात करते हैं। उत्तर में आधे स्थान पर दायीं ओर से दशमलव लगाते हैं–

जैसे– $\sqrt{6.25} = 2.5$

याद रखने योग्य बिन्दु (Points to Remember)

(i) धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनों संख्याओं का वर्ग हमेशा धनात्मक ही होता है :

अर्थात् $(\pm x)^2 = x^2$

(ii) धनात्मक संख्याओं का वर्गमूल हमेशा धनात्मक होता है।

(iii) ऋणात्मक संख्याओं का वर्गमूल वास्तविक न होकर काल्पनिक संख्या होती है :

जैसे– $\sqrt{-4} \neq -2$

$\sqrt{-4} = \sqrt{4i^2} = 2i$ जहाँ : $i^2 = -1$

महत्त्वपूर्ण प्रकार (Short-Tricks)

- **Type 1 :** $(a+1)^2 = a^2 + a + (a+1)$

उदा. : $(36)^2 - (35)^2 + (30)^2$ को हल कीजिए।

हल : $(36)^2 - (35)^2 + (30)^2$

$= (36-35)(36+35) + 900$

$[\because a^2 - b^2 = (a-b)(a+b)]$

$= 1 \times 71 + 900$

$= 971$

शॉर्ट ट्रिक : $(36)^2 - (35)^2 + (30)^2$

$= (35)^2 + 35 + 36 - (35)^2 + 900$

$[\because (n+1)^2 = n^2 + n + (n+1)]$

$= 35 + 36 + 900 = 971$

- **Type 2 :** दो अंकीय संख्या ab का वर्ग ज्ञात करना–

$(ab)^2 = a^2/2ab/b^2$

उदा. : दो अंकीय संख्या 36 का वर्ग ज्ञात कीजिए।

हल : $(36)^2 = 3^2/2 \times 3 \times 6/6^2$

$= 9/36/36$

$= 9/(36+3)/6$

$= 9/39/6$

$= (9+3)/9/6$

$= 12/9/6 = 1296$

- **Type 3 :** तीन अंकीय संख्या abc का वर्ग ज्ञात करना–

$(abc)^2 = a^2/2ab/2ac + b^2/2bc/c^2$

उदा. : तीन अंकीय संख्या 125 का वर्ग ज्ञात कीजिए।

हल : $(125)^2 = 1^2/2 \times 1 \times 2/2 \times 1 \times 5 + 2^2/2 \times 2 \times 5/5^2$

$= 1/4/10 + 4/20/25$

$= 1/4/14/20/25$

$= 1/4/14/(20+2)/5$

$= 1/4/(14+2)/2/5$

$= 1/4/16/2/5$

$= 1/(4+1)/6/2/5$

$= 1/5/6/2/5$ या 15625

- **Type 4 :** अंक 1 की पुनरावृत्ति से बनने वाली संख्या का वर्ग ज्ञात करना–

$(1111)^2 = 1234321$

यहाँ, अंक 1 की पुनरावृत्ति संख्या 4 तक गिनती आरोही क्रम में लिखने के बाद अवरोही क्रम में 1 तक लिखें।

उदा. : $(11111)^2-(1111)^2+(111)^2-1^2$ को हल कीजिए।

हल : $(11111)^2-(1111)^2+(111)^2-1^2$

$=123454321-1234321+12321-1$

$=122232320$

- **Type 5 :** किसी अंक की पुनरावृत्ति से बनी संख्या का वर्ग ज्ञात करना–

$$(AAA)^2 = A^2(12321)$$

उदा. : $(222)^2$ का मान ज्ञात कीजिए।

हल : $(222)^2 = 2^2\times(111)^2$

$=4\times 12321 = 49284$

- **Type 6 :** किसी संख्या का वर्गमूल दशमलव के दो स्थान तक ज्ञात करने के लिए उस संख्या को दो भागों में इस प्रकार विभक्त कीजिए कि एक भाग पूर्ण वर्ग हो–

$$\sqrt{a}=\sqrt{b\pm c}=\sqrt{b}\pm\frac{c}{2\sqrt{b}};$$

जहाँ $b+c=a$ है।

उदा. : 126 का वर्गमूल दशमलव के दो स्थानों तक ज्ञात कीजिए।

हल : $\sqrt{126} = \sqrt{121+5}$

$a=126, b=121$ तथा $c=5$ लेने पर,

$=\sqrt{121}+\frac{5}{2\sqrt{121}}$

$=11+\frac{5}{22}$

$=11+0.23$ (लगभग)

$=11.23$ (लगभग)

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. $\sqrt{\sqrt{2500}+\sqrt{961}}=(?)^2$

(A) 81 (B) 3
(C) 6561 (D) 9

2. $\sqrt{5+\sqrt{11+\sqrt{19+\sqrt{29+\sqrt{49}}}}}=?$

(A) 3 (B) 2
(C) 4 (D) 6

3. $\frac{\sqrt{32}+\sqrt{48}}{\sqrt{8}+\sqrt{12}}=?$

(A) 2 (B) 4
(C) 8 (D) $\sqrt{2}$

4. $\sqrt{6+\sqrt{6+\sqrt{6+\ldots\ldots\ldots\infty}}}$

(A) 3 (B) 4
(C) 5 (D) 6

5. यदि $\frac{\sqrt{7}-2}{\sqrt{7}+2}=a\sqrt{7}+b$ हो, तो $a=?$

(A) $\frac{11}{3}$ (B) $\frac{-4}{3}$

(C) $\frac{4}{3}$ (D) $\frac{-4\sqrt{7}}{3}$

6. $\frac{1}{\sqrt{9}-\sqrt{8}}-\frac{1}{\sqrt{8}-\sqrt{7}}+\frac{1}{\sqrt{7}-\sqrt{6}}-\frac{1}{\sqrt{6}-\sqrt{5}}+\frac{1}{\sqrt{5}-\sqrt{4}}=?$

(A) 0 (B) 1

(C) 5 (D) $\frac{1}{3}$

7. यदि $x=7-4\sqrt{3}$ हो, तो $\left(x+\frac{1}{x}\right)=?$

(A) $3\sqrt{3}$ (B) $8\sqrt{3}$

(C) $14+8\sqrt{3}$ (D) 14

8. यदि $a=\frac{\sqrt{5}+1}{\sqrt{5}-1}$ तथा $b=\frac{\sqrt{5}-1}{\sqrt{5}+1}$ हो, तो

$\frac{a^2+ab+b^2}{a^2-ab+b^2}=?$

(A) 0.75 (B) 1.25
(C) 0.6 (D) 1.33

9. एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों को एक बराबर संख्या में पंक्तियों और स्तम्भ (कॉलम) में रखना चाहता है। यदि विद्यार्थियों की कुल संख्या 1369 है, तो अन्तिम पंक्ति में कितने विद्यार्थी होंगे ?

(A) 37 (B) 33
(C) 63 (D) 47

10. 120 और 300 के बीच के पूर्ण वर्गों का योग है :

(A) 1204 (B) 1024
(C) 1296 (D) 1400

11. 1000 में किस न्यूनतम पूर्णांक को जोड़ा जाए कि वह पूर्ण वर्ग बन जाए ?

(A) 10 (B) 18
(C) 24 (D) 89

12. यदि 10^3A+A एक पूर्ण वर्ग संख्या हो, तो A में कम–से–कम अंकों की संख्या है–

(A) 3 (B) 4

(C) अनिश्चित (D) 2

13. दो सतत् विषम संख्याओं का गुणनफल 6723 है, तो छोटी संख्या का वर्गमूल है–

(A) 7 (B) 729

(C) 91 (D) 9

14. $(272)^2-(128)^2$ का वर्गमूल ज्ञात कीजिए–

(A) 200 (B) 240

(C) 256 (D) 144

15. $\frac{\sqrt{5}}{\sqrt{9+4\sqrt{5}}-\sqrt{9-4\sqrt{5}}}$ बराबर है–

(A) $\frac{1}{2}$ (B) $\frac{1}{3}$

(C) $\frac{1}{5}$ (D) $\frac{1}{4}$

16. चार–अंकीय बड़ी–से–बड़ी संख्या ज्ञात कीजिए, जो पूर्ण वर्ग हो।

(A) 9999 (B) 1899
(C) 9000 (D) 9801

17. सात अंकों की पूर्ण वर्ग संख्या है–

(A) 9999999 (B) 9999768

(C) 9998244 (D) 9998222

18. निम्नलिखित में से किसका वर्गमूल एक परिमेय संख्या है?

(A) 1250.49 (B) 6250.49
(C) 1354.24 (D) 5768.28

19. निम्नलिखित में से किसका वर्गमूल एक परिमेय संख्या है?

(A) 2361.96 (B) 2758.28
(C) 72568.4 (D) 62504.9

20. यदि M = 0.1 + $(0.1)^2$ + $(0.01)^2$ तथा N = 0.3 + $(0.03)^2$ + $(0.003)^2$ है, तो M + N का मान क्या है?

(A) 0.411009 (B) 0.413131
(C) 0.313131 (D) 0.131313

21. $11 \times 12 \times 13 \times 14$ के गुणनफल को एक पूर्ण वर्ग बनाने के लिए उसमें कौन–सी सबसे छोटी संख्या जोड़ी जानी चाहिए?

(A) 1 (B) 311
(C) 5 (D) 0

22. गुणनफल 684×686 को एक पूर्ण वर्ग बनाने के लिए वह सबसे छोटी संख्या कौन–सी है जो इसमें जोड़ी जानी चाहिए?

(A) 685 (B) 1
(C) 684 (D) 686

23. 1471369 का वर्गमूल ज्ञात कीजिए–

(A) 1213 (B) 1223
(C) 1203 (D) 1233

24. दो धनात्मक संख्याओं का योग 14 है तथा उनके वर्ग के मध्य का अंतर 56 है। उनके वर्ग का योग क्या है?

(A) 106 (B) 196
(C) 53 (D) 68

25. $7 \times 8 \times 9 \times 10$ के गुणनफल को एक पूर्ण वर्ग बनाने के लिए सबसे छोटी संख्या क्या जोड़ी जानी चाहिए?

(A) 144 (B) 1
(C) 289 (D) 3

26. दो संख्याओं का योग 25 है और उनके वर्ग का योग 313 है। संख्याओं की गणना करें–

(A) 15, 10 (B) 18, 7
(C) 11, 14 (D) 12, 13

27. किसी धनात्मक संख्या का इक्कीस गुना, उसके वर्ग से 100 कम है। उस धनात्मक संख्या का मान होगा–

(A) 25 (B) 26
(C) 42 (D) 41

28. $(3^2 + 7^2 + 11^2 + 13^2 + 17^2 - 1^2 - 5^2 - 9^2 - 11^2 - 15^2)$ का मान क्या है?

(A) 5 (B) 72
(C) 92 (D) 184

29. $(203 + 107)^2 - (203 - 107)^2$ का मान क्या है?

(A) 85886 (B) 86884
(C) 43442 (D) 87884

30. $12^2 - 11^2 + 14^2 - 13^2 + 16^2 - 15^2 + 18^2 - 17^2 + 20^2 - 19^2$ का मान क्या है?

(A) 135 (B) 198
(C) 172 (D) 155

31. $(1004)^2 - (998)^2$ का मान क्या है?

(A) 11012 (B) 12012
(C) 120012 (D) 1212

32. 2505 में वह कौन–सी छोटी–से–छोटी संख्या जोड़ी जानी चाहिए ताकि वह एक पूर्ण वर्ग बन जाए?

(A) 5 (B) 20
(C) 70 (D) 96

33. 709 में वह कौन–सी छोटी–से–छोटी संख्या जोड़ी जाए कि प्राप्त योगफल एक पूर्ण वर्ग हो?

(A) 8 (B) 12
(C) 20 (D) 32

34. चार अंकों की वह कौन–सी बड़ी–से–बड़ी संख्या है जो एक पूर्ण वर्ग है?

(A) 9704 (B) 9801
(C) 9901 (D) 9999

35. किसी सेना के जनरल 36562 सैनिकों से एक वर्गाकार व्यूह बनाना चाहते हैं। व्यूह की रचना करने के बाद कुछ सैनिक बच गए। बचे हुए सैनिकों की संख्या क्या थी?

(A) 36 (B) 65
(C) 81 (D) 97

व्याख्यात्मक हल

1. (B) $\sqrt{\sqrt{2500} + \sqrt{961}} = (?)^2$

$\Rightarrow \sqrt{50 + 31} = (?)^2$

$\Rightarrow \sqrt{81} = (?)^2$

$\Rightarrow 9 = (?)^2$

$\sqrt{9} = ?$

$? = 3$

2. (A) $\sqrt{5 + \sqrt{11 + \sqrt{19 + \sqrt{29 + \sqrt{49}}}}} = ?$

$\sqrt{5 + \sqrt{11 + \sqrt{19 + \sqrt{29 + 7}}}} = ?$

$\sqrt{5 + \sqrt{11 + \sqrt{19 + \sqrt{36}}}} = ?$

$\Rightarrow \sqrt{5 + \sqrt{11 + \sqrt{19 + 6}}} = ?$

$\Rightarrow \sqrt{5 + \sqrt{11 + \sqrt{25}}} = ?$

$\Rightarrow \sqrt{5 + \sqrt{11 + 5}} = ?$

$\Rightarrow \sqrt{5 + \sqrt{16}} = ?$

$\Rightarrow \sqrt{5 + 4} = ?$

$\Rightarrow \sqrt{9} = ?$

$\Rightarrow 3 = ?$

3. (A) $\dfrac{\sqrt{32} + \sqrt{48}}{\sqrt{8} + \sqrt{12}} = ?$

$= \dfrac{\sqrt{16 \times 2} + \sqrt{16 \times 3}}{\sqrt{4 \times 2} + \sqrt{4 \times 3}}$

$= \dfrac{4\sqrt{2} + 4\sqrt{3}}{2\sqrt{2} + 2\sqrt{3}}$

$= \dfrac{4(\sqrt{2} + \sqrt{3})}{2(\sqrt{2} + \sqrt{3})} = 2$

4. (A) $\sqrt{6 + \sqrt{6 + \sqrt{6 + \ldots\ldots\ldots\infty}}} = ?$

$= \dfrac{\sqrt{1 + 4x} + 1}{2}$

(में $x = 6$ लेने पर)

$= \dfrac{\sqrt{1 + 4 \times 6} + 1}{2}$

$= \dfrac{5 + 1}{2} = 3$

5. (B) $\dfrac{\sqrt{7} - 2}{\sqrt{7} + 2} = a\sqrt{7} + b$

$\Rightarrow a\sqrt{7} + b = \dfrac{\sqrt{7} - 2}{\sqrt{7} + 2} \times \dfrac{\sqrt{7} - 2}{\sqrt{7} - 2}$

$= \dfrac{(\sqrt{7} - 2)^2}{7 - 4}$

$= \dfrac{7 - 4\sqrt{7} + 4}{3}$

$a\sqrt{7} + b = \dfrac{-4}{3}\sqrt{7} + \dfrac{11}{3}$

$\Rightarrow a = \dfrac{-4}{3}$

6. (C) $\dfrac{1}{\sqrt{9} - \sqrt{8}} - \dfrac{1}{\sqrt{8} - \sqrt{7}} + \dfrac{1}{\sqrt{7} - \sqrt{6}}$

$\dfrac{1}{\sqrt{6} - \sqrt{5}} - \dfrac{1}{\sqrt{5} - \sqrt{4}}$

$= (\sqrt{9} + \sqrt{8}) - (\sqrt{8} + \sqrt{7}) +$

$(\sqrt{7} + \sqrt{6}) - (\sqrt{6} + \sqrt{5}) + (\sqrt{5} + \sqrt{4})$

$= \sqrt{9} + \sqrt{4}$

$= 3 + 2 = 5$

7. (D) $x = 7 - 4\sqrt{3}$

$x + \dfrac{1}{x} = 7 - 4\sqrt{3} + \dfrac{1}{7 - 4\sqrt{3}}$

$= 7 - 4\sqrt{3} + 7 + 4\sqrt{3}$

$= 14$

8. (D) $a = \dfrac{\sqrt{5} + 1}{\sqrt{5} - 1} \times \dfrac{\sqrt{5} + 1}{\sqrt{5} + 1}$

$= \dfrac{5 + 1 + 2\sqrt{5}}{5 - 1} = \dfrac{6 + 2\sqrt{5}}{4}$

$= \dfrac{3 + \sqrt{5}}{2}$

तथा $b = \dfrac{\sqrt{5} - 1}{\sqrt{5} + 1} \times \dfrac{\sqrt{5} - 1}{\sqrt{5} - 1}$

$$= \frac{5+1-2\sqrt{5}}{5-1}$$

$$= \frac{6-2\sqrt{5}}{4} = \frac{3-\sqrt{5}}{2}$$

$$ab = \frac{\sqrt{5}+1}{\sqrt{5}-1} \times \frac{\sqrt{5}-1}{\sqrt{5}+1} = 1$$

यहाँ $\frac{a^2+ab+b^2}{a^2-ab+b^2}$

$$= \frac{\left(\frac{3+\sqrt{5}}{2}\right)^2 + 1 + \left(\frac{3-\sqrt{5}}{2}\right)^2}{\left(\frac{3+\sqrt{5}}{2}\right)^2 - 1 + \left(\frac{3-\sqrt{5}}{2}\right)^2}$$

$$= \frac{9+6\sqrt{5}+5+4+9-6\sqrt{5}+5}{9+6\sqrt{5}+5-4+9+5-6\sqrt{5}}$$

$$= \frac{18+10+4}{18+10-4} = \frac{32}{24} = \frac{4}{3} = 1.33$$

9. (A) अन्तिम पंक्ति में विद्यार्थियों की अभीष्ट संख्या $= \sqrt{1369} = 37$

10. (D) 120 व 300 के मध्य के पूर्ण वर्ग इस प्रकार होंगे $(11)^2, (12)^2, (13)^2, (14)^2, (15)^2, (16)^2, (17)^2$

अभीष्ट योगफल $= 121 + 144 + 169 + 196 + 225 + 256 + 289 = 1400$

11. (C) $(31)^2 < 1000 < (32)^2$

$\Rightarrow \quad (32)^2 = 1024$

$\therefore$ अभीष्ट संख्या $= 1024 - 1000 = 24$

12. (B) $10^3 A + A = A(1000+1) = A \times 1001$

प्रश्नानुसार यह एक पूर्ण वर्ग संख्या है। जैसा हम जानते हैं कि पूर्ण संख्या के लिए किसी संख्या का उसी संख्या से गुणा होना चाहिए।

उदाहरण के लिए $= 24 \times 24$ जहाँ 576 एक पूर्ण वर्ग संख्या है।

इसलिए, $A \times 1001 = 1001 \times 1001$

$\therefore A = 1001$

$\therefore$ A में न्यूनतम अंकों की संख्या = 4

13. (D) माना दो सतत् विषम संख्याएँ x तथा $(x+2)$ हैं, तब

$x(x+2) = 6723$

$x^2 + 2x - 6723 = 0$

$(x-81)(x+83) = 0$

$\therefore x = 81, -83$

अत: विषम संख्याएँ = 81 तथा 83

$\therefore$ अभीष्ट वर्गमूल $= \sqrt{81} = 9$

14. (B) $(272)^2 - (128)^2 = (272+128)(272-128)$

$= 400 \times 144$

अभीष्ट वर्गमूल $= \sqrt{400 \times 144}$

$= 20 \times 12 = 240$

15. (A) $\sqrt{9+4\sqrt{5}}$

$$= \sqrt{\left(\sqrt{5}\right)^2 + 2^2 + 2\times2\times\sqrt{5}}$$

$$= \sqrt{\left(\sqrt{5}+2\right)^2}$$

$$= \sqrt{5}+2$$

इसी प्रकार,

$\sqrt{9-4\sqrt{5}} = -\sqrt{5}+2$

प्रश्न से,

$$\frac{\sqrt{5}}{\sqrt{9+4\sqrt{5}}+\sqrt{9-4\sqrt{5}}}$$

$$= \frac{\sqrt{5}}{\sqrt{5}+2+\sqrt{5}-2}$$

$$= \frac{\sqrt{5}}{2\sqrt{5}} = \frac{1}{2}$$

16. (D) चार अंकों की बड़ी–से बड़ी संख्या = 9999

$\sqrt{9999} =$

	99
9	$\overline{99}\,\overline{99}$
+9	−81
189	1899
9	−1701
	198 शेषफल

अभीष्ट संख्या = 9999 − 198 = 9801

17. (C) सात अंकों की पूर्ण वर्ग संख्या

= 9998244

	3162
3	$\overline{9}\,\overline{99}\,\overline{82}\,\overline{44}$
3	−9
61	99
+1	−61
626	3882
+6	−3756
6322	12644
+2	−12644

18. (C) $\sqrt{1250.49} = 35.362268....$

$\sqrt{6250.49} = 79.060040...$

$\sqrt{1354.24} = 36.8$

$\sqrt{5768.28} = 75.949193...$

अत: 1354.24 का वर्गमूल एक परिमेय संख्या है।

19. (A) $\sqrt{2361.96} = 48.6$ जो कि एक परिमेय संख्या है।

20. (A) $M = 0.1 + (0.1)^2 + (0.01)^2$

$M = 0.1 + 0.01 + 0.0001 = 0.1101$

और $N = 0.3 + (0.03)^2 + (0.003)^2$

$N = 0.3 + 0.0009 + 0.000009$

$= 0.300909$

अत: $M + N = 0.1101 + 0.300909$

$= 0.411009$

21. (A) यहाँ, $11 \times 12 \times 13 \times 14 = 24024$

$\because$ उपर्युक्त संख्या के निकटतम वाली पूर्ण वर्ग संख्या = 24025

जो कि 155 का पूर्ण वर्ग है।

$\therefore$ उपर्युक्त गुणनफल में जोड़े जाने वाली सबसे छोटी संख्या = 1

$[\because 24024 + 1 = 24025 = (155)^2]$

22. (B) $684 \times 686 = 469224$

उपर्युक्त गुणनफल के निकटतम वाली पूर्ण वर्ग संख्या = 469225

अत: अभीष्ट सबसे छोटी संख्या

= 469225 − 469224

= 1

23. (A) भाग विधि से हल करने पर,

	1213
1	$\overline{1}\,\overline{47}\,\overline{13}\,\overline{69}$
+1	−1
22	47
+2	−44
241	313
+1	−241
2423	7269
+1	−7269
	×

अत: $\sqrt{1471369} = \sqrt{1213 \times 1213}$

$= 1213$

24. (A) माना, दो धनात्मक संख्याएँ x तथा y हैं और $x > y$

प्रश्न से,

$x + y = 14 \quad ...(i)$

और $x^2 - y^2 = 56 \quad ...(ii)$

सूत्र से,

$(x+y)(x-y) = x^2 - y^2$

$\Rightarrow \quad x - y = \frac{56}{14}$

[समी. (i) व (ii) से]

$\Rightarrow \quad x - y = 4 \quad ...(iii)$

समी. (i) व (iii) को हल करने पर,

$x = 9, y = 5$

अत: $x^2 + y^2 = (9)^2 + (5)^2$

$= 81 + 25 = 106$

25. (B) $7 \times 8 \times 9 \times 10 = 5040$

$\because$ उपर्युक्त गुणनफल के निकटतम वाली पूर्ण वर्ग संख्या $= 5041$

जो कि 71 का पूर्ण वर्ग है।

$\therefore$ अभीष्ट न्यूनतम संख्या

$= 5041 - 5040 = 1$

26. (D) माना, संख्याएँ x तथा y हैं, और $x > y$

प्रश्न से,

$x + y = 25$ ...(i)

और $x^2 + y^2 = 313$ ...(ii)

सूत्र से,

$(x + y)^2 = x^2 + y^2 + 2xy$

$\Rightarrow$ $2xy = (25)^2 - 313$

$\Rightarrow$ $2xy = 312$

पुन: सूत्र से,

$(x - y)^2 = x^2 + y^2 - 2xy$

$= 313 - 312 = 1$

$\Rightarrow$ $x - y = 1$ ...(iii)

समी. (i) व (ii) को हल करने पर,

$x = 13, \ y = 12$

27. (A) माना, अभीष्ट धनात्मक संख्या $= m$

प्रश्न से,

$21m = m^2 - 100$

या $m^2 - 21m - 100 = 0$

या $(m - 25)(m + 4) = 0$

या $m = 25 \quad (\because m \neq -4)$

28. (D) $(3^2 + 7^2 + 11^2 + 13^2 + 17^2 - 1^2 - 5^2 - 9^2 - 11^2 - 15^2)$

$= (9 + 49 + 121 + 169 + 289) - (1 + 25 + 81 + 121 + 225)$

$= 637 - 453$

$= 184$

29. (B) $(203 + 107)^2 - (203 - 107)^2$

माना, $203 = m$ और $107 = n$

तब, व्यंजक $(m + n)^2 - (m - n)^2$

$= 4\,mn$ (सूत्र से)

m तथा n के मान पुन: रखने पर,

$= 4 \times 203 \times 107$

$= 86884$

30. (D) $12^2 - 11^2 + 14^2 - 13^2 + 16^2 - 15^2 + 18^2 - 17^2 + 20^2 - 19^2$

उपर्युक्त व्यंजक को $a^2 - b^2$ सर्वसमिका द्वारा हल करने पर,

$= (12 - 11)(12 + 11) + (14 - 13)(14 + 13) + (16 - 15)(16 + 15) + (18 - 17)(18 + 17) + (20 - 19)(20 + 19)$

$= 23 + 27 + 31 + 35 + 39$

$= 155$

31. (B) $(1004)^2 - (998)^2$

$\because a^2 - b^2 = (a + b)(a - b)$ से,

$= (1004 + 998)\,(1004 - 998)$

$= 2002 \times 6$

$= 12012$

32. (D) 2505 के निकटतम वाली पूर्ण वर्ग संख्या

$= 2601$

जो कि 51 का पूर्ण वर्ग है।

$\therefore$ जोड़े जाने वाली अभीष्ट न्यूनतम संख्या

$= 2601 - 2505$

$= 96$

33. (C) $\because \sqrt{709} = 26.62 > 26$

$\therefore$ संख्या 709 में जोड़ने के लिए न्यूनतम संख्या होगी

$= (27)^2 - 709$

$= 729 - 709 = 20$

34. (B) $\because$ 4-अंकों की सबसे बड़ी संख्या $= 9999$

और $\sqrt{9999} = 99.99 > 99$

अत: $(99)^2 = 9801$ सबसे बड़ी संख्या होगी।

35. (C)

	191
1	36562
+1	−1
29	265
+9	−261
381	462
+1	−381
	81

$\therefore 36562 = 191 \times 191 + 81$ (शेषफल)

अत: शेष सैनिकों की संख्या $= 81$

q q

अध्याय 1

अपठित गद्यांश

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 5 तक)

गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए–

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नई चीज की खोज करता है, किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें– न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही, लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है, जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें, पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

1. 'संस्कृत' का अर्थ है–
- (A) आविष्कार करने वाला
- (B) भाषा का नाम
- (C) सभ्य
- (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. वास्तविक संस्कृत व्यक्ति वह है, जो–
- (A) नये आविष्कारों का प्रयोग करता है
- (B) संस्कृत भाषा जानता है
- (C) तथ्यों को याद करता है
- (D) नये आविष्कार करे

3. सभ्य व्यक्ति वह है, जो–
- (A) अच्छे कपड़ा पहनता हो
- (B) शिक्षित हो
- (C) नये आविष्कार करता हो
- (D) जो आविष्कारों का ज्ञाता हो

4. 'विद्यार्थी' शब्द का सन्धि–विच्छेद है–
- (A) विद्या + आर्थी (B) विद्या + थीं
- (C) विद्या + अर्थी (D) वि + द्यार्थी

5. "न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की" वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिये–
- (A) न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की
- (B) न्यूटन के द्वारा गुरुत्वाकर्षण बल की खोज की गयी
- (C) गुरुत्वाकर्षण बल न्यूटन ने खोजा
- (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

निर्देश (प्रश्न संख्या 6 से 10 तक)

नीचे दिए गए गद्यांश को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए–

जीवन में बहुत अंधकार है और अंधकार की ही भाँति अशुभ और अनीति है। कुछ लोग इस अंधकार को स्वीकार कर लेते हैं और तब उनके भीतर जो प्रकाश तक पहुँचने और पाने की आकांक्षा थी, वह क्रमशः क्षीण होती जाती है। मैं अंधकार की इस स्वीकृति को मनुष्य का सबसे बड़ा पाप कहता हूँ। यह मनुष्य का स्वयं अपने प्रति किया गया अपराध है। उसके दूसरों के प्रति किए गए अपराधों का जन्म इस मूल पाप से ही होता है। यह स्मरण रहे कि जो व्यक्ति अपने ही प्रति इस पाप को नहीं करता है, वह किसी के भी प्रति कोई पाप नहीं कर सकता है, किन्तु कुछ लोग अंधकार के स्वीकार से बचने के लिए उसके अस्वीकार में लग जाते हैं। उनका जीवन अंधकार के निषेध का ही सतत् उपक्रम बन जाता है।

6. गद्यांश में 'अंधकार' शब्द किस ओर संकेत करता है?
- (A) बुराइयों और कठिनाइयों की ओर
- (B) अपराधों की ओर
- (C) गरीबी की ओर
- (D) पाप की ओर

7. लेखक ने किसे सबसे बड़ा पाप कहा है–
- (A) मनुष्य का अपने प्रति पाप न करना
- (B) अंधकार को स्वीकार न करना
- (C) अंधकार को स्वीकार कर लेना
- (D) प्रकाश पाने की क्षीण आकांक्षा

8. जब व्यक्ति स्वयं के प्रति किये गये, अन्याय, शोषण के विरुद्ध आवाज नहीं उठाता, तो–
- (A) वह केवल अपने प्रति अन्याय करता है
- (B) इससे शान्ति का माहौल बना रहता है
- (C) वह दण्ड का अधिकारी बन जाता है
- (D) इससे दूसरों के प्रति अन्याय, शोषण को बढ़ावा मिलता है

9. 'अंधकार का निषेध' किस ओर संकेत करता है?
- (A) समाज में फैले अंधकार को प्रकाश में बदल देना
- (B) समाज को अंधकार से मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील रहना
- (C) यह मानना कि समाज में अन्याय, शोषण, बुराइयाँ नहीं हैं
- (D) अन्याय, शोषण, बुराइयों को सदा के लिए समाप्त करना

10. इस गद्यांश का मुख्य उद्देश्य है–
- (A) अन्याय और बुराइयों को दूर करने के लिए प्रेरित करना
- (B) तरह–तरह के लोगों की विशेषतायें बताना
- (C) पाप और पुण्य की व्याख्या करना
- (D) अंधकार और प्रकाश की व्याख्या करना

निर्देश (प्रश्न संख्या 11 से 15 तक)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर इस गद्यांश के आधार पर दीजिए–

जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है, उन सबके प्रति उत्कण्ठापूर्ण आनन्द उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है। कष्ट या हानि के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य मीमांसकों ने इसी दृष्टि से युद्धवीर, दानवीर, दयावीर इत्यादि भेद किए हैं। इनमें सबसे प्राचीन और प्रधान युद्धवीरता है, जिसमें आघात, पीड़ा या मृत्यु की परवाह नहीं रहती। इस प्रकार की वीरता का प्रयोजन अत्यन्त प्राचीन काल से चला आ रहा है, जिसमें साहस और प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर पहुँचते हैं, पर केवल कष्ट या पीड़ा सहन करने के साहस में ही उत्साह का स्वरूप स्फुरित नहीं होता। उसके साथ आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कण्ठा का योग चाहिए।

11. सबसे प्राचीन वीरता कौन-सी है ?
- (A) वाक्वीरता (B) दानवीरता
- (C) युद्धवीरता (D) दयावीरता

12. युद्धवीरता के लिए किस प्रकार की प्रह्णति अपेक्षित है ?

(A) चतुराई और भीरुता

(B) चंचलता और अस्थिरता

(C) धृष्टता और साहस

(D) साहस, प्रयत्न और कष्ट सहने का धीरज

13. उत्कण्ठापूर्ण आनन्द किसके अन्तर्गत लिया जाता है ?

(A) उत्साह के अन्तर्गत

(B) वीरता के अन्तर्गत

(C) युद्ध के अन्तर्गत

(D) दान के अन्तर्गत

14. साहित्य मीमांसकों ने वीरता के कौन–कौन से भेद किए हैं ?

(A) युद्धवीर, दानवीर और दयावीर

(B) कर्मवीर और धर्मवीर

(C) अध्यवसायी और ईमानदार

(D) शूरवीर और परिश्रमी

15. उत्साह के भेद किस आधार पर किए गए हैं?

(A) उत्साह के आधार पर

(B) दुर्बलता के आधार पर

(C) पीड़ा या आघात के आधार पर

(D) कष्ट या हानि के भेद के आधार पर

निर्देश (प्रश्न संख्या 16 से 20 तक)

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए।

जलवायु परिवर्तन को समर्थनीय विकास का सर्वाधिक गम्भीर खतरा माना जाता है। इसका पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक गतिविधि, प्राकृतिक संसाधनों और भौतिक अवसंरचना पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वैश्विक जलवायु स्वाभाविक रूप से परिवर्तित होती रहती है। जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी अन्तर को ज्ञापित करने वाले सरकारी पैनल (आई.पी.सी.सी.) के अनुसार जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को पहले ही प्रेक्षित किया जा चुका है और वैज्ञानिक निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि सतर्कता और शीघ्रतापूर्वक कार्रवाई किया जाना आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन के प्रति भेद्यता सिर्फ भूगोल से नहीं जुड़ी है अथवा सिर्फ प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर नहीं है, बल्कि जलवायु परिवर्तन के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आयाम भी हैं, जो इस बात को प्रभावित करते हैं कि किस प्रकार से जलवायु परिवर्तन विभिन्न समूहों को प्रभावित करते हैं। निर्धन व्यक्तियों के पास प्राकृतिक आपदाओं जैसे सूखा, बाढ़, महाचक्रवात आदि के कारण सम्पत्ति को होने वाली क्षति की पूर्ति करने के लिए शायद ही बीमा होता है। निर्धन समुदाय तो गरीबी और जलवायु बदलाव की विद्यमान चुनौतियों से पहले ही जूझ रहा है और जलवायु परिवर्तन के कारण अनेक के लिए उससे जूझने और यहाँ तक कि अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल हो जाएगा। यह महत्वपूर्ण है कि प्रकृति के बदलते आयामों के साथ सामंजस्य बैठाने में इन समुदायों की सहायता की जानी चाहिए। अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज अनिश्चित भविष्य के साथ सामंजस्य बिठाने में अपने को बेहतर ढंग से सक्षम बनाता है। जलवायु परिवर्तन के साथ अनुकूलन के तहत समुचित सामंजस्य और परिवर्तन करने के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को कम करने (सकारात्मक प्रभावों का फायदा उठाने) के लिए सही उपाय किए जाते हैं। इन उपायों में प्रौद्योगिकीय विकल्प यथा : बढ़ी हुई समुद्री सुरक्षा अथवा टिलुओं पर बाढ़-रक्षित घर से लेकर व्यक्तिगत स्तर पर व्यवहारगत परिवर्तन जैसे सूखे के समय में पानी का कम प्रयोग शामिल है। अन्य रणनीतियों में चरम घटनाओं के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली, बेहतर जल प्रबन्धन, उन्नत जोखिम प्रबन्धन, विभिन्न बीमा विकल्प और जैव-विविधता संरक्षण सम्मिलित हैं। वैश्विक तापन वृद्धि के कारण जिस गति से जलवायु में परिवर्तन हो रहा है यह अत्यावश्यक हो जाता है कि जलवायु परिवर्तन के प्रति विकासशील देशों की भेद्यता को कम किया जाए और उनकी अनुकूलन क्षमता को बढ़ाया जाए तथा राष्ट्रीय अनुकूलन नीतियाँ कार्यान्वित की जाएँ। जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन समुदाय से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सभी स्तरों पर सामंजस्य और परिवर्तनों की माँग करता है। वर्तमान और भविष्य की जलवायु के साथ सामंजस्य बिठाने हेतु समुदायों को अपने सर्वाधिक पारम्परिक ज्ञान का उपयोग करने और अपनी आजीविका के विविधीकरण के साथ-साथ समुचित प्रौद्योगिकियों को अपनाने सहित अपनी नम्यता बनानी चाहिए। सरकारी और स्थानीय हस्तक्षेपों के साथ तालमेल बिठाते हुए सामंजस्य बिठाने वाली स्थानीय रणनीतियों और ज्ञान का प्रयोग किया जाना चाहिए। अनुकूलन सम्बन्धी हस्तक्षेप राष्ट्रीय परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। जलवायु सम्बन्धी बदलावों और चरम मौसमी घटनाओं के साथ सामंजस्य बिठाने के सम्बन्ध में स्थानीय समुदायों के पास वृहत ज्ञान और अनुभव है। स्थानीय समुदायों का हमेशा से उद्देश्य अपने जलवायु परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाना रहा है। ऐसा करने के लिए उन्होंने विगत के मौसमी पैटर्नों के अपने अनुभव के आधार पर अपने संसाधनों और संचित ज्ञान के अनुरूप तैयारियाँ की हैं। इसमें वे समय भी शामिल रहे हैं जब उन्हें बाढ़, सूखा और तूफान जैसी चरम मौसमी घटनाओं से प्रतिक्रिया करना और उनसे उबरना पड़ा है। सामंजस्य बिठाने की स्थानीय रणनीतियाँ अनुकूलन के नियोजन में महत्वपूर्ण तत्व रही हैं। जलवायु परिवर्तन की वजह से समुदायों को बार-बार चरम जलवायु स्थितियों तथा नई जलवायु स्थितियों और चरम स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। पारम्परिक ज्ञान से उन समुदायों को जो वैश्विक तापन की वजह से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को महसूस कर रहे हैं, जलवायु परिवर्तन के साथ सामंजस्य बिठाने तथा कुशल, समुचित और समयसिद्ध उपाय ढूँढ़ने में सहायता मिलेगी।

16. जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए विकासशील देशों को अत्यावश्यक रूप से निम्नलिखित में से क्या करने की जरूरत है ?

(A) अपने स्तर पर राष्ट्रीय अनुकूलन नीति का कार्यान्वयन

(B) अल्पावधि योजनाएँ अपनाना

(C) प्रौद्योगिकीय समाधन अपनाना

(D) जलवायु परिवर्तन कर लगाना

17. नीचे जलवायु परिवर्तन के प्रति निर्धन व्यक्तियों की भेद्यता के कारक दिए गए हैं। सही उत्तर वाले कूट का चयन करें।

1. प्राकृतिक संसाधनों पर उनकी निर्भरता
2. भौगोलिक कारण
3. वित्तीय संसाधनों की कमी
4. पारम्परिक ज्ञान का अभाव

कूट :

(A) 2, 3 और 4 (B) 1, 2, 3 और 4

(C) केवल 3 (D) 1, 2 और 3

18. अनुकूलन एक प्रक्रिया के रूप में समाजों को निम्नलिखित में से किसके साथ सामंजस्य बिठाने में समर्थ बनाता है ?

1. अनिश्चित भविष्य
2. सामंजस्य और परिवर्तन
3. जलवायु परिवर्तन का नकारात्मक प्रभाव
4. जलवायु परिवर्तन का सकारात्मक प्रभाव

निम्नलिखित कूट में से सर्वाधिक उपयुक्त का चयन करें :

(A) 1 और 3 (B) 2, 3 और 4

(C) केवल 3 (D) 1, 2, 3 और 4

19. इस गद्यांश का संकेन्द्रिक बिन्दु है—

(A) क्षेत्रीय और राष्ट्रीय प्रयासों के बीच समन्वय

(B) जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन

(C) जलवायु परिवर्तन के सामाजिक आयाम

(D) पारम्परिक ज्ञान को समुचित प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ना

20. पारम्परिक ज्ञान का उपयोग निम्नलिखित में से किसके माध्यम से किया जाना चाहिए ?

(A) राष्ट्रीय परिस्थितियों में सुधार द्वारा

(B) सरकार और स्थानीय हस्तक्षेपों के बीच तालमेल से

(C) आधुनिक प्रौद्योगिकी द्वारा

(D) इसके प्रचार-प्रसार द्वारा

निर्देश (प्रश्न संख्या 21 से 25 तक)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राजनीति में साहित्यिक अरुचि के सम्बन्ध में ऐसा प्रतीत होता है कि वह साहित्यिक प्रस्तुति के विषय के रूप में काफी हद तक राजनीति के अस्पष्ट व्यवहार पर अधिक ध्यान केन्द्रित नहीं करता है, लेकिन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि इसे साहित्य में प्रायः कैसे चित्रित किया जाता है ? अर्थात् ऐसी प्रस्तुति की राजनीति क्या है ? राजनीतिक उपन्यास अधिकांशतः केवल राजनीति के बारे में एक उपन्यास नहीं होता है, अपितु उसकी

अपनी राजनीति होती है। इसलिए वह हमें केवल यह नहीं बताता है कि चीजें कैसी हैं ? अपितु इनसे सम्बन्धित विचारों को स्पष्ट रूप से निश्चित सोच प्रदान करता है कि चीजें कैसी होनी चाहिए ? और यह बताता है कि किसी को सही-सही ऐसा सोचना और करना चाहिए कि चीजें वांछित दिशा में अग्रसर हों, संक्षेप में वह पाठकों को कारण या विचारधारा विशेष में बदलना या सूचीबद्ध करना चाहता है। यह प्रायः साहित्य नहीं होता है (यह केवल अत्यधिक परिचित पदबन्ध है) लेकिन एक प्रचार होता है। इससे साहित्यिक भावना का अतिक्रमण ही होता है, जिससे हम विश्व को भली-भाँति समझते हैं और हमारी सहानुभूतियों का प्रभाव-क्षेत्र व्यापक होता है एवं हमारी सोच और सहानुभूति को कट्टर प्रतिबद्धता से संकीर्ण न करे जैसा कि जॉन कीट्स ने कहा है-''हमें ऐसे काव्य से घृणा होती है, जो हम पर लाद दिया जाता है।'' दूसरा कारण कि क्यों राजनीति उच्च प्रकार की साहित्यिक प्रस्तुति के प्रति अनुकूल आचरण नहीं करती है, यह है कि राजनीति अपने स्वभाव से ही विचार और विचारधारा से निर्मित होती है। यदि राजनीतिक स्थिति अपने को उपयुक्त साहित्यिक सम्मान नहीं दे पाती है तो इस सम्बन्ध में राजनीतिक विचार और भी गम्भीर समस्या पैदा करते हैं। साहित्य के सम्बन्ध में यह तर्क दिया जाता है कि यह बौद्धिक अमूर्त विचारों की बजाय मानव अनुभवों के बारे में होता है। यह मानव जाति की 'महसूस की गई वास्तविकता' पर विचार करता है और नीरस तथा निर्जीव विचारों की बजाय ओजपूर्ण और स्वादपूर्ण (रस) से सम्बन्धित होता है। अमेरिका की उपन्यासकार मेरी मकर्थी ने अपनी पुस्तक 'आइडिया और नॉवल' में इस विषय पर की गई व्यापक चर्चा में कहा है कि 'उपन्यास में व्यक्त विचारों के बारे में आज भी यह महसूस किया जाता है कि वे अनाकर्षक होते हैं।'' हालाँकि ऐसा 'पहले' अर्थात् 18वीं और 19वीं सदी में नहीं था। एक ओर विचार और दूसरी ओर उपन्यास के बीच असंगति के स्पष्ट स्वरूप का उनका निरूपण सम्भवतः इस मामले में विभाजित सोच का संकेत है और एक ऐसी दुविधा है जो कई लेखकों और पाठकों के बीच है: ''विचार सशक्त होते हैं, लेकिन मैं प्रायः सोचती हूँ कि उपन्यास में उसकी आवश्यकता होती है। इसके बावजूद उपन्यासकारों के लिए यह महसूस करना काफी सामान्य है''.......विचारों विरुद्ध शस्त्र उठाते समय विचारों के प्रति आकर्षण अनुभव करना वह भी उपहास के हथियारों के साथ।

21. इस गद्यांश के अनुसार एक राजनीतिक उपन्यास प्रायः निम्नलिखित में से क्या बन जाता है ?
(A) राजनीति के लिए साहित्यिक अरुचि
(B) राजनीति की साहित्यिक प्रस्तुति
(C) अपनी ही राजनीति वाला उपन्यास
(D) राजनीति की अस्पष्ट परिपाटी का चित्रण

22. अपने स्वभाव से राजनीति का ढाँचा होता है–
(A) प्रचलित राजनीतिक स्थिति
(B) विचार और विचारधाराएँ
(C) राजनीतिक प्रचार
(D) मानव स्वभाव की समझ

23. एक राजनीतिक उपन्यास से निम्नलिखित में से किसका पता चलता है ?
(A) चीजों की वास्तविकता
(B) लेखक का बोध
(C) पाठकों की विचारधारा विशेष
(D) साहित्य की भावना

24. साहित्य में निम्नलिखित में से किस पर चर्चा की जाती है ?
(A) राजनीति में मानव अनुभव
(B) बौद्धिक अमूर्त विचार
(C) शुष्क और रिक्त विचार
(D) मानव जीवन की महसूस की गई वास्तविकता

25. उपन्यासकार मेरी मकर्थी की टिप्पणियों से निम्नलिखित में से किसका पता चलता है ?
(A) उपन्यास में आज के अनदेखे महसूस किए गए विचार
(B) राजनीतिक विचारों और उपन्यासों पर अन्तश्चेता का द्विविभाजन
(C) विचारों और उपन्यास के बीच असंगति
(D) अनन्त विचार और उपन्यास

निर्देश (प्रश्न संख्या 26 से 30 तक)

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए।

अन्तिम महायुद्ध जिसने आधुनिक विश्व की आधारशिला को लगभग विकसित कर दिया, भारतीय साहित्य पर स्वल्प प्रभाव ही डाल सका है। यह हिंसा के विरुद्ध आम रूप से बढ़ावा देने की प्रवृत्ति तथा पश्चिमी दुनिया की 'मानवीय विज्ञप्तियों के बारे में मोहभंग की स्थिति को प्रखरता से अभिव्यक्ति देने में ही सिमटा रहा। इसकी मुखर अभिव्यक्ति टैगोर की अन्तिम कविताओं एवं उनके अन्तिम महाग्रन्थ 'क्राइसिस इन सिविलाइजेशन' के माध्यम से हुई।

इस समय भारत का बुद्धिजीवी वर्ग एक नैतिक अंतर्द्वन्द्व की दशा से गुजर रहा था। एक ओर जहाँ वह संकट की घड़ी में इंग्लैण्ड के अदम्य साहस के प्रति सहानुभूति व्यक्त किए बगैर नहीं रह सका, जिसमें रूसी लोग निष्ठुर नाजी सैन्य शक्ति से लोहा ले रहे थे, चीन, जापान की सेनाओं को बूटों तले रौंदा जा रहा था: वहीं दूसरी ओर उनका अपना ही देश अपनी धरती की सैन्य शक्ति के नियंत्रण में था। भारतीय सेना, सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में दूसरी ओर से उनके देश की मुक्ति का प्रयास कर रही थी।

निष्ठाओं के ऐसे द्वन्द्व में किसी भी प्रकार की सृजनात्मक प्रवृत्ति के प्रस्फुटन की कल्पना नहीं की जा सकती। यह सही अनुमानित किया जा सकता है कि वर्ष 1947 में भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति जो 'मित्र राष्ट्रों' के आविर्भाव क्रम में महत्त्वपूर्ण है तथा जो पड़ोसी देशों, जैसे दक्षिण–पूर्व एशिया उपनिवेशवाद के अन्त के रूप में फलित हुआ, सृजनात्मक ऊर्जा के विस्फोट को गतिमान कर सकता था।

निःसन्देह ऐसा हुआ, किन्तु शीघ्र ही देश के विभाजन की यन्त्रणा, नरसंहार तथा लाखों लोगों का अपने ही देश से विस्थापित होने और महात्मा गाँधी शहादत की घटना के साथ कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण तथा बाद में बाग्लादेश में उसके अत्याचारों ने मर्मस्पर्शी लेखन को प्रेरित किया था।

इस कारण बांग्ला, हिन्दी, कश्मीरी, पंजाबी, सिंधी तथा उर्दू महत्त्वपूर्ण लेखन सामने आये, किन्तु केवल मर्मस्पर्शी अथवा भावपूर्ण लेखन अपने आपमें साहित्य को महानता प्रदान नहीं करता। इन आपदाओं के उपरान्त भी जो उत्साह एवं आत्मबल का कोश बना रहा, वो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण तथा आर्थिक विकास में आत्मसात् हुआ। महान साहित्य का अभ्युदय सर्वदा ही खलबलियों की शृंखलाओं से प्रस्फुटित हुआ है। आज का भारतीय साहित्य पहले के सापेक्ष अपने परिमाण, विस्तार एवं विविधता में अधिक समृद्ध है।

26. पिछले महायुद्ध का भारतीय साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा था ?
(A) इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।
(B) इसने हिंसा के विरुद्ध जनाक्रोश बढ़ा दिया था।
(C) इसने साहित्य की नींव को हिला दिया था।
(D) इसने पश्चिमी दुनिया को प्रबल समर्थन दिया।

27. अपने अन्तिम महाग्रन्थ (टेस्टामेन्ट) में टैगोर ने किसकी अभिव्यक्ति की ?
(A) सुभाष चन्द्र बोस को समर्थन दिया था।
(B) पश्चिमी दुनिया की 'मानवीय–विज्ञप्तियों' की पोल खोली।
(C) इंग्लैण्ड के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की।
(D) देशों की मुक्ति को प्रोत्साहन प्रदान किया।

28. महायुद्ध के समय भारतीय बुद्धिजीवियों की क्या सोच थी ?
(A) वे रूसी लोगों के कष्टों के प्रति उदासीन थे
(B) वे जापानी सैन्य शक्तिवाद के पक्ष में थे
(C) उनकी अनिश्चित निष्ठावानता ने सृज–नात्मकता को बढ़ावा दिया
(D) उन्होंने इंग्लैण्ड के दृढ़–साहस के प्रति सहानुभूति जताई

29. भारतीय साहित्य में सृजनात्मक ऊर्जा को सन्निहित करने वाले कारक की पहचान कीजिए।
(A) अपनी ही धरती का सैन्य आधिपत्य
(B) औपनिवेशिक आधिपत्य का प्रतिरोध
(C) विभाजन के फलस्वरूप अनुभूत तीव्र यन्त्रणा
(D) मित्र राष्ट्रों की विजय

30. प्रस्तुत गद्यांश का कथ्य (सन्देश) क्या है ?

(A) आपदाएँ अवश्यम्भावी होती हैं

(B) संक्षोभ–शृंखलाओं से महान् साहित्य का अभ्युदय होता है

(C) भारतीय साहित्य का कोई विशिष्ट परिदृश्य नहीं है

(D) युद्ध और स्वतन्त्रता से साहित्य का कोई लेना–देना नहीं है

निर्देश (प्रश्न संख्या 31 से 35 तक)

निम्नलिखित अनुच्छेद को सावधानीपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हाल ही में मैंने वही काम किया जहाँ आपको एक बड़े कार्ड पर हस्ताक्षर करने होते हैं और यह काम अपने आप में एक संत्रास है, विशेषकर जबकि उस बड़े कार्ड का धारक मेरे ऊपर झुका हुआ था। मैं अचानक ऐसी स्थिति में था, जैसे अग्रदीप में एक खरगोश या विनोदपूर्ण संवाद भेजने अथवा इन–जोक अथवा आरेखन के बीच उधेड़बुन की स्थिति। इसके बजाय उपलब्ध अनेक विकल्पों से अभिभूत होकर मैंने यही लिखने का निर्णय किया: ''गुड लक, ठीक है, जोएल।''

भयभीत होकर अभी मैंने महसूस किया कि मैं तो लिखना ही भूल गया हूँ। मेरा तो इतना–सा वजूद है ''कम्प्यूटर पर अक्षरों को दबाओ।'' खरीददारी हेतु मेरी सूची तो मेरे फोन के नोट प्रकार्य में छिपी है। यदि मुझे कुछ याद करने की आवश्यकता पड़ती है, तो मैं अपने आप को ई–मेल भेज देता हूँ। जब मैं कुछ सोच–विचार में संघर्ष कर रहा होता हूँ, तो मैं अपनी कलम चबाने लगता हूँ। कागज कुछ इस तरह से है जिसे मैं लैपटॉप के नीचे एकत्रित करता हूँ, ताकि टंकण हेतु इसकी ऊँचाई मेरे लिए अधिक सुविधाजनक हो जाए।

लेखन सामग्री विक्रेताओं द्वारा 1,000 किशोर बालकों के सर्वेक्षण में, बिक ने पाया कि उनके 10 में से एक किशोर के पास अपनी कलम नहीं है, उनमें से हर तीसरे ने तो कभी पत्र नहीं लिखा है एवं 13 से 19 वर्ष के आयु के आधे किशोरों को कभी भी बाध्य नहीं किया गया कि वे बैठें और धन्यवाद का पत्र लिखें। 80% से अधिक किशोरों ने तो कभी भी कोई प्रेम पत्र नहीं लिखा, 56% के घर पर पत्र का कागज नहीं है। साथ ही एक–चौथाई को तो जन्मदिन के कार्ड लिखने की अनोखी जहमत की कोई जानकारी ही नहीं हुई। अधिक–से–अधिक यदि किसी किशोर को कलम के प्रयोग की आवश्यकता हुई तो वह सिर्फ परीक्षा प्रश्न–पत्र का उत्तर लिखने में।

बिक, क्या तुमने कभी मोबाइल फोन के बारे में सुना है? क्या तुमने ई–मेल, फेसबुक और स्नैप चैटिंग के बारे में सुना है? यही भविष्य है। कलम का जमाना गया। कागज का जमाना गया। हस्तलेखन अब स्मृतिशेष रह गयी है। ''हमारे पास हस्तलेखन सर्वाधिक सृजनात्मक अभिव्यक्ति है तथा इसे रेखाचित्र (स्केचिंग), चित्रकारी अथवा फोटोग्राफी जैसी कला के अन्य रूपों की तरह समान महत्त्व दिया जाना चाहिए।''

31. लेखक के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन काम–काज की सर्वाधिक सृजनात्मक अभिव्यक्ति नहीं है ?

(A) पढ़ना

(B) हस्तलेखन

(C) फोटोग्राफी

(D) रेखाचित्र बनाना (स्केचिंग)

32. एक बड़े कार्ड पर हस्ताक्षर करने की बात आई, तो लेखक को ''अग्रदीप में किसी खरगोश'' जैसा अनुभव हुआ। इस पद का क्या अर्थ है?

(A) वेदना की स्थिति

(B) उलझन की स्थिति

(C) प्रसन्नता की स्थिति

(D) दुश्चिन्ता की स्थिति

33. बिक के सर्वेक्षण के अनुसार, कितने किशोरों के पास कोई कलम नहीं है?

(A) 100 (B) 800

(C) 560 (D) 500

34. लेखक की सम्पूर्ण सत्ता......के इर्द–गिर्द घूमती है।

1. कम्प्यूटर
2. मोबाइल फोन
3. टाइपराइटर

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए

(A) 2 और 3 (B) केवल 2

(C) 1 और 2 (D) 1, 2 और 3

35. लेखक की मुख्य चिन्ता क्या है?

(A) कि किशोर हस्तलेखन की कला भूल गए हैं

(B) कि किशोर संचार हेतु सामाजिक नेटवर्क का उपयोग करते हैं

(C) कि किशोर मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं

(D) कि किशोर कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं

निर्देश (प्रश्न संख्या 36 से 40 तक)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

यदि भारत को अपनी आन्तरिक शक्तियाँ विकसित करनी हैं, तो उसको तीन गतिशील आयामों–जनता, सर्वांगीण अर्थव्यवस्था और सामरिक हितों को ध्यान में रखते हुए प्रौद्योगिकीय अवश्यकरणीयताओं पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। ये प्रौद्योगिकीय अवश्यकरणीयताएँ एक 'चौथे आयाम' समय, पर भी ध्यान रखती हैं, जो व्यवसाय, व्यापार एवं प्रौद्योगिकी की आधुनिकी गतिशीलता से नि:सृत हैं और जो निरन्तर बदलते लक्ष्यों की ओर अग्रसर करती हैं। हमारा यह मानना है कि इस चौथे आयाम के सन्दर्भ में जनता की आकांक्षाओं में निरन्तर हो रहे परिवर्तन, वैश्विक सन्दर्भ में अर्थव्यवस्था तथा सामरिक महत्व वाले हित के परिप्रेक्ष्य में प्रौद्योगिकीय शक्तियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, मानव इतिहास के मूल में प्रौद्योगिकी विकास समाया रहता है और इसका उपयोग बढ़ती प्रतिस्पर्धा वाले बाजार में प्रौद्योगिकी शक्तियाँ अधिक उत्पादक रोजगार पैदा करने तथा मानव–कौशलों को अद्यतन बनाए रखने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्रौद्योगिकियों के व्यापक अनुप्रयोग के बिना हम आने वाले समय में अपने लोगों का सर्वांगीण विकास नहीं कर सकते। देश की सामरिक शक्तियों के साथ प्रत्यक्ष संलग्नताएँ विशेष रूप से 1990 के दशक के बाद से अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही हैं। कई मूल अनुक्षेत्रों में स्वयं भारत की शक्ति उसको भू–राजनीतिक सन्दर्भ में यथोचित शक्ति की स्थिति में रखती है। एक विकसित देश बनने के आकांक्षी किसी भी देश के लिए विभिन्न सामरिक प्रौद्योगिकियों में शक्ति–सम्पन्न होना और स्वयं की सृजनात्मक शक्तियों के माध्यम से उन्हें निरन्तर अद्यतन करते रहने की सामर्थ्य भी आवश्यक है। जन– अभिमुखी कार्यों के लिए भी चाहे विशाल स्तर पर उत्पादनशील रोजगार का सृजन हो या जनता की पोषण एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सुरक्षा सुनिश्चित करनी हो या फिर जीवन-यापन की बेहतर स्थितियाँ हों–दोनों दृष्टियों से प्रौद्योगिकी एक महत्त्वपूर्ण आगत है। प्रौद्योगिकी पर अपेक्षाकृत अधिक बल की अनुपस्थिति से निम्न स्तरीय उत्पादकता और मूल्यवान प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। निम्न स्तरीय उत्पादकता या निम्न स्तरीय, मूल्य– संवर्धन से जुड़े क्रियाकलाप अन्ततः अत्यन्त गरीब लोगों को सबसे अधिक हानि पहुँचाते हैं। हमारी जनता को एक नए जीवन तक पहुँचाना और वह जीवन प्रदान करना, जिसके लिए वह हकदार हैं, इस बारे में प्रौद्योगिकीय आवश्यकरणीयता महत्वपूर्ण है।

व्यापार और जीडीपी में वृद्धि की दृष्टि से एक बड़ी आर्थिक शक्ति होने का आकांक्षी भारत विदेश में डिजाइन को नई और निर्मित 'टर्नकी' परियोजनाओं की शक्ति या केवल संयन्त्र मशीनरी, उपकरण और तकनीकी ज्ञान के बल पर सफल नहीं हो सकता। अल्पकालिक यथार्थों पर ध्यान देते हुए हमारे उद्योगों में मध्यम एवं दीर्घकालिक रणनीतियों द्वारा औद्योगिकीय शक्तियों को विकसित करना विकसित भारत की कल्पना को साकार करने के लिए महत्वपूर्ण है।

36. विकसित भारत की कल्पना को साकार करने के लिए आवश्यक है–

(A) लघुकालिक परियोजनाओं पर ध्यान केन्द्रित करना

(B) संकेन्द्रिक प्रौद्योगिकीय शक्ति का विकास

(C) प्रमुख आर्थिक शक्ति बनने की आकांक्षा

(D) विदेश में तैयार की गई परियोजना पर निर्भरता

37. प्रौद्योगिकी की अनुपस्थिति में किसका मार्ग प्रशस्त होगा?

1. कम प्रदूषण
2. मूल्यवान प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी
3. निम्न स्तरीय मूल्य–संवर्धन
4. अत्यन्त गरीब लोगों को सबसे अधिक नुकसान

(A) 1, 2 और 4 (B) 1, 3 और 4
(C) 1, 2 और 3 (D) 2, 3 और 4

38. उपरोक्त गद्यांश के अनुसार निम्नलिखित में से कौन चौथे आयाम को इंगित करता है?

1. जन–आकांक्षाएँ
2. आधुनिक गतिशीलता
3. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अर्थव्यवस्था
4. सामरिक हित

कूट :

(A) 1, 3 और 4 (B) 1, 2 और 4
(C) 1, 2 और 3 (D) 2, 3 और 4

39. अधिक उत्पादक रोजगार पैदा करने के लिए आवश्यक है–

(A) भू–राजनीतिक सोच–विचार
(B) विशाल उद्योग
(C) प्रौद्योगिकी का व्यापक अनुप्रयोग
(D) प्रतिस्पर्धात्मक बाजार का दायरा सीमित करना

40. प्रौद्योगिकीय आगतों के लाभ का परिणाम होगा–

(A) पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों को गौण मानना
(B) हमारे लोगों को गरिमामयी जीवन तक पहुँचाना
(C) अनियन्त्रित प्रौद्योगिकीय संवृद्धि
(D) संयन्त्र मशीनरी का आयात

निर्देश (प्रश्न संख्या 41 से 45 तक)

अग्रलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके नीचे दिये गये बहुविकल्पीय प्रश्नों में सही विकल्प का चयन करें।

'कल्पना' और 'व्यक्तित्व' की, पाश्चात्य समीक्षा–क्षेत्र में, इतनी अधिक मुनादी हुई कि काव्य के और सब पक्षों से दृष्टि हटकर इन्हीं दो पर जा जमी। 'कल्पना' काव्य का बोध पक्ष है। कल्पना में आई रूप–व्यापार–योजना का कवि या श्रोता को अंतः साक्षात्कार का बोध होता है। पर इस बोध पक्ष के अतिरिक्त काव्य का भाव पक्ष भी है। कल्पना को रूप योजना के लिए प्रेरित करने वाले और कल्पना में आयी हुई वस्तुओं में श्रोता या पाठक को रमाने वाली रति, करुणा, क्रोध, उत्साह, आश्चर्य इत्यादि भाव या मनोविकार होते हैं। इसी से भारतीय दृष्टि ने भावपक्ष को प्रधानता दी और रस के सिद्धांत की प्रतिष्ठा की। पर पश्चिम में 'कल्पना'–'कल्पना' की पुकार के सामने धीरे–धीरे समीक्षकों का ध्यान भाव पक्ष से हट गया और बोधपक्ष पर ही भिड़ गया। काव्य की रमणीयता उस हल्के आनंद के रूप में ही मानी जाने लगी जिस आनंद के लिए हम नई–नई सुंदर भड़कीली और विलक्षण वस्तुओं को देखने जाते हैं। इस प्रकार कवि तमाशा दिखाने वाले के रूप में और श्रोता या पाठक तटस्थ तमाशबीन के रूप में समझे जाने लगे। केवल देखने का आनंद कुछ विलक्षण को देखने का कौतूहल मात्र होता है।

41. कवि या श्रोता को अंतःसाक्षात्कार बोध किसका होता है ?

(A) व्यक्तित्व का
(B) विलक्षणता का
(C) कल्पना में आई रूप–व्यापार–योजना का
(D) मनोविकारों का

42. भारतीय दृष्टि में काव्य ने किस सिद्धांत की प्रतिष्ठा की ?

(A) रस सिद्धांत की
(B) कौतूहल सिद्धांत की
(C) कल्पना सिद्धांत की
(D) श्रोता या पाठक की तटस्थता की

43. केवल देखने का आनंद क्या है ?

(A) रसानुभूति
(B) श्रोता या पाठक को काव्य का मर्म समझाना
(C) भावपक्ष को प्रबल बनाना
(D) कुछ विलक्षण को दिखाने का कौतूहल मात्र

44. 'कल्पना' काव्य का कौन-सा पक्ष है ?

(A) भावपक्ष (B) बोध पक्ष
(C) रमणीय पक्ष (D) अलंकार पक्ष

45. काव्य में पाश्चात्य समीक्षा क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चा किस तत्व को लेकर हुई है ?

(A) भावपक्ष की
(B) रस सिद्धांत की प्रतिष्ठा की
(C) काव्य में गम्भीर रमणीयता की
(D) कल्पना और व्यक्तित्व की

निर्देश (प्रश्न संख्या 46 से 50 तक)

निम्नलिखित अवतरण के आधार पर उत्तर दीजिए। प्रश्नों के उत्तर केवल दिए गए गद्यांश पर ही आधारित होने चाहिए।

देश की उन्नति के लिए गांधीजी ने ग्रामोन्नति को सर्वोपरि माना है। भारतीय ग्राम, भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के प्रतीक हैं। ग्राम ही भारतवर्ष की आत्मा हैं और सम्पूर्ण भारत उनका शरीर। शरीर की उन्नति आत्मा की स्वस्थ स्थिति पर निर्भर है। आत्मा के स्वस्थ होने पर ही संपूर्ण शरीर में नवचेतना व नवशक्ति का संचार होता है। आज भी भारत की साठ प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में ही बसती है। गांधीजी कहा करते थे– 'भारत का हृदय गाँवों में बसता है। गाँवों की उन्नति से ही भारत की उन्नति हो सकती है। गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं।' अतः भारत की उन्नति नगरों की उन्नति पर नहीं अपितु गाँवों की उन्नति पर निर्भर करती है। अतः ग्रामोन्नति का कार्य देशोन्नति का कार्य है। महाकवि सुमित्रानंदन पंत ने 'भारतमाता ग्रामवासिनी' नामक कविता में ठीक ही कहा है कि भारतवर्ष का वास्तविक स्वरूप गाँवों में है।

46. 'ग्रामोन्नति' शब्द बना है–

(A) ग्रामों + न्नति (B) ग्रामो + नति
(C) ग्रामोन्न + ति (D) ग्राम + उन्नति

47. भारत की उन्नति निर्भर करती है–

(A) महानगरों की उन्नति पर
(B) शहरों की उन्नति पर
(C) कस्बों की उन्नति पर
(D) ग्रामों की उन्नति पर

48. किसानों को क्या बताया गया है ?

(A) उन्नति का प्रतीक
(B) आलसियों का अवतार
(C) सेवा और परिश्रम का अवतार
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

49. शरीर में चेतना व शक्ति का संचार कब होता है ?

(A) जब शरीर स्वस्थ हो
(B) जब लोग स्वस्थ हों
(C) जब आत्मा स्वस्थ हो
(D) जब कोई भी स्वस्थ न हो

50. भारतीय ग्राम किसके प्रतीक हैं ?

(A) यूरोप की प्राचीन सभ्यता के
(B) भारत की प्राचीन संस्कृति के
(C) भारत की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (A)	**2.** (D)	**3.** (D)	**4.** (C)	**5.** (B)
6. (A)	**7.** (C)	**8.** (D)	**9.** (C)	**10.** (A)
11. (C)	**12.** (D)	**13.** (A)	**14.** (A)	**15.** (D)
16. (A)	**17.** (D)	**18.** (D)	**19.** (B)	**20.** (B)
21. (C)	**22.** (B)	**23.** (B)	**24.** (D)	**25.** (C)
26. (B)	**27.** (B)	**28.** (D)	**29.** (C)	**30.** (B)
31. (A)	**32.** (B)	**33.** (A)	**34.** (C)	**35.** (A)
36. (B)	**37.** (D)	**38.** (A)	**39.** (C)	**40.** (B)
41. (C)	**42.** (A)	**43.** (D)	**44.** (B)	**45.** (D)
46. (D)	**47.** (D)	**48.** (C)	**49.** (C)	**50.** (C)

Chapter 3

Pronoun

1. Definition of Pronoun

A **Pronoun** is a word used in place of a Noun. Pronoun (सर्वनाम) वह शब्द है जो Noun (संज्ञा) के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। E.g. **I, you, he, she etc.**

Noun की पुनरावृत्ति से बचने के लिए Pronoun का प्रयोग किया जाता है।

2. Kind of Pronoun

There are **eight** kinds of Pronouns. Pronouns आठ प्रकार के होते हैं :

(I) Personal Pronouns	(II) Reflexive Pronouns
(III) Demonstrative Pronouns	(IV) Distributive Pronouns
(V) Reciprocal Pronouns	(VI) Indefinite Pronouns
(VII) Interrogative Pronouns	(VIII) Relative Pronouns.

(I) PERSONAL PRONOUNS

Personal Pronouns उन व्यक्तियों को इंगित करते हैं जो बात कर रहे हैं।

Examples :
- **I** told you **he** will come.
- **He** is going to the market.

वक्ता के आधार पर इन्हें तीन Persons में विभाजित किया जा सकता है :

(i) First Person—I, we. It denotes the person who is speaking. First Person वक्ता को दर्शाता है।

(ii) Second Person—Thou, you. It denotes the person who is listening or is spoken to.

Second Person उस व्यक्ति की ओर इंगित करता है जो श्रोता है या जिससे बात की जा रही है।

(iii) Third Person denotes the person talked about.

Third Person वह है जिसके बारे में बात की जा रही है।

Third Person—He she, it, they etc.

- **USES OF 'IT'**
  - **Natural Incident (प्राकृतिक घटना)** जैसे—season, weather, earthquake आदि अथवा समय (time), दिन (day), वर्ष (year) को बतलाने के लिए 'It' का प्रयोग किया जाता है। इसे Neutral/Introductory 'It' कहा जाता है :

    देखिए :

    It is winter. (✓)
    It is five o'clock. (✓)
    It is raining. (✓)
  - **किसी निर्जीव (lifeless)** वस्तु के लिए It का प्रयोग किया जाता है।

    देखिए :

    It is a pen. (✓)
    It is a chair. (✓)
  - **छोटे-छोटे ज़ानवर अथवा कीड़े-मकोड़े के लिए** It का प्रयोग किया जाता है।

    देखिए :

    It is a dog. (✓)
    It is an ant. (✓)
  - छोटे बच्चे **(Small children/babies)** जिसके लिंग (sex) की जानकारी नहीं हो, के लिए भी It का प्रयोग किया जाता है।

    देखिए :

    The child was playing with **its** toys. (✓)
    The baby is crying because **it** is hungry. (✓)
    (Here, child/baby are not known whether boy or girl)

- **ORDER OF PRONOUNS**

  जब First person, second person and third person के Pronoun एक साथ प्रयुक्त होते हैं, तो क्रम इस प्रकार होता है :
  - Second Person
  - Third Person
  - First Person

Examples :

You, he and **I** will leave for Bombay tonight.
You, I and he have to help her. (×)
You, he and I have to help her. (✓)

परन्तु, यदि गलती मानने या दोष बाँटने की बात हो, तो अच्छे आचरणवश क्रम को उल्टा कर दिया जाता है।

I, he and you have committed a sin. (×)
I, you and he have committed a sin. (✓)

(II) REFLEXIVE PRONOUNS

Reflexive Pronouns कर्त्ता पर कार्य होने को इंगित करते हैं।

The words *my-self*, *ourselves*, *yourself*, *yourselves*, *himself*, *herself*, *itself*, *themselves* Reflexive Pronouns है।

Absent, present, avail, enjoy, introduce, busy, content, pride, hurt, cheat, absent, satisfy, lay इत्यादि verbs के बाद Reflexive Pronoun का प्रयोग किया जाता है।

देखिए :

The teacher absented from the class yesterday. (×)
The teacher absented himself from the class yesterday. (✓)

(III) DEMONSTRATIVE PRONOUNS

Demonstrative Pronouns are used to point out the object.

Demonstrative Pronouns तत्त्वों को इंगित करने के लिए प्रयोग किये जाते हैं।

The words *This, these, that, those, so, such, yonder, one, former*, *latter, the same are* Demonstrative Pronouns.

Examples :
(1) **Those** sweets are more delicious.
(2) **Yonder** is the building of the Taj.

(IV) DISTRIBUTIVE PRONOUNS

Distributive Pronouns वे होते हैं जो कुछ व्यक्तियों या वस्तुओं में से किसी एक व्यक्ति या वस्तु को इंगित (refer) करें।

Each, Either, Neither Distributive Pronouns हैं।

USES OF DISTRIBUTIVE PRONOUN

Rule 1 **Each** का प्रयोग अनेक मनुष्यों या वस्तुओं में प्रत्येक मनुष्य या वस्तु को इकाई में इंगित करने के लिए होता है।

Examples :
(1) **Each** did his best for the poor.
(2) **Each** of these children gets a prize.

Rule 2 **Either** का प्रयोग दो मनुष्यों या वस्तुओं में से किसी एक को इंगित करने के लिए किया जाता है।

Examples :
(1) **Either** you or Sita can go there.
(2) **Either** of these computers can be used.

(V) RECIPROCAL PRONOUNS

Each other और **one another** Reciprocal Pronouns कहलाते हैं क्योंकि वे परस्पर क्रियाकलाप दर्शाते हैं।

Each other दो व्यक्तियों या वस्तुओं के सन्दर्भ **(case)** में प्रयुक्त होता है, **One another** दो से अधिक व्यक्ति या वस्तुओं के सन्दर्भ **(case)** में।

Examples :
(1) Neelu and Miti helped **each other.**
(2) Hari, Mohan and Rahul helped **one another.**

(VI) INDEFINITE PRONOUNS

Indefinite Pronouns व्यक्ति या वस्तुओं को सामान्य रूप में दर्शाते हैं, वे किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु को refer नहीं करते।

The Indefinite Pronouns are : *One*, *someone, any one, no one, none, same, any, somebody, anybody, everybody, nobody, something, anything, everything, nothing, all, many few, other, others, they* etc.

Example :
(1) **One** should always honour **one's** parents.
(2) **Someone** is waiting for you at the door.

(VII) INTERROGATIVE PRONOUNS

Pronouns जो प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होते हैं, Interrogative Pronouns कहलाते हैं।

Who, What and **Which** etc. are Interrogative Pronouns.

Who, What और Which आदि Interrogative Pronouns हैं।

Examples :
(1) **Who** is he ?
(2) **What** is your name ?
(3) **Which** book you want ?

(VIII) RELATIVE PRONOUNS

Relative Pronouns उन्हें कहते हैं जो किसी Noun के लिए प्रयुक्त होते हैं जो इनसे पूर्व आते हैं। वह Noun जिसे Relative Pronoun इंगित करता है, Antecedent कहलाता है।

Examples :
(1) This is the **lady** who encouraged me.
(2) This is the **book** which I mentioned.

Important Questions

Direction (Q. No. 1 to 15)

Choose the correct alternative and fill in the blanks in the following sentences :

1. Either Kamla or Girija forgot to take .... purse.
(A) her (B) hers
(C) Their (D) Them

2. ...., ... and .... have to visit the exhibition.
(A) You, he, I (B) He, you, I
(C) I, he, you (D) He, I, you

3. It was .... whom you met last night.
(A) My (B) Me
(C) I (D) Mine

4. All............glitters is not gold.
(A) the (B) that
(C) same (D) these

5. The jury agreed in...........opinion.
(A) their (B) its
(C) his (D) her

6. Ruchi is the girl .... book is with me.
(A) who (B) whose
(C) whom (D) which

7. How long have you and Sheelu known .... ?
(A) one another (B) each other
(C) everyone (D) None of these

8. .... of the three candidates are fit for the post.
(A) Neither (B) No
(C) None (D) Either

9. This book is mine and that is ....
(A) of you (B) your
(C) your's (D) yours

10. He is the friend .... I trust most.
(A) him (B) whom
(C) which (D) who

11. As the bare mountains turned green, the people found .... looking forward to spring.
(A) they (B) them
(C) their (D) themselves

12. Being .... a very hot day I remained indoors.
(A) it (B) that
(C) this (D) which

13. ....should not waste.............money.
(A) One, one (B) One's, one
(C) One, ones (D) One, one's

14. He sings better than............... .
(A) Me (B) I
(C) Mine (D) Myself

15. ...., ... and .... have confessed our fault.
(A) I, you, he (B) I, he, you
(C) You, I, he (D) You, he, I

Answers

1. (A)	**2.** (A)	**3.** (C)	**4.** (B)	**5.** (B)
6. (B)	**7.** (B)	**8.** (C)	**9.** (D)	**10.** (B)
11. (D)	**12.** (A)	**13.** (D)	**14.** (B)	**15.** (A)

अध्याय 6

कारण और प्रभाव

1. परिचय

घटनाओं की जाँच करते समय, लोग स्वाभाविक रूप से यह समझाने की कोशिश करते हैं कि घटना के घटित होने का कारण क्या था? यह खोज सामान्यतः कारण और प्रभाव के परिणाम देती है, जो इस बात पर जोर देती है कि एक घटना दूसरी घटना का कारण है, या एक घटना जो किसी अन्य घटना का कारण है उदाहरण के लिए–

पिछले हफ्ते Apple ने तिमाही घाटे की घोषणा की और शेयर बाजार 10 अंक गिरा। इस प्रकार Apple की घोषणा में गिरावट का कारण होना चाहिए।

संक्षेप में, कारण वह घटना है जो दूसरे को घटित करती है। प्रभाव वह घटना है जो कारण के बाद होती है। **परिभाषा** के अनुसार,कारण प्रभाव से पहले होने वाली घटना है और प्रभाव हमेशा कारण के बाद होता है।

इस प्रकार के प्रश्नों में, प्रत्येक प्रश्न में दो कथन दिए होते हैं और अभ्यर्थी को दोनों कथनों के बीच सम्बन्ध ज्ञात करना होता है और जाँच करनी होती है कि दोनों कथन एक–दूसरे से सम्बन्धित हैं या नहीं। कथनों को पढ़कर उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिये जो दोनों कथनों के बीच सम्बन्ध की व्याख्या करते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों से, अभ्यर्थी की तर्क और तर्कशक्ति दोनों का पता लगाया जा सकता है। इसलिए अभ्यर्थी को सलाह दी जाती है कि कथनों को अच्छी तरह से पढ़ें जिससे उपयुक्त विकल्प तक पहुँच सकें।

2. कारणों के प्रकार

एक घटना के एक से अधिक कारण हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी देश का क्रांतिकारी युद्ध। कारणों के तीन मुख्य कारण होते हैं :

I. **तत्काल कारण (Immediate cause) :** यह वह कारण है जो हाल ही में घटित हुआ है। यह एक वह स्थिति है, जिसके कारण घटना घटित होती है या इसलिए यह महत्वपूर्ण कारण है, जो घटना के घटित होने से पहले होता है और घटना के घटित होने का कारण है। उदाहरण पर विचार करते हैं। पानी को सूरज द्वारा गर्म किया जाता है और यह वायुमंडल में वाष्पित हो जाता है। एक बार फिर वायुमंडल में यह बहुत कम तापमान पर ठंडा हो जाता है और बर्फ के रूप में अवक्षेपित होता है। इसके कुछ कारण हैं जिसके कारण बर्फबारी हुई। सबसे तात्कालिक तथ्य यह है कि वर्षा का वातावरण के कम तापमान में जम जाना है।

II. **प्रमुख कारण (Principal cause) :** यह एक घटना के घटित होने का मुख्य कारण है। तात्कालिक कारण प्रमुख कारण हो सकता है या नहीं भी हो सकता है।

III. **स्वतंत्र कारण (Independent cause) :** यह वह कारण है जो घटनाओं से स्वतंत्र रूप से घटित होता है। दूसरे शब्दों में, प्रभाव और कारण का सीधा संबंध हो सकता है या कोई संबंध नहीं हो सकता है।

3. तत्काल कारण और प्रमुख कारण के बीच अंतर

यद्यपि वे समान दिखते हैं, लेकिन 'प्रमुख कारण' और 'तात्कालिक कारण' में अंतर है। प्रभाव के होने का सबसे मुख्य और महत्वपूर्ण कारण 'प्रमुख कारण' है, जबकि तात्कालिक कारण प्रभाव के होने के समय में सबसे निकट होते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आपने भारतीय इतिहास को पढ़ा है तो आप कह सकते हैं कि 1857 की क्रांति का 'प्रमुख कारण' लॉर्ड डलहौजी की दमनकारी नीतियाँ थीं, लेकिन 'तात्कालिक कारण' गाय की चर्बी लगे कारतूस थे।

कारण और प्रभाव पर आधारित प्रश्न मुख्य रूप से उम्मीदवार की निर्णय लेने की क्षमता के आधार पर दिये गए कथनों की एक जोड़ी का विश्लेषण करने और उन्हें कारण और प्रभाव के संदर्भ में सहसंबंधित करने के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं। इसमें पाँच प्रकार की संभावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं :

(i) पहले कथन में तथ्य दूसरे कथन में दिए गए तथ्य का प्रभाव है, अर्थात् दूसरा कथन उस कारण को व्यक्त करता जो पहले कथन में उल्लेखित स्थिति की ओर ले जाता है;

(ii) पहले कथन में तथ्य दूसरे कथन में चर्चा किए गए परिणाम का प्रत्यक्ष कारण बनता है;

(iii) दोनों कथन सामान्यीकृत परिणाम व्यक्त करते हैं जो किसी विशिष्ट कारण से समर्थित नहीं हो सकते हैं, लेकिन कुछ अन्य कारकों को प्रभावित कर सकते हैं;

(iv) दोनों कथन स्वतंत्र हैं और इन्हें अलग–अलग स्वतंत्र कारणों के प्रभावों के रूप में समझाया जा सकता है;

(v) दिए गए दोनों कथनों में होने वाले प्रभावों का कारण या तीसरी असम्बद्ध घटना हो सकती है, जिसे इस प्रकार दी गई घटनाओं का सामान्य कारण कहा जा सकता है।

4. कारण और प्रभाव के प्रश्नों को हल करने की नीति

परीक्षाओं में हमें सामान्यत; यह पता लगाने के लिए कहा जाता है कि क्या कोई कारण 'तत्काल कारण के साथ ही' प्रमुख कारण का है। इसका अर्थ है कि उक्त कारण दिए गए प्रभाव का प्रमुख कारण होना चाहिए और यह उक्त प्रभाव के लिए काफी अनुमानित होना चाहिए। स्पष्ट रूप से गलत विकल्पों को हटाने के लिए नीचे दिए गए निम्न चरणों का पालन कर सकते हैं :

चरण–1 सबसे पहले जाँचें कि दोनों घटनाएँ संबंधित हैं।

चरण–2 यदि कोई घटना दूसरे से पहले होती है, तो इसका मतलब है कि जो पहले हुआ वह कारण हो सकता है, क्योंकि कारण हमेशा पहले होता है, तब हम इसके प्रभाव देख सकते हैं।

चरण–3 हालाँकि, यदि दोनों घटनाएँ बीते हुए समय पर हैं, तो हम यह तय नहीं कर पाएँगे कि पहले क्या हुआ था, यहाँ सबसे सम्भव यह है कि यह

एक–दूसरे का कारण नहीं है, लेकिन यह हमेशा सच नहीं हो सकता है। इस कारण से, इस प्रकार की घटना पर अपने ज्ञान और तर्क का उपयोग करें।

निर्देश (उदाहरण 1 से 3 तक)

प्रत्येक प्रश्न में, दो कथन 1 और 2 दिए गए हैं। इनका एक कारण और प्रभाव संबंध हो सकता है या इसके स्वतंत्र कारण हो सकते हैं।

उत्तर दीजिये–

(A) यदि कथन 1 कारण है और कथन 2 इसका प्रभाव है।
(B) यदि कथन 2 कारण है और कथन 1 इसका प्रभाव है।
(C) यदि दोनों कथन स्वतंत्र कारणों के प्रभाव हैं।
(D) यदि दोनों कथन किसी सामान्य कारण के प्रभाव हैं।
(E) इनमें से कोई नहीं।

उदा. 1 : 1. श्रीलंकाई कप्तान कुमार संगकारा ने वनडे और टी–20 टीमों की कप्तानी से हटने के अपने निर्णय को सही ठहराते हुए कहा, मैं अगले विश्व कप तक 37 का हो जाऊँगा और टीम में मेरी जगह पक्की नहीं हो सकती। यह बेहतर है कि श्रीलंका का नेतृत्व अब उस खिलाड़ी द्वारा किया जाएगा जो उस टूर्नामेंट के दौरान अपने करियर के चरम पर होगा।
2. उल्लेखनीय रूप से, अधिकांश स्पिनर जिसका व्यक्तिगत प्रदर्शन नेतृत्व की भूमिका सँभालने के बाद गिरता है, कुमार संगकारा ने वास्तव में खेल के तीनों प्रारूपों में कप्तान के रूप में बेहतर बल्लेबाजी की है।

हल (C) **:** दोनों ही कथन में कही जाने वाली बात एक–दूसरे से सम्बन्धित नहीं है। अतः दोनों ही कथन स्वतंत्र कारणों के प्रभाव हैं।

उदा. 2 : 1. स्थानीय सहकारी ऋण समिति ने तत्काल प्रभाव से किसानों को ऋण देना बंद करने का निर्णय लिया है।
2. बड़ी संख्या में क्रेडिट सोसायटी के सदस्यों ने अपनी राशि का बड़ा हिस्सा क्रेडिट सोसाइटी से वापस ले लिया है।

हल (B) **:** बड़ी संख्या में सदस्यों ने क्रेडिट सोसाइटी से अपनी राशि का बड़ा हिस्सा वापस ले लिया है, इसलिए क्रेडिट सोसाइटी ने किसानों को तत्काल प्रभाव से ऋण देना बंद करने का फैसला किया है। अतः कथन 2 कारण है और कथन 1 इसका प्रभाव है।

उदा. 3 : 1. नदियों का पानी ऊपर आ जाने से जिले के नदी के किनारे के कई गाँव बह गए और कुछ लोगों ने जीवित रहने पर पेड़ के ऊपर रहने की व्यवस्था की या कोई भी और जगह चले गये जहाँ वह जा सकते थे।
2. जिला प्रशासन ने प्रभावित गाँवों को बचाने के लिए राहत टीमों को गाँवों में भेज दिया है और पास ही के गाँव में भोजन और पानी की आपूर्ति की व्यवस्था की है।

हल (A) **:** जिला प्रशासन ने गाँव को बचाने के लिए राहत टीमों को लगाया है और उनके लिए पानी और भोजन की व्यवस्था भी करायी है, क्योंकि नदी का पानी ऊपर आ जाने से कई गाँव बह गए तथा कई लोग अपनी जान बचाने के लिए पेड़ों या कोई भी सुरक्षित जगह ढूँढ कर वहाँ फँसे हुए हैं। अतः कथन 1 कारण है तथा कथन 2 इसका प्रभाव है।

उदा. 4 : प्रभाव : पिछले तीन महीनों में खाद्यान्नों और सब्जियों में लगभग 30% की वृद्धि हुई है। निम्नलिखित में से कौन–सा उपर्युक्त प्रभाव का संभावित कारण हो सकता है?
(A) किसानों ने अपनी खेती की शैली को बदलने का फैसला किया है।
(B) अन्य उत्पादों की कीमतें 30% से अधिक बढ़ गई हैं।
(C) किसानों की संख्या कम हो गई है।
(D) खेती के व्यवसाय को एक काम के रूप में नहीं देखा गया है।
(E) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

हल (B) **:** पिछले तीन महीनों में खाद्यान्नों और सब्जियों की कीमतों में लगभग 30% की वृद्धि होने का प्रमुख कारण अन्य उत्पादों की कीमतों में वृद्धि होने से है। अतः विकल्प (B) दिए गए प्रभाव का प्रमुख कारण है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्न

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 4 तक)

नीचे प्रत्येक प्रश्न में (I) और (II) दो कथन दिए गए हैं। ये कथन या तो स्वतंत्र कारण हो सकते हैं या स्वतंत्र कारणों के प्रभाव हो सकते हैं। इनमें से एक कथन दूसरे का प्रभाव हो सकता है। दोनों कथनों को पढ़िए और तय कीजिए कि निम्नलिखित उत्तरों में से कौन–सा इन दोनों कथनों में सही संबंध दर्शाता है।

उत्तर दीजिए–

(A) यदि कथन (I) कारण है और कथन (II) प्रभाव है।
(B) यदि कथन (II) कारण है और कथन (I) प्रभाव है।
(C) यदि (I) और (II) दोनों स्वतंत्र कारण हैं।
(D) यदि दोनों कथन स्वतंत्र कारण के प्रभाव हैं।
(E) यदि दोनों कथन सामान्य कारणों के प्रभाव हैं।

1. I. पिछले कुछ महीनों के दौरान शहर में महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएँ काफी बढ़ गई हैं।
II. पुलिस प्राधिकरण उन दोषियों को पकड़ने में असफल रही है जो महिलाओं के खिलाफ अपराध कर रहे हैं।

2. I. प्रधानमंत्री ने सूखाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया है और किसानों की सहायता के लिए सरकारी सहायता का वादा किया है।
II. सूखाग्रस्त क्षेत्रों के अधिसंख्य किसान सूखे से पीड़ित हैं और अपने परिवार का पेट नहीं भर पा रहे हैं।

3. I. मानसून के दूसरे माह के अंत में शहर को जल की आपूर्ति करने वाली सभी झीलें भर कर ऊपर से बहने लगी हैं।
II. मानसून के पहले दो महीनों के दौरान कई जगहों पर कई बार पानी भर जाने के कारण शहर का सामान्य जीवन बाधित हुआ है।

4. I. गन्ने की ज्यादातर फसल कीड़ों के प्रभाव में आ गई परिणामस्वरूप राज्य के किसानों को बहुत नुकसान हुआ।
II. राज्य के किसान जो पिछले साल गन्ने की खेती कर रहे थे, इस साल उसके बदले अंगूरों की खेती करने लगे हैं।

निर्देश (प्रश्न संख्या 5 से 9 तक)

नीचे प्रत्येक प्रश्न में (I) और (II) दो कथन दिए गए हैं। ये कथन या तो स्वतंत्र कारण हो सकते हैं या स्वतंत्र कारणों या सामान्य कारण के परिणाम हो सकते हैं। इनमें से एक कथन दूसरे कथन का परिणाम हो सकता है। दोनों कथनों को पढ़िए और तय कीजिए कि निम्नलिखित में से किस उत्तर का चुनाव इन दोनों कथनों के बीच सही संबंध बताता है?

उत्तर दीजिए–

(A) यदि कथन (I) कारण है और (II) उसका परिणाम है।

(B) यदि कथन (II) कारण है और कथन (I) उसका परिणाम है।

(C) यदि कथन (I) और (II) दोनों कथन स्वतंत्र कारण हैं।

(D) यदि कथन (I) और (II) दोनों कथन स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं।

(E) यदि कथन (I) और (II) दोनों कथन किसी सामान्य कारण के परिणाम हैं।

5. **I.** राज्य सरकार ने अगले शैक्षिक वर्ष से कक्षा IX के गणित के पाठ्यक्रम में परिवर्तन करने का निर्णय लिया है।

II. राज्य के बहुत से विद्यार्थी अपनी पसंद के कॉलेज में दाखिला नहीं ले पाये।

6. **I.** नगरपालिका प्राधिकारण ने शहर के मुख्य मार्ग के नीचे पाइपलाइन की मरम्मत का कार्य करने का निर्णय लिया है।

II. पद्रंह दिन की अवधि के लिए वाहनों के आवागमन का वैकल्पिक सड़कों से विपथन किया गया है।

7. **I.** पिछली तिमाही के दौरान विमान यात्रा करने वाले लोगों की संख्या काफी कम हो गई।

II. पिछली तिमाही के दौरान लंबी दूरी की ट्रेनों से यात्रा करने वाले लोगों की संख्या काफी कम हो गई।

8. **I.** वर्तमान वित्तीय वर्ष के अंत में विनिर्माण कंपनी के अधिकांशतः कर्मचारियों को भारी–भरकम बोनस मिला।

II. वर्तमान वित्तीय वर्ष में विनिर्माण कंपनी ने बहुत लाभ कमाया है।

9. **I.** बहुत से वृद्ध लोग इलाके के युवाओं द्वारा सतत् सताये जा रहे हैं।

II. इलाके के बहुत से बच्चे देर शाम तक खेलते हैं।

निर्देश (प्रश्न संख्या 10 से 14 तक)

नीचे प्रत्येक प्रश्न में (1) और (2) दो कथन दिए गए हैं। ये कथन या तो स्वतंत्र कारण हो सकते हैं या स्वतंत्र कारणों या सामान्य कारण के परिणाम हो सकते हैं। इनमें से एक कथन दूसरे कथन का परिणाम हो सकता है। दोनों कथनों को पढ़िए और तय कीजिए कि निम्मिलिखित में से किस उत्तर का चुनाव इन दोनों कथनों के बीच सही संबंध बताता है?

उत्तर दीजिए–

(A) यदि कथन (1) कारण है और कथन (2) उसका परिणाम है।

(B) यदि कथन (2) कारण है और कथन (1) उसका परिणाम है।

(C) यदि कथन (1)और (2) दोनों कथन स्वतंत्र कारण हैं।

(D) यदि कथन (1) और (2) दोनों कथन स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं।

(E) यदि कथन (1) और (2) दोनों कथन किसी सामान्य कारण के परिणाम हैं।

10. **कथन 1 :** पवित्र तीर्थ–मंदिर की यात्रा के लिए बहुत से तीर्थ यात्रियों ने सरकारी परिवहन का उपयोग किया।

कथन 2 : प्राइवेट परिवहन से यात्रा की लागत बहुत अधिक होती है।

11. **कथन 1 :** कंपनी के बहुत से कर्मचारी शुक्रवार को एक दिन की छुट्टी पर गए।

कथन 2 : गुरुवार और शनिवार दोनों के लिए कंपनी ने छुट्टी घोषित की थी।

12. **कथन 1 :** शहर को पेय जल आपूर्ति करने वाले तालाबों के जलग्रहण क्षेत्र में भारी वर्षा हुई है।

कथन 2 : नगरपालिका प्राधिकरण ने जल आपूर्ति की प्रस्तावित कटौती समाप्त कर दी है।

13. **कथन 1 :** पुलिस ने इलाके से बहुत से समाज–विरोधी तत्वों को पकड़ लिया है।

कथन 2 : इलाके के बहुत से लोगों को पूछताछ के लिए पुलिस ने पकड़ा है।

14. **कथन 1 :** पिछले कुछ सप्ताहों के दौरान सब्जियों की कीमतें बहुत बढ़ गई हैं।

कथन 2 : पिछले सप्ताह के अंत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक 2 प्रतिशत बढ़ गया था।

निर्देश (प्रश्न संख्या 15 से 19 तक)

नीचे प्रत्येक प्रश्न में (1) और (2) दो कथन दिए गए हैं। ये कथन या तो स्वतंत्र कारण हो सकते हैं या स्वतंत्र कारणों के या एक सामान्य कारण के परिणाम हो सकते हैं। इनमें से एक कथन दूसरे कथन का परिणाम हो सकता है। दोनों कथनों को पढ़िए और तय कीजिए कि निम्नलिखित में से किस उत्तर का चुनाव इन दोनों कथनों के बीच सही संबंध बताता है।

उत्तर दीजिए–

(A) यदि कथन (1) कारण है और कथन (2) उसका परिणाम है।

(B) यदि कथन (2) कारण है और कथन (1) उसका परिणाम है।

(C) यदि कथन (1) और (2) दोनों कथन स्वतंत्र कारण हैं।

(D) यदि कथन (1) और (2) दोनों कथन स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं।

(E) यदि कथन (1) और (2) दोनों कथन किसी सामान्य कारण के परिणाम हैं।

15. **कथन 1 :** पिछले दो हफ्तों के दौरान सब्जियों की कीमतों में काफी ज्यादा कमी हुई है।

कथन 2 : पिछले दो हफ्तों के दौरान खाद्यानों की कीमतों में काफी ज्यादा कमी हुई है।

16. **कथन 1 :** चालू वर्ष में गेहूँ के उत्पादन ने पिछले सारे रिकॉर्डों को पार कर लिया है।

कथन 2 : पिछले वर्ष गेहूँ का उत्पादन पिछले वर्ष के इसके उत्पादन से काफी कम था।

17. **कथन 1 :** शहर में तीर्थयात्रियों के आने के कारण शहर की कई सड़कों को एक दिन के लिए ब्लॉक करने की घोषणा स्थानीय प्रशासन ने की

कथन 2 : जिस दिन शहर में तीर्थयात्री आए, उस दिन शहर के बहुत से स्कूलों ने छुट्टी घोषित कर दी।

18. **कथन 1 :** कंपनी के बहुसंख्यक शेयरधारकों ने अल्पसंख्यक शेयरधारकों के शेयरों को खरीदने का निर्णय किया।

कथन 2 : कंपनी को पिछली तीन तिमाहियों से हानि हो रही है।

19. **कथन 1 :** एक संस्था की यूनियन के कर्मचारियों ने आने वाले महीनों के दौरान उत्पादन बढ़ाने के लिए अपने सदस्यों से अपने श्रेष्ठ प्रयत्न करने का आग्रह किया।

कथन 2 : एक संस्था के प्रबंधन ने अपने कर्मचारियों के लिए उत्पादकता से जुड़ी बोनस योजना की घोषणा की।

निर्देश (प्रश्न संख्या 20 के लिए)

नीचे प्रश्न में (1) और (2) दो कथन दिए गए हैं। ये कथन या तो स्वतंत्र कारण हो सकते हैं या स्वतंत्र कारणों या सामान्य कारण के परिणाम हो सकते हैं। इनमें से एक कथन दूसरे कथन का परिणाम हो सकता है। दोनों कथनों को पढ़िए और तय कीजिए कि निम्नलिखित में से किस उत्तर का चुनाव इन दोनों कथनों के बीच सही संबंध बताता है।

उत्तर दीजिए–

(A) यदि कथन (1) कारण है और कथन (2) परिणाम है।

(B) यदि कथन (2) कारण है और कथन (1) परिणाम है।

(C) यदि कथन (1) और (2) दोनों कथन स्वतंत्र कारण हैं।

(D) यदि कथन (1) और (2) दोनों कथन स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं।

(E) दीजिए यदि कथन (1) और (2) दोनों कथन किसी सामान्य कारण के परिणाम हैं।

20. **(1)** म्यूनिसिपल अथॉरिटी ने अगले दो दिन के लिए शहर के सभी स्कूलों को बंद करने के लिए कहा।

(2) अगले दो दिन के दौरान शहर में एक बड़े तूफान के आने की आशंका है।

व्याख्यात्मक हल

1. (B) शहर में महिलाओं पर अत्याचार की घटनायें काफी बढ़ रही हैं, क्योंकि पुलिस महिलाओं पर अत्याचार करने वाले दोषियों को पकड़ने में असफल रही है। अतः कथन II कारण है और कथन I इसका प्रभाव है।

2. (B) ज्यादातर किसान सूखे से पीड़ित हैं यह देखते हुए प्रधानमन्त्री ने किसानों को सरकारी सहायता देने का वादा किया है। अतः कथन II कारण है और कथन I इसका प्रभाव है।

3. (D) दोनों ही कथन I और II स्वतंत्र कारणों के प्रभाव हैं।

4. (A) किसान इस साल गन्ने की खेती करने के बजाय अंगूर की खेती कर रहे हैं, क्योंकि पिछली साल गन्ने की फसल में कीड़े लगने के कारण किसानों को बहुत नुकसान हुआ था। अतः कथन I कारण है और कथन II इसका प्रभाव है।

5. (D) दोनों ही कथन I और II स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं।

6. (A) शहर के मुख्य मार्ग के नीचे पाइपलाइन की मरम्मत का काम चल रहा है जिसकी वजह से आने–जाने वाले वाहनों के लिए दूसरा मार्ग 15 दिन के लिए खोला गया है। अतः कथन I कारण है और कथन II इसका परिणाम है।

7. (E) विमानों से यात्रा करने वाले लोगों की संख्या तथा ट्रेन से यात्रा करने वाले लोगों की संख्या में काफी कमी आयी है। अतः दोनों ही कथन (I) और (II) किसी सामान्य कारण के परिमाण हैं।

8. (B) कंपनी द्वारा वित्तीय वर्ष में कमाए गए लाभ के कारण कर्मचारियों को भारी भरकम बोनस प्राप्त हुआ है अतः कथन II कारण है और कथन I इसका परिणाम है।

9. (D) दोनों ही कथन I और II स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं।

10. (B) प्राइवेट वाहनों का किराया अधिक होने के कारण तीर्थयात्रियों ने यात्रा के लिए सरकारी वाहनों को चुना है। अतः कथन 2 कारण है और कथन 1 उसका परिणाम है।

11. (B) गुरुवार और शनिवार दोनों दिन कंपनी की तरफ से छुट्टी होने की वजह से कर्मचारी शुक्रवार को भी छुट्टी पर चले गए। अतः कथन 2 कारण है और कथन 1 उसका परिणाम है।

12. (A) कथन 1 कारण है और कथन 2 उसका परिणाम है।

13. (E) पुलिस द्वारा इलाके में समाज विरोधी तत्व पकड़े गए हैं और पुलिस द्वारा इलाके के बहुत से लोगों को पूछताछ के लिए पकड़ा गया है। अतः दोनों ही कथन (1) और (2) किसी सामान्य कारणों के परिणाम हैं।

14. (D) कथन 1 में सब्जी की कीमतों में वृद्धि हो रही है और कथन 2 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में वृद्धि हो रही है। दोनों ही कथन 1 और 2 स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं।

15. (E) कथन 1 में सब्जियों की कीमतों में तथा कथन 2 में खाद्यान्नों की कीमतों में कमी पायी गयी है। अतः दोनों ही कथन 1 और 2 किसी सामान्य कारणों के प्रभाव हैं।

16. (D) कथन 1 में इस वर्ष गेहूँ के उत्पादन में काफी वृद्धि देखी गयी है जबकि कथन 2 में पिछले वर्ष काफी कमी देखी गयी है। दोनों ही कथन 1 और 2 स्वतंत्र कारणों के परिणाम हैं।

17. (E) शहर में तीर्थयात्रियों के आने के कारण 1 दिन के लिए कई सड़कों को बंद कर दिया है तथा साथ–ही–साथ कई स्कूलों में भी उस दिन की छुट्टी कर दी गयी है। अतः दोनों ही कथन 1 और 2 किसी सामान्य कारणों के परिणाम हैं।

18. (B) कंपनी को हो रही लगातार हानि की वजह से बहुसंख्यक शेयरधारकों ने अल्पसंख्यक शेयरधारकों के शेयर खरीदने का निर्णय लिया है। अतः कथन 2 कारण है और कथन 1 उसका प्रभाव है।

19. (A) कर्मचारियों ने उत्पादन को बढ़ाने के लिए अपने सदस्यों से अच्छे प्रदर्शन का आग्रह किया है जिसकी वजह से प्रबंधन ने कर्मचारियों को बोनस देने की घोषणा की है। कथन 1 कारण है और कथन 2 उसका परिणाम है।

20. (B) शहर में एक बड़े तूफान के आने की सम्भावना है जिसकी वजह से शहर के सभी स्कूलों को बंद रखने की सलाह दी गयी है। अतः कथन 1 कारण और कथन 2 इसका प्रभाव है।